Digitized by eGangotri

जासूसी ग्रन्थ-माला का पहला पुष्प।

विचित्र जासूसी उपन्यास

कंगाल की बुलबुल

स्कैन्ड/ Scanned

लेखकः—
कलकत्ते के प्रसिद्ध नाटक कार तथा प्रस्तुत
ग्रन्थ के रचियता
श्रीयुत जमुनादास मेहरा।

प्रकाशकः—
नारायणदत्त सहगल एण्ड सन्स
लोहारी दर्वाज़ा लाहौर

Sri Pratap Singh
Public Library
Srinagar.

मुद्रकः—
बाबू जगतनारायण बी० ए० मैनेजर
विरजानन्द प्रेस, मोहनलाल रोड
लाहौर।

प्रथमवार १०००] श्रावण कृष्ण सं० १९८५ वि० [मूल्य १)

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

प्रकाशक--
नारायण दत्त सहगल
अध्यक्ष
आर्य्य बुक डिपो
लोहारी गेट लाहौर।

मुद्रक-
बाबू जगतनारायण बी० ए०
मैनेजर विरजानन्द प्रेस,
मोहनलाल रोड
लाहौर।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

निराश न होईये !

अब

ग्रन्थ ही नहीं, रत्न प्रकाशित हो रहे हैं।

कहां से ?

जहां से **शास्त्रीमाला** और

नारी-धर्म ग्रन्थमाला ने प्रकाशित होकर

हिन्दी प्रेमियों में हल चल मचा दी थी

अब वहीं से

जासूसी माला और **सामाजिक ग्रन्थमाला**

प्रकाशित हो रही है जिसके अनूठे पुष्प बड़ी सजधज से हिन्दी युग में निकल रहे हैं जो स्थाई ग्राहकों को पौने मुल्य में दिए जायेंगे।

यदि एक से एक सुप्रसिद्ध लेखकों के लिखे हुए, हृदय को फड़का देने वाले उपन्यास पढ़ना चाहते हैं, यदि समाज-सुधार का सच्चा चित्र दिखाने वाले ग्रन्थ रत्नों से अपना हृदय प्रकाशित करना चाहते हैं, तो शीघ्र ही १) रुपया प्रवेश शुल्क भेज कर स्थायी ग्राहकों में नाम लिखाईये !

पता नोट कर लीजिये

नारायणदत्त सहगल एन्ड सन्स

लोहारी दरवाज़ा—लाहौर।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

विधवाश्रम

Digitized by eGangotri

(लेखक—कलकत्ते के प्रसिद्ध नाटककार बाबू जमनादास मेहरा)

पुस्तक क्या है, हिन्दू-समाज के सामयिक दुराचारों का जीता जागता चित्र है। सामाजिक-अत्याचारों का दिग्दर्शन इस पुस्तक में इस प्रकार कराया गया है कि एकबार तो हिन्दू समाज में विलक्षण जागृति उत्पन्न हो उठेगी, आज कल के गृहस्थ घरों में होने वाले दुराचार आँखों के सामने, ताण्डवनृत्य करने लगेंगे, विधवाओं तथा गृहस्थ कुल-ललनाओं पर होने वाले भीषण अत्याचार आपका हृदय हिलादेंगे।

इस पुस्तक की सरस, सरल, सुमधुर भाव पूर्ण रचना में लेखक ने जिस कवि-कौशल का परिचय दिया हैं उसे पढ़ते ही बनता है इसमें सेवा, विधवाश्रम द्वारा अकथनीय समाज-सुधार, स्वयं सेवकों की सच्ची सेवा का उज्वल उदाहरण, जाति सेवा की सची लगन और सामाजिक कुरीतियों के भीषण परिणाम का चित्र इस प्रकार खींचा गया है कि एक बार यह पुस्तक हिन्दू-समाज की आंखे खोल कर विस्त्रोत क्रान्ति उत्पन्न करदेगी।

यदि हिन्दू-समाज के अन्दर लगे हुए दुराचार रूपी घुन से हिन्दू जाति के विनाश का सच्चा दृश्य देखना चाहते हैं, यदि समाज के सच्चे हितैषि बनना चाहते हैं, यदि सच्ची समाज सेवा का आदर्श देखकर जाति सुधार करना चाहते हैं और यदि आप समाज के हित चिन्तक होने का गर्व रखते हैं तो इस ग्रन्थ रत्न को मंगा कर अवश्य पढ़िये !

स्थान २ पर क्रान्तिकारी कविताओं से सुशोभित बाल वृद्ध तथा वनिता मात्र के लिये शिक्षाप्रद अनेक रंग विरंगे चित्रों सहित सुन्दर एन्टिक कागज पर छपी हुई गृहस्थ घरों में रखने योग्य दो भाग का मूल्य ३) सजिल्द ४)।

स्थाई ग्राहकों को हमारी प्रकाशित सभी पुस्तकें पौने मूल्य में दी जाती हैं अतः शीघ्र ही १) प्रवेश फ़ीस भेज कर स्थाई ग्राहक बनिये !

पता—नरायणदत्त सहगल एन्ड सन्स

लोहारी दरवाजा—लाहौर।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

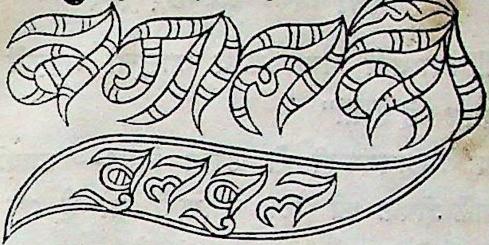

पहला-परिच्छेद

"ओह ! कैसा भयंकर दल है, कैसे दुर्दान्त डाकू हैं, उनकी राक्षसी-लीला से, सारा डिपार्टमेन्ट घबड़ा उठा। किसी का साहस नहीं होता कि, उन पिशाचों को गिरफ्तार करा सके। ओफ़ ! कैसे बहादुर !! कितने साहसी !!!" मिष्टर नौटन ने अपने सामने की एक कुर्सी पर बैठे हुए मिष्टर ब्लेक से कहा।

अपने आफ़िसर की चिन्ता देख मिष्टर ब्लेक ने गंभीरता पूर्वक कहा—"आप इतना क्यों घबड़ा रहे हैं ? क्या वह ऐसा भीषण-दल है जिसके लिए आप जैसे आफ़िसर और इतने चिन्तित ??"

नौटन साहब ने ज़रा तिलमिला कर कहा—"नहीं जानते कि हमारे प्रसिद्ध सात जासूस आज एक साल से उनकी क़ैद में पड़े २ अधमरे से हो रहे हैं और उन्हें अब तक कोई न छुड़ा सका। क्या नहीं जानते कि, उन चारसौ डाकुओं का दल चारों दिशा में अपनी निर्भयता का झंडा गाड़

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

रहे हैं !! क्या नहीं जानते कि वे जासूसी महकमें को बुरी तरह पछाड़ रहे हैं !!!"

ब्लेक ने लापरवाही से उत्तर दिया—"उनकी बहादुरी बुझने वाले दीपक की एक आखिरी लौ है जो एक बार अपनी तेज़ी दिखाकर शान्त होजाती है। जब तक उन में एकता है, तब तक शायद उनका यही हाल रहेगा। चारसौ दुर्दान्त-डाकुओं के दल को दबाना और उन्हें ठिकाने लगाना या गिरफ्तार कराना, कुछ बालकों का खेल नहीं है।

नौटन ने कहा—"वही तो मैं कहता हूं कि उस भीषण-हत्याकारी-दल को सर्वदा के लिये नेस्त-नाबूद करना, कुछ हँसी-खेल नहीं है। मैं तो यहां तक कहने को तैय्यार हूं कि, हमारे एक से एक चालाक जासूस, अब तक उनका बाल भी बांका न कर सके। उनके लिये जिसको तैनात किया जाता है, उन्हें मानों हवा से उसका समाचार मिल जाता है और सारा-दल उसके पीछे पड़ जाता है। जासूसों के लिये तो वे मानों काल हैं, जासूसी महकमें के लिये, वे भौचाल हैं। हमारा विशाल-बल, हमारे अद्भुत कार्य-कर्त्ता तथा बड़े २ कारू जासूस उनका नाम ही सुन कर थर्राते हैं, पुलीसवाले तो आयं दिन उनके हाथों पीटे जाते हैं। मिष्टर ब्लेक ! मैंने "चारली" और "ग्रेड" जैसे सर्वश्रेष्ठ जासूस नियुक्त किये परन्तु वे भी कम्पायमान होकर बैठ रहे। क्या हमारे महकमे के लिये

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

लज्जा की बात नहीं है ?"

इस बार ब्लेक ने कुछ अप्रतिभ होकर कहा—"सर ! मेरे जीवित रहते जासूसी-महक़मा, स्वप्न में भी लज्जित नहीं हो सकता। इस ब्लेक ने बड़े २ दलों को पकड़ाया, एक-से-एक राक्षसी मण्डलियों को धूर में मिलाया—एक-से एक प्रसिद्ध डाकुओं को पृथ्वी पर सुलाया और इसी की बदौलत आज मैंने "लाईट आफ़ डिडैक्टिव्स" का पद पाया। क्या आप यह समझते हैं कि, वह भीषण-दल मेरे पंजे में नहीं आ सकता ? क्या आप भरोसा कर सकते हैं कि, मेरा फौलादी दस्ता उनको नेस्त-नाबूद नहीं करा सकता ??"

नौटन ने समझ लिया कि, ब्लेक को जोश आ गया, अब वह अपने आपे से बाहर होरहा है परन्तु अभी इसे और भी जोश दिलाना होगा और इस कठिन कार्य के लिये इसका पैर बढ़ाना होगा" नौटन ने फिर कहा—"ब्लेक ! तुमने अपनी बहादुरी का परिचय देकर जासूसी महक़मे को गौरवान्वित किया है इसमें सन्देह नहीं परन्तु इन विषधर सांपों के बिल में हाथ डाल कर अपनी कीर्ति को बट्टा न लगाओ ! मैं तुम्हें दोस्ती के तौर पर यह सलाह देता हूं। उनका सामना करना कठिन है, उनके स्थान का पता पाना महान दुष्कर कार्य है, उनके जासूसी शेरों के पंजे से अपने आपको बचाना सामान्य काम नहीं है। उस दल के आदमी एक से एक जमामर्द तो हैं ही परन्तु,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

एक कोमलाङ्गी अद्वितीय सुन्दरी बंगालन नारी जो उनकी रानी सुनी जाती है, उसके कामों ने तो डाकू दल के भी छक्के छुड़ा दिये हैं। वह साहसी और बहादुर तथा एक बेजोड़ जासूस औरत है। वह उस दल के सरदार बबरसिंह की प्रेमिका है। उसमें इतनी शक्ति है जो आज तक औरतों में नहीं सुनी गई। पहले वह वेश्यावृत्ति करती थी और कलकत्ते में बंगाल-की-बुलबुल के नाम से प्रसिद्ध थी। आज वह उस दल में भी बुलबुल के ही नाम से बुलाई जाती है। आज उसके नाम से सारा बंगाल थर्राता है। जिस रियासत में उसकी सूचना जाती है वही रियासत बिला उज्र, कहे हुए स्थान पर धन भिजवा कर अपनी जान छुड़ाती है। मिष्टर ब्लेक! डाकूदल तो दूर रहा, तुम केवल उस पिशाचिनी को भी नीचा नहीं दिखा सकते, उस पर फ़तह नहीं पा सकते, तुम उनके विरुद्ध पैर उठाओगे, तो तुम भी उन्हीं जासूसों की तरह कैद होजाओगे, या जान ही गंवाओगे!

मारे क्रोध के ब्लेक तमतमा उठा, शरीर कांपने लगा, ओठ फड़कने लगे और अब वह स्थिर न रह सका। अपनी कुरसी से उठ खड़ा हुआ और टेबल पर ज़ोर से हाथ पटकता हुआ बोला-"मिष्टर नौटन! आप सरासर मेरा अपमान कररहे हैं। मेरा ही नहीं मानो जासूसी महक़में का ही अपमान कररहे हैं। मैं किस लिये कोलम्बों से बुलाया गया हूं? क्या लज्जित और अपमानित करने के लिये?? जिसने

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

सिंघाई के चारहज़ार डाकूओं के दल को मिट्टी में मिला दिया, जिसने रंगून के एक विशाल शक्तिशाली दल का तख़्ता ही उलटादिया, क्या वही, इस साधारण और एक कोमलाङ्गी नारी से डरकर मुंह छिपायगा और उनपर विजय न पायगा? अबमेरे अपमान की हद्द हो चुकी। मैं जाऊंगा, अवश्य ही इस दल का अनुसन्धान लेने के लिये पैर बढ़ाऊँगा, अपना आप दिखाऊंगा। मैं भी तो देखूं कि, वह मेरे खूनी पञ्जे से किस प्रकार बच सकते हैं। मैं जासूसों का नाम कलंकित करने के लिये नहीं, डिपार्टमेण्ट का मुखोज्वल करने के लिये बुलाया गया हूं। आप ऐसे शब्दों का व्यवहार कर मुझे मेरी जाँ निसारी के पथ से हटाने का ख्याल दूर कर दीजिये और मुझे आज्ञा दीजिये कि, मैं अपने उन मित्रों को मुक्त कराऊँ जो उन पिशाचों के कारागार में जीवन और मरण का प्रश्न हल्ल कर रहे हैं।"

उत्तर में नौटन साहब ने कहा—"मिष्टर! मैंने जो कुछ कहा वह इस ख्याल से नहीं कहा कि, तुम उसे अपमान समझो वरन्, इस लिए कहा था कि, तुम्हें उनकी विशाल—शक्ति से आगाह करदूं। मैं जानता हूं कि, तुम्हारे सिवा दूसरा इस राक्षसी-दल पर फ़तह नहीं पा सकता क्योंकि मुझको जिनपर भरोसा था वे भी उन से दहल कर पीछे हट गये। अब तुम्हारे अतिरिक्त और नज़र ही कौन आता है जो राज्य के अपमान की रक्षा कर सके। जाओ, खुशी से जाओ!

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

ईश्वर तुम्हारी रक्षा करे परन्तु सावधान! जल्दबाज़ी से कोई कार्य्य न करना!! उनकी गुप्त नीति महान है, उस दल में एक से एक बढ़कर खूंखार और बलवान है, वे एक ही दिन में न जाने किस प्रबल-शक्ति से सैंकड़ों कोस निकल जाते हैं। आज यहाँ हैं, तो कल सैंकड़ों कोस की दूरी पर जाकर डेरा लगाते हैं। ग़रीबों को नहीं अमीरों को सताते हैं, पहले खबर देकर पीछे निर्भयता से जाकर लूटपाट मचाते हैं। यहां तक कि जिनको उनके आने की सूचना मिलती है, वे भय के मारे अपना धन माल आपही देकर जान बचाते है। सब में भीषण वह पिशाचिनी "बुलबुल" है जिसकी जासूसी के आगे हमारे बड़े से बड़े जासूसों ने सर झुका दिया।"

ब्लेक ने लोपरवाही दिखाते हुए कहा—"आप इसकी चिन्ता न करें। ब्लेक का दाँव खाली न जायगा, यह जासूसी सिंह उन सबको अपने जबड़े में पकड़ कर चबाजायगा मैं आज ही उनपर अपना वार चलाऊंगा यदि देख पाऊंगा। आप जानते हैं कि मैं अपने फ़न में किन २ गुणों को काम में लाता हूं और किन २ ऐय्यारियों से अपना काम पूरा कर आता हूं। बस, यदि मैं नहीं जानता, तो केवल इतना ही कि "विशेष कर वह दल किस दिशा में अपना अत्याचार दिखाता है और अब तक हमारे मित्रों ने उनका कहां तक परिचय पाया हैं!"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

उत्तर में नौटन ने कहा—"आओ, मेरे साथ आओ मेरी नोट बुक में सब कुछ दर्ज़ है जिस से तुम्हें बहुत कुछ सहायता मिलेगी" यह कह कर मिष्टर नौटन उसे साथ लेकर एक दूसरे कमरे में चले गये।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

दूसरा-परिच्छेद

(अहंकार मर्दन)

रात, एक घड़ी जा चुकी थी, काले काले बादल छाये हुए थे, आकाश काली-घटाओं से घिरा हुआ था, अन्धकार ऐसा था कि, हाथ को हाथ नहीं सूझता था, चारों ओर सन्नाटा छाया हुआ था, चन्द्रदेव मानों घनघोर घटा की गोद में छिप गए थे। कलकत्ते की ग्रैन्ड स्टैन्ड रोड प्रायः शहर से पन्द्रह मील की दूरी पर दोनों ओर की जङ्गली झाड़ियों के मध्य में बराबर सीधी चली गयी है। एक अकेला मनुष्य न जाने अपने मन में कौनसी उधेड़-बुन करता हुआ नाक की सीध पर चला जारहा है। इसके वस्त्र इतने मैले चिकने और स्याह हैं कि, वदबू के मारे नाक आगे नहीं किया जाता। चलनी की तरह छिद्रों से भरपूर आधी धोती पहने हुए है, बदन पर एक मैला और फटा सा कुड़ता पहने है, वैसी ही एक फटी पुरानी पगड़ी सर पर बँधी है, देखने से स्पष्ट ही जान पड़ता है कि यह कोई निराश्रय ग़रीब, ग्राम की ओर पैदल चला जा रहा है। उसकी पगड़ी के एक लड़ में सेर डेढ़ सेर भूने चने बँधे हैं जिसकी गठरी उसकी पीठ पर लटक रही है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

आगे बढ़ता है कभी फिर पीछे की ओर देखता है, कभी ठहर जाता है और कभी फिर आगे बढ़ता है। समझ में नहीं आता कि, यह क्या सोचरहा है, किसीकी तालाश कर रहा है अथवा दोनों तरफ के सूनसान जङ्गल से भयभीत होकर ऐसा करता है। जो-हो वह इसी प्रकार आगे की ओर ही बढ़ता चला जाता है। कुछ ही दूर जाकर वह पथिक एकाएक रुकगया, मानो उसे कोई खटका हुआ हो। पथिक का खटका ही सत्य हुआ, कुछ देर में उसने देखा एक मोटर बड़े वेग से दौड़ी चली आरही है। मोटर के आगे वाले दोनों लैम्प दूरही से अपनी रौशनी फैंक कर आने जाने वालों को मानो सूचना दे रहे हैं। पों पों भों भों करती हुयी मोटर आते आते पथिक के बिलकुल निकट आकर खड़ी होगई, पथिक भी वहीं रुक गया।

मोटर में विशेष मनुष्य न थे। पीछे की ओर एक सुन्दरी स्त्री जो वस्त्राभूषणो से सुसज्जित है, मानो अपने स्वामी के सङ्ग बैठी कहीं जारही है। पास ही उसकी दाहिनी ओर एक वीर युवक बैठा है जो देखने में एक बलिष्ट और वीर पुरुष जान पड़ता है। बदन में उसके एक कीमती कमखाब का चोगा है, सरपर कत्थई रङ्गका बनारसी साफ़ा बँधाहुआ है जो बहुत ही भला मालूम होता है। उसका रूप, रङ्ग, बड़ी २ मूछें सुगठित शरीर देखने से स्पष्ट ही प्रतीत होता है मानो किसी छोटी रियासत का राजा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

अपनी पत्नी सहित मोटर में सफ़र कर रहा है। मोटर का ड्राईवर भी उजले कपड़े पहरे, सरपर साफा बाँधे बड़ी शान से बैठा हुआ है।

मोटर को रोकते ही ड्राईवर ने उस पथिक को आवाज़ दी—"ओ जाने वाले! इधर आ!!" आवाज़ सुन कर पथिक मोटर के पास जा खड़ा हुआ। ड्राईवर ने फिर कहा—"क्या तू मजूर है? हमारी मोटर का असबाब क्या हमारी कोठी पर चढ़ा देगा?"

उत्तर में पथिक ने कहा—"सरकार मैं मज़दूर तो नहीं, एक ग़रीब ग्रामीण हूं परन्तु आपकी आज्ञा है तो मैं आपका कार्य पेट की ख़ातिर कर सकता हूं"

इसी समय पीछे बैठे हुए उस पुरुष ने ड्राईवर को आवाज़ दी—"ड्राईवर! इसे अपने पास ही बैठा लो, पास ही तो कोठी है, वहां असबाब ढोकर चला आयगा, रात्रि का समय है इसे दो आने ज्यादह देना!"

"बहुत अच्छा सरकार!" कहते हुए उस ड्राईवर ने पथिक को अपने पास बैठा लिया और मोटर हांक दी। मोटर अभी कुछ ही दूर आगे गई होगी कि, पीछे बैठे हुए उस वीर पुरुष ने उस पथिक से कहा—"अरे तेरे वस्त्रों से तो बड़ी बू आ रही है, छिः छिः नाक सड़उठा, कैसा गंदा मनुष्य है, ले यह इत्र, अपने कपड़ों पर छिड़क ले! बदबू की जगह खुशबू आने लगेगी।" कहते हुए उस वीर ने, पथिक को

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

अपनी तरफ़ आकर्षित किया और जब वह पीछे की तरफ़ उस वीर को, बेग में से एक इत्र की शीशी निकालते हुए देखने लगा, उसी समय उस कोमलाङ्गी स्त्री ने तुरन्त एक छोटी शीशी का काग खोल कर, पथिक के नाक के आगे लगा कर कहा—"देख ! कैसी खुशबू है !!"

शीशी सूंघते ही पथिक एक दम बेहोश होकर जहां का तहां, गरदन फेंक कर बैठा रह गया। मोटर खड़ी कर दी गयी, ड्राईवर ने मालिक का इशारा पाकर एक रुमाल से उसकी आंखों में पट्टी बाँध दी और मोटर घुमा कर, जिधर से आया था उधर ही वेग पूर्वक मोटर ले चला।

पाठक आश्चर्य में पड़ गये होंगे कि "एक पथिक के संग ऐसा व्यवहार क्यों किया गया!" वास्तव में वह पथिक पथिक ही नहीं, यह मिष्टर ब्लेक था, जो इस रूप में डाकूदल के सरदार बबरसिंह और बुलबुल द्वारा गिरफ्तार कर लिया गया।

* * * *

दिन के बारह बजे एकाएक मिष्टर ब्लेक की बेहोशी दूर हुई, वह एकाएक चौंक उठा। अपने आपको उसने एक बड़े लम्बे टेबल पर पड़े पाया। यह टेबल बड़ा लम्बा था, दोनों ओर प्रायः डेढ़सौ कुरसियों की कतार लगी थी। यह एक बड़ा हाल था जिसके चारों ओर की दीवारों पर, तलवारें, भाले, कटार, छुरियां, खुखड़ियां तथा बन्दूकें आदि, बड़ी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

खूबी से सजाये हुए थे। इस हाल में कुछ बेशकीमती सामान भी लगा था, फ़र्श पर बड़ा भारी कालीन बिछा हुआ था, सजावट देख कर यही ज्ञान पड़ता था कि किसी राजा के महल का दीवान-ख़ाना है।

ब्लेक चारों ओर गौर से देखता हुआ टेबल से उतरा ही था कि नंगी तलवार खींचे एक वीर उसके सामने आ खड़ा हुआ और बोला—"क्यों ब्लेक! क्या देख रहे हो!!"

ब्लेक, इस समय अपने आप में लज्जित हो रहा था। वह विचार रहा था कि "आफ़िसर नौटन ने सत्य कहा था कि, इस दल को हवा से ही सब पता चल जाता है। पहली बार ही मैं इन दुष्टों के चंगुल में फस गया। ओह! अहङ्कार!! तेरा बुरा हो। मैं अहङ्कार में भर कर आया तो पहली बार ही ईश्वर ने मेरा अभिमान भङ्ग कर दिया परन्तु ओह! जो होना था, सो तो हो गया। अब ज़रा भी इधर उधर किया, कि मैं इनके हाथों से न बच सकूंगा। ब्लेक! अब दूसरी विद्या से काम ले और इस बार मुक्त होकर फिर अपना वार चला! परन्तु मैं हूं कहां, मैं बेहोश कर, कहां लाया गया, किस विकट स्थान में फसाया गया?" ब्लेक ने उस वीर से कहा—"मैं देख रहा हूं कि, तुम्हारा दल, दल ही नहीं एक विशाल-शक्ति है"

उस वीर ने फिर कहा—"अभी तुमने हमारी शक्ति को नहीं देखा-तभी हमारी गिरफ्तारी के लिये पैर बढ़ाया है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

आओ, मेरे साथ आओ ! मैं तुम्हें अपनी दल-शक्ति दिखाऊं और तुम्हें अपने सरदार के सम्मुख पहुंचाऊं"

ब्लेक ने कुछ उत्तर न दिया और अपना भिष्ट सिद्ध करने की इच्छा से चुप चाप, उस वीर के पीछे चला। हाल से बाहर निकलते ही उसने बड़ा भारी मयदान (आंगन) देखा, जिसके चारों ओर बड़े २ हाल बने हुए हैं और वहां से "ठकाठक २" की आवाज़ आ रही है। वह बड़े आश्चर्य में पड़ा कि "यहां तो कोई कारखाना जान पड़ता है, मानो कारीगर लोग लोहे का काम बना रहे हैं" ब्लेक यह सब देखना चाहता था परन्तु जब उस वीर ने उधर ही कदम बढ़ाया तो उसे कुछ कहना न पड़ा और वह उसके पीछे २ चला।

जिस हाल से यह निकला था ठीक उसी के सामने वाले हाल के द्वार पर लेजाकर ब्लेक को खड़ा कर दिया। ओफ़ ! ब्लेक देखते ही चौंक उठा। उसने देखा कि "यह बहुत बड़ा हाल है जिसमें नीचे से ऊपर तक करोड़हां पुरानी तलवारें कंकर और पत्थरों की तरह लदी पड़ी हैं और वहां पचास आदमी उन पुरानी तलवारों को साफ़ कर कर के काम में लाने लायक बना रहे हैं।"

अब वह दूसरे हाल के सम्मुख खड़ा किया गया, आश्चर्य ! यहां पुरानी बन्दूकों और टूटे हुए तमञ्चों की मरम्मत होते देखा। तीसरे हाल के द्वार पर जाकर तो ब्लेक विस्मित हो उठा। उसने देखा "वहां बारूद, गोले, गोली तथा कुछ ऐसे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

अस्त्र बन रहे हैं जो भयङ्कर और भड़क उठने वाले साबित हो रहे हैं" ब्लेक कुछ भयभीत हो गया। अब उस वीर ने दूसरी ओर के एक हाल के सम्मुख उपस्थित किया। ग़ज़ब! यहां प्रायः एक सौ वीर तलवारें चलाने का अभ्यास कर रहे हैं और एक वीर उन्हें बड़ी सावधानी से शिक्षा दे रहा है।

अब दूसरे द्वार पर पहुंचाया गया तो ब्लेक का हृदय कांप उठा। उस ने देखा कि "एक ओर से पचास वीर खुले दिल से बन्दूकों और तमञ्चों से गोलियों की बौछार कर रहे हैं और दूसरी ओर के केवल चार मनुष्य उन पचासों की गोलियों से बचकर फिर उन्हीं पर वार कर रहे हैं। ब्लेक इस विद्या को देखकर दंग होगया। उसने ऐसी बहादुरी स्वप्न में भी न देखी थी कि बन्दूक की गोलियां भी उन चार वीरों का कुछ नहीं बिगाड़ सकतीं और वे अपने २ बाएँ हाथों में एक ढाल के समान कोई ऐसा अस्त्र लिये हैं जिन पर खटाखट गोली पड़कर रह जाती है और उनके शरीर तक आने ही नहीं पाती है।

मन ही मन, ब्लेक धन्य २ कह उठा। उसने निश्चय कर लिया कि "वास्तव में यह दल शासकों के हृदय दहला देने वाला है, इस पर विजय पाना मेरा काम नहीं है। ब्लेक! अब यहीं से समझ जा!! जानबूझ कर इस भीषण अग्नि में कूदकर अपनी जान वृथा न गँवा!!!"

अन्त में ब्लेक एक सजे सजाये सुन्दर कमरे में पहुंचाया

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

गया जहां सरदार बबरसिंह एक कुरसी पर बैठे थे और दोनों ओर बड़े २ बलवान वीर शस्त्र लिये खड़े थे। ब्लेक ने शीघ्र ही उस सर्दार को देख कर विचार लिया कि, शायद यही सरदार बबरसिंह है, वह चुपचाप ही खड़ा रहा।

बबरसिंह ने एकबार नीचे से ऊपर तक ब्लेक की ओर देखा और फ़िर गरज कर बोला—"ब्लेक! क्या तू इसी चतुराई पर सब से बड़ा और नामी जासूस कहलाता है!! अपने आपको देख और अच्छी तरह देख कि, तू पहली बार ही मेरे खूनी पंजे में आ फ़सा। क्या तू नहीं जानता कि, मैं चारो दिशाओं में अपना झंडा गाड़ना चाहता हूं और शासकों की जड़ तक भी उखाड़ना चाहता हूं। सावधान होजा! तू भी सावधान होजा!! मैं एकबार सभी को सावधान कर देता हूं। मैं बहादुर हूं, मेरा नाम बबरसिंह है जिसका नाम सुनते ही हाकिमों के दिल चिरजाते हैं, गर्भवतियों के गर्भ तक गिर जाते हैं। मैं जिस पर वार करता हूं, उसे एकबार सावधान कर देता हूं। आज पहला दिन है, अब तू भी सावधान होजा! सुन और कान खोलकर सुन!! यदि अपना भला चाहता है, तो अपनी नौकरी से बाज़ आ और हमारे दल में सम्मिलित होजा। यहाँ भी तुझे वही तनखाह मिलेगी जो तू पाता है। काम भी तुझे जासूसी का ही मिलेगा जिसमें तू सर्व श्रेष्ट गिना जाता है। अब या तो मेरी बात मान अन्यथा हमारे लिये या हम पर विजय पाने के विचार से कभी पैर न बढ़ाना, नहीं तो

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

मार दिये जाओगे, वृथा ही अपनी ज़िन्दगी गँवाओगे। अधिक नहीं तो रुपये में एक आना, हमारी तुमने शक्ति देख ली है इससे अधिक मैं दिखा भी नहीं सकता। यह पहला २ समय है इस से तुझे एक बार विचार करने के लिये छोड़ दिया जायगा परन्तु यदि दूसरी बार सामने आयगा तो जीता जागता लौट कर न जायगा। एक बार तुझे छोड़ देना ही मेरी बहादुरी और जमा-मर्दी है। तू हमारे शत्रुओं की नामावली में दर्ज है यदि विश्वास न हो तो वह देख! राज्य शासन के सभी जासूसों के चित्र उपस्थित हैं" यह कहकर सरदार उठा और ब्लेक को साथ लेकर उस कमरे से सटे हुए दूसरे दरवाज़े के अन्दर लेगया।

यह एक बहुत बड़ा हाल था, बीच में एक बड़ा भारी टेबल था जिसके चारों ओर कुरसियां रक्खी थीं। यह हाल खूब सजा हुआ था और इसमें बड़े २ कारी अस्त्र शस्त्र रक्खे थे। इस हाल की छत्त बहुत ही ऊँची थी जिसकी बनावट ऐसी विचित्र थी मानो, जब चाहे खोलकर रौशनी की जा सकती है। हाल की दीवारों पर जो दृष्टि पड़ी तो ब्लेक चौंक उठा। उसने भलि भांति चारो तरफ घूमकर देखा कि तमाम शासकों, पुलसि आफिसरों और आदि से अन्त तक सभी जासूसों के चित्र टँगे हैं और सब पर सबका नाम लाल अक्षरों से लिखा है"। वह मनही मन सोंचने लगा "ब्लेक! २ यह एक महान शक्ति है, एक विशाल राजनैतिक दल है, एक

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

शाही प्रबन्ध है और भयंकर पिशाच दल है । इस पर विजय पाना असम्भव है"

ब्लेक जिस समय विचार कर रहा था, सरदार ने फिर कहा—"क्या सोंचते हो ब्लेक ! जो कुछ सोचना हो अपने घर जाकर सोंचना यहाँ तो दो बातों का उत्तर दो ? या तो मेरा मत मानो या जासूसी छोड़कर अपने घर बैठो। बोलो, क्या कहते हो ?

ब्लेक ने कुछ देर सोंचने के बाद कहा—"आप यदि मुझे मुक्त करते हैं तो मैं भी इस पर विचार करूँगा"

उत्तर में सरदार ने कहा—"अच्छा, सोंच लो और अच्छी तरह अपना भला बुरा सोंचलो ! मैंने तुम्हें जहां से पाया है वहीं तुम्हें छोड़ दिया जायगा परन्तु एक बार और सुनो ! यह देखो तुम्हारी तस्वीर है और इसमें तुम्हें मार देने या कैद करने का हुक्म लाल अक्षरों में लिखा है । यदि तुम अब भविष्य में हमारी शत्रुता के लिये पैर बढ़ाओगे तो पाताल से भी खोजकर मार दिये जाओगे ! यहां तुम्हारे जैसे कितने ही जासूस मार दिये गये और अभी कितने ही कारागार में पड़े सड़ रहे हैं । यदि बाज़ आओगे तो सुख पाओगे अन्यथा तुम्हारी मृत्यु तो निश्चित है ।"

यह कह कर सरदार ने कुछ संकेत किया, दो वीरों ने लपककर उसकी मुश्कें बाँध दी और एक ने उसकी आंखों में पट्टी बाँध दी और तीनों मिलकर उसे उठा लेगये। कुछ दूर जाकर उन्होंने उसे मोटर पर रक्खा और मोटर चलादी।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

तीसरा-परिच्छेद

(हथेली पर जान)

अच्छा हुआ कि, मैंने अपना लज्जा जनक हाल आफ़िसरों को नहीं सुनाया। एक ही बार सुनाऊंगा, यदि इस महान् शक्तिशाली पिशाच-दल को दलन कर सका तो एक ही बार सारी घटनाओं की मिस्ल बनाऊंगा। आहः! कितना अच्छा और गुप्त प्रबन्ध है। मैं किस रास्ते गया और किस रास्ते आया, कुछ न जान सका। इतना बड़ा मैदान और इतनी जगह में उनके विशाल स्थान का घेरा है परन्तु शासक वर्ग अब तक उस स्थान का पता न लगा सका! "नहीं लगा सकता २" उनके गुप्त स्थान का पता कोई नहीं पासकता। इसमें सन्देह नहीं कि वह स्थान अवश्य ही ज़मीन के अन्दर है क्योंकि, मैंने जहां तक देखा – मुझे आकाश दिखाई न दिया। जाने के समय मुझे होश न था परन्तु आने के समय मैं होश में था। मेरी हफ्तेवारी तारीख़ी घड़ी साफ़ २ बता रही है कि मैं वहां से चलकर प्रायः दो दिन के बाद उसी ग्रैन्डस्ट्रैण्ड रोड़ पर छोड़ा गया हूं। मेरी आँखों में पट्टी बंधी थी परन्तु इस में सन्देह नहीं कि वह रास्ता अवश्य ही जंगल का रास्ता है, चलती हुई मोटर उछल रही थी बीच २

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

में कितने ही उबड़ खाबड़ और गढ़े डाँकती थी। ओहः! याद आया, मैं एक बार किसी नदी से भी पार किया गया और फिर दूसरी मोटर में बैठाया गया। हां और मैं भी मोटर के दरवाज़े के बाहर अपने भूने चने, कहीं २ निशान के लिये फेंकता आया हूं। उनके ध्यान में मेरी यह धूर्तता न आई। ठीक है, रास्ते का पता मिल जायगा। (कुछ सोचकर) पता तो मिल जायगा परन्तु बच्चा जी! अब की बार तुझ को बचायगा कौन !! क्या उनकी शक्ति, वीरता, गुप्त प्रबन्ध, अद्वितीय जासूसी और अपनी मृत्यु का सामान नहीं देख चुका? नहीं २ ब्लेक तू असमर्थ है, तू एक है, वे अनेक हैं। तू अपने आप को लगाता है और उधर एक से एक, बढ़कर ही नज़र आता है।"

"डायमन्ड-हारबर" की जेठी पर बैठा हुआ ब्लेक उपरोक्त विचार कर रहा है। यह कलकत्ते का एक मशहूर स्थान है, जहां से बड़े २ स्टीमर, विलायत, रंगून, कुलम्बो, सिंघाई आदि की ओर आते जाते हैं। यहां से प्रायः एक ही दिन के रास्ते पर गङ्गा-सागर का सम्मिलन होता है। जहाज यहीं तक आकर रहजाते हैं और यहीं से पीछे लौट जाते हैं। इस स्थान का दायरा प्रायः तीन मील का है, यहाँ की जहाजी जेठियां देखने योग्य हैं। जिस समय जहाज जेठी के प्लाटफार्म पर आता है, उस समय प्रायः तीन चार मंजिल ऊँचा होता है, देखते २ ही जेठी के अन्दर का पानी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

निकलता जाता है और जहाज नीचे की ओर बैठता जाता है, अन्त में ठीक प्लेटफार्म के साथ मिल जाता है और मुसाफ़िर सुगमता से उत्तर चढ़ सकते हैं।

इसी जेठी पर बैठा २ ब्लेक, अपनी उधेड़- बुन में लगा था कि, एकाएक उसे आवाज़ सुनाई दी "मिस्टर ब्लेक!" वह चौंकउठा और ज्योंही पीछे घूमकर उसने देखा, आश्चर्य पूर्वक बोला—"कौन, मिस कर्टिस! ओहो!!, तुम यहां कहां?"

कर्टिस ने जरा मुस्कराते हुए कहा—"जहां तुम वहीं मैं। तुम तो अपना पल्ला छुड़ाकर चले आये मगर मेरा मन कब मानता था कि, मैं अकेली ही रंगून में पड़ी रहूं! अब अन्य बातें पीछे होंगी, मेरा सामान अभी जहाज पर ही पड़ा है और मेरे साथ आने वाला एक लड़का रखवाली में खड़ा है। चलो, पहले सामान उतार लिया जाय।"

ब्लेक ने उत्तर में कहा—"क्या किसी नौकर को साथ लाई हो?

नहीं, नौकर नहीं, मेरे साथ एक "आफ़त का परकाला" लड़का आया है। यह लड़का जाति का लोहार है, अवस्था अभी तेरह साल की है परन्तु प्यारे ब्लेक! यह मेरी शिक्षा से ऐसा होशियार होगया कि, मैंने उसे आफ़त का परकाला ही समझ रखा है, यह बालक एक होनहार बालक है। इसी अवस्था में तुम उसकी विलक्षण बुद्धि, उसका साहस, कार्य कौशल और अद्भुत जासूसी काम देखकर चकरा जाओगे!"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

ब्लेक, यह कहता हुआ उस के साथ होलिया कि-"कर्टिस ! तुम एक न एक असाधारण बात ही बताया करती हो।

दोनों जहाज पर गये, असबाब उतारा गया और एक किराये की फिटन-गाड़ी पर लादा गया। मिस कर्टिस गाड़ी पर बैठी पास ही उस बालक "कूकन" को उसने बैठा लिया जिसे वह इसी नाम से पुकारा करती थी। अब कुलियों को मज़दूरी देकर ब्लेक भी गाड़ी पर बैठा और गाड़ी ब्लेक के ही बंगले की ओर चली, रास्ते में इधर उधर की बातें होने लगीं

यहाँ पाठकों को मिस कर्टिस का परिचय दे देना भी आवश्यक है। मिस कर्टिस जाति की एक यहूदन है, यह एक अद्वितीय सुन्दरी स्त्री है, इसकी अवस्था लगभग बाईस साल के है, रङ्ग गोरा, कद ठिगना और शरीर मानो साँचे में ढला है। यह मिस्टर ब्लेक की प्रेमिका है, जो इसी के साथ रह कर एक प्रधान जासूस औरत हो गयी है। इसने कई बार ब्लेक की जीवन रक्षा की और अपने प्रेमी के साथ अद्भुत कार्य किये। रंगून में यह एक प्रसिद्ध जासूस औरत मानी जाती है परन्तु जासूसी महकमें के इलावा और इसे कोई नहीं जानता। इसका मान भी ब्लेक से कम नहीं और इसकी तनख्वाह भी ब्लेक के बराबर ही तथा पद भी ब्लेक के बराबर ही समझना चाहिये। इसका कार्य-कौशल देख कर बड़े २ जासूस चकित हो उठते हैं। जब ब्लेक की बदली हुई और वह कलकत्ते आया। तो वह भी शायद उसके पीछे २ चली आई है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

ब्लेक का बङ्गला प्रायः तीन मील की दूरी पर था, अतः चार घंटे में वे बंगले पर पहुंचे। नौकरों ने तुरन्त ही उन्हें देख कर असबाब उतारा और ऊपर पहुंचाया। सब ऊपर गये, कुछ देर बैठे, खाने पीने की तैय्यारी होने लगी। थोड़ी ही देर में खाना तैय्यार हो गया और टेबल पर सजा दिया गया। ब्लेक का खानसामा पुराना था वह कर्टिस से भी परिचित था अतः उसने सब प्रबन्ध करके ख़बर दी। ब्लेक, कर्टिस तथा कूकन तीनों ही खाना खाने जा बैठे।

खा पीकर, कुछ देर आराम करने पश्चात मिस कर्टिस ने ब्लेक से कहा—"ब्लेक मैंने जिस समय से तुम्हें देखा है मुझे आश्चर्य हो रहा है कि, तुम किसी चिन्ता में निमग्न हो। मैंने तुम्हें ऐसी चिन्ता में कभी नहीं देखा। यदि आपत्ति न हो तो अपनी चिन्ता का कारण कह सुनाओ!"

उत्तर में ब्लेक ने कहा—"तुम्हारा लक्ष सत्य ही है, मैं अवश्य ही इधर कई दिनों से चिन्तित हूं परन्तु तुम आगयी हो इससे मेरा हृदय बहुत कुछ शान्त हो गया है। आओ, मेरे साथ आओ! अब सन्ध्या का समय है ज़रा ईड्न-गार्ड्न में चलें। अब वहीं चल कर बातें होंगी।" यह कह कर ब्लेक उठ खड़ा हुआ, कर्टिस भी तेय्यार हो गयी और कूकन को साथ लिये तीनों एक फिटन गाड़ी मंगवा कर चल दिये। गार्डन यहाँ से दो मील दूर था, शाम होते २ वे वहां पहुंच गये और एक सघन झाड़ी के नीचे, जो एकान्त में थी, जा बैठे और बातें शुरु हुईं।

5801
CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

कर्टिस–ब्लेक ! अब जल्द अपनी चिन्ता का कारण बताओ ? मैं तुम्हारी यह अवस्था नहीं देख सकती।

ब्लेक–क्या कहूं, मैं जिस डाकू दल को मटियामेट करने के लिये नियुक्त किया गया हूं, वह एक विकट दल दिखाई देता है।

कर्टिस–(आश्चर्य से) डाकू दल और उसके लिये तुम्हारे जैसा सर्व श्रेष्ठ सर्व गुण सम्पन्न मनुष्य चिन्तत हो ?

ब्लेक–चिन्तित ही नहीं, उस दल का ध्यान आते ही मेरे तो देवता कूच कर जाते हैं।

कर्टिस–तुम्हारे जैसा प्रसिद्ध, चतुर, साहसी और खूंखार जासूस जिन से भयभीत हो रहा है वह अवश्य ही कोई भयानक-दल होगा परन्तु क्या अब मैं यह समझलूं कि तुम्हारी सामर्थ अब हीन हो गयी ?

ब्लेक–क्या कहती हो ! "मैं सामर्थ हीन हो गया" नहीं २ परन्तु मैं अभी तक उस राक्षसी-दल को परास्त करने की युक्ति स्थिर नहीं कर सका यही चिन्ता है।

कर्टिस–तो मुझे भी अपनी नोट-बुक दिखाओ ! सम्भव है मैं तुम्हें कुछ राय दे सकूं।

ब्लेक–केवल राय से ही काम न चलेगा। तुम्हें मेरे इस कार्य में पूरी सहायता देनी पड़ेगी। यह एक ऐसा कार्य उपस्थित हुआ है जिस पर सारे जासूसी-महकमें का मान अपमान निर्भर है। कितने ही नामी जासूस जान से

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

मारे गये और कितने ही उस भङ्कर पिशाचों के कारागार में पड़े हैं। उन्हें छुड़ाना है और उन भीषण डाकूओं को मिट्टी में मिलाना है। उस दल में एक ऐसी स्त्री है जो अपने जासूसी बल से बड़े २ जासूसों के छक्के छुड़ा रही है।

कर्टिस–"स्त्री है?" तो चिन्ता नहीं। उसके लिये मुझे छोड़ दो मैं अपने कूकन की सहायता से उसे तो क्या उसके सहायकों को भी धूर में मिला डालूंगी।

ब्लेक–मैंने भी ऐसा ही अभिमान किया था और पहली ही बार मैं उनके पञ्जे में जा फ़सा। सौभाग्य से ही उन्होंने पहली बार मुझे छोड़ दिया। मिस कर्टिस! मैंने तो ऐसे बहादुर और सुप्रबन्धक डाकू आज तक नहीं देखे, जो कह कर वार करते हैं। मैं तो यहां तक कहने को तैयार हूं कि, यदि वह दल एक साल के अन्दर ही न गिरफ्तार हुआ तो वह शासकों को शासन करना कठिन कर देगा। उनके पास अस्त्र-शस्त्र का जितना बड़ा भण्डार है, वह एक राज्य का भी तख़्ता उलटा देने के लिये यथेष्ट है। मैंने उनके पास एक ऐसा अस्त्र देखा है जिस से बन्दूक की गोली भी उन पर वार नहीं कर सकती। वह ढाल की तरह है, उसमें गोली लग कर बुझ जाती है। कहां तक कहूं वे एक से एक बढ़ कर लड़ाके और वीर हैं। उनको परास्त करना, मानो एक बड़े राज्य पर विजय पाना है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

कर्टिस–तो फ़िर हमें भी ऐसा ही कठिन काम करके दिखाना है। पहले तुम अकेले थे और अब मैं तथा यह कूकन तुम्हारे साथ हैं। अब भय करने की कोई बात नहीं। उठो, अब रात्रि हो रही है। बङ्गले पर चलकर आज सब विचार स्थिर कर लिया जाय और कल से कार्य आरम्भ हो।

ब्लेक–जब से तुम्हें देखा है मेरा उत्साह दूना चौगना हो गया है। अब तो मुझे भी आशा है कि हम लोग विजयी होंगे।

कर्टिस–क्यों नहीं, जब अपनी जान हथेली पर रख कर हम तीनों कार्य-क्षेत्र में उतर पड़ेंगे तो फ़िर क्या न कर सकेंगे?

ब्लेक–बात तो ऐसी ही है। इस कार्य में या तो सारे जासूसी महक़मे पर हमारी विजय वैजन्ती ही लहरायगी अन्यथा इस में हमारी जान ही जायगी। अब जानको हथेली पर रख कर ही अग्रसर होना है आओ चलें और आज कार्यवाही का पूरा प्रोग्राम बना डालें।

यहाँ से दोनों ही उठ खड़े हुए और गाड़ी पर सवार होकर अपने बंगले की ओर रवाना हो गये।

—:o:—

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

चौथा परिच्छेद

कलकत्ते से प्रायः सत्तर मील की दूरी पर "सोननदी" है। इसबार वर्षा होनेके कारण नदी जल से भरपूर नज़र आती है। नदी के उत्तर भागमें, प्रायः दो मील दूर ही पर एक घना जंगल हैं। इसी जंगल के निकट एक कच्ची झोपड़ी दिखाई दे रही है जिसके द्वार पर एक स्त्री बैठी हुई चारों ओर आँखें फाड़ २ कर देख रही है। स्त्री के अंग पर एक मैली और फटी सी धोती है परन्तु उसका अद्वितीय सौन्दर्य, सुगठित शरीर देख कर यही कहना पड़ता है कि परमात्मा ने इसे किसो राज्य कुलमें जन्म क्यों न दिया, यह कोमलाङ्गी कदापि जंगल के कांटों में रेहने योग्य नहीं। जो हो हमें तो इस स्त्री का अनूप रूप देखकर इसे साधारण स्त्री कह डालना नहीं जंचता।

जिस समय वह नवयौवना अपने द्वार पर बैठी हुई चारों ओर देख रही थी, ठीक उसी समय उसने एक सघन वृक्षों की झाड़ी से एक महासुन्दरी स्त्री को निकलते देखा तो उसे बड़ा आश्चर्य हुआ। यह एक बड़ी ही सुन्दरी नवयौवना थी, उसके शरीर में बहुमूल्य वस्त्राभूषण थे, सुकोमल अङ्ग

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

मानों साँचे में ढला था, अवस्था भी प्रायः अट्ठारह उन्नीस वर्ष से अधिक नहीं जान पड़ती । बात आश्चर्य की ही थी कि इस सूनसान जंगल में एक सौन्दर्य-प्रतिमा मानों झाड़ी में अकेली बैठो थी। उस ग्रामीण स्त्री का आश्चर्य कुछ ही समय में दूर होगया, जब उसने उसी झाड़ी से एक वीर पुरुष को निकलते देखा। यह शरीर की गठन से ही जान पड़ता था कि यह पुरुष कोई वीर और साहसी है। इस वीर के शरीर पर भी कीमती वस्त्र थे, सर पर पटापटी का बनारसी साफ़ा बंधा था, हाथ में एक सुन्दर छड़ी थी। कुछ समय तक वह स्त्री पुरुष वहीं खड़े २ परस्पर कुछ बातें करते और मुसकिराते तथा कभी एक विकट हंसी हंस देते थे।

अपने द्वार पर बैठी हुई वह ग्रामीण स्त्री, एक टक लगाये उन्हीं की ओर देख रही थी। जब उसने उन दोनों को आगे बढ़ते देखा तो स्वयं भी उठ खड़ी हुई और कुछ दूर पर उन दोनों के मार्ग में जाकर रुक गई। वे भी दोनों निकट आकर रुक गये और ध्यान पूर्वक इस ग्रामीण स्त्रो को रूप राशी का अवलोकन करने लगे। ग्रामीण स्त्री तुरन्त उनके समीप जा खड़ी हुई और हाथ जोड़ कर बोली "आप अवश्य ही राजा रानी हैं, आप जैसे दयावान् ही ग़रीबों और लाचारों की सुधि लेते हैं कृपा कर इस अनाथ अबला की सुधि लीजिये, मुझपर दया कीजिये!

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

स्त्री ने तो उसके गिड़गिड़ाने पर मानों ध्यान ही न दिया परन्तु उस वीर नेपूछा, जो बार २ उसके अद्वितीय रूप कोदेख २ कर मानों रीझ उठा था "ऐ स्त्री तू कौन है ? कहां की रहने वाली है ??

स्त्री ने कहा "कृपानिधान ! मैं गुजरात देश की रहने वाली एक विधवा नारी और विपदा की मारी हूं। किसी समय मैं भी राज के समान सुख भोगती थी परन्तु ईश्वर को यह स्वीकार न था। पति ने सदैव के लिये नाता तोड़ कर परलोक गमन किया, धन धाम बन्धु-बान्धवों ने लूट लिया। मैं लाचार होकर अपने एक मात्र पुत्र को लेकर अपने भाग्य का भोग भोगने के लिये घर से चल पड़ी। किसी प्रकार आप जैसे दयावानों की कृपा से यहां तक पहुंची और अब कुछ दिन से इसी टूटी झोपड़ी में अपनी विपत्ति का समय बिता रही हूं। फिर भी ईश्वर ने मुझे घोर दुःख में गिराया मेरा पुत्र न जाने कहाँ लापता होगया। कृपा निधान ! मैं इस समय बहुत ही दुखी हूं, अपनी अवस्था की ओर देखकर प्रत्येक पुरुषों के सम्मुख होना नहीं चाहती और यही कारण है कि पेट भरने का भी कोई सहारा नहीं दिखाई देता। आप इस अवस्था पर दया कीजिये ! और नहीं तो अपनी दासियों के स्थान पर मुझे रख लीजिये और मेरा पेट पालन कीजिये !!"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

उस वीर का हृदय मोम की तरह पिघल गया, उस अबला की दुःख गाथा सुनकर और उसके चन्द्रमुख को देख कर वह अपने आपको स्थिर न रख सका। उसने अपनी स्त्री की ओर देख कर कहा "प्रिये! इसे अपनी सेवा में क्यों नहीं रख लेती हो, इस दुःखी अबला पर दया दिखाओ !!"

स्त्री ने पति की बात सुन कर कुछ लापरवाही से उत्तर दिया "आपको ऐसी ही दया आई है तो रख लीजिये! सन्ध्या समय आयेंगे तो इसे साथ ही ले जांयगे, इसकी परीक्षा करेंगे, यदि इसे सेवा के योग्य पायेंगे तो पड़ी रहेगी।"

यह सुनकर उस वीर ने उस स्त्री से कहा "ऐ दुखिनी! तू चिन्ता न कर हम सन्ध्या समय यहीं पर आयेंगे और तुझे अपने संग ले जायेंगे। यदि तू हमारी इच्छानुसार काम कर सकी और हमारी परीक्षा में योग्य सिद्ध हुई तो तुझे किसी तरह का कष्ट न होगा। तू हमारे आने तक यहीं ठहर!"

दोनों उस स्त्री का आशीर्वाद पाते हुए आगे बढ़े और नदी की ओर चले। वह स्त्री भी उनके पीछे २ चली। कुछ ही दूर पर जाते २ उसने देखा वे दोनों एक खड़ी हुई मोटर पर जा बैठे और पूर्व दिशा की ओर चले। देखते २ मोटर आँखों की ओट हो गयी। स्त्री भी वहीं ठहर गयी और कुछ सोचती विचारती अपनी कुटी के द्वार पर जा खड़ी हुई और कुछ देर इधर उधर देखती हुई वह झोपड़ी के अन्दर चली गयी।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

दोपहर के प्रायः एक बजे का समय है, धूप इतनी तेज़ है कि राह चलना भी कठिन है। जंगल में तो एक भी मनुष्य इस समय दिखाई नहीं देता, यदि कोई है तो केवल वही ग्रामीण स्त्री जो कड़ी धूप के कारण किसी छायादार स्थान में बैठने की इच्छा से अपनी टूटी झोपड़ी से बाहर निकल कर इधर उधर देख रही है।

वह अधिक देर तक धूप में खड़ी न रह सकी और उसी सघन वृक्षों की झाड़ी की ओर बढ़ी, जिस के अन्दर से उस ने प्रातःकाल उस दम्पति को निकलते देखा था। वह झाड़ी बहुत दूर न थी, वह शीघ्र ही वहाँ जा पहुंची और झाड़ी के अन्दर जाकर उस ने उस स्थान को देखा तो वह विस्मित हो उठी। उस ने देखा "झाड़ी के अन्दर एक घास का छोटा सा मयदान है, मयदान के मध्य में एक पक्का चबूतरा बना हुआ है, जिस पर दो सुफ़ेद पत्थरों का फ़र्श लगा है, चबूतरे के एक भाग में उस से सटा हुआ एक सूखे वृक्ष का बड़ा ही मोटा डाँटा पृथ्वी पर गड़ा हुआ है। चारों तरफ़ से झाड़ी की सघनता ऐसी है कि बाहर से आने वाला अन्दर का दृश्य नहीं देख सकता। इस चबूतरे की बनावट त्रिकोण थी अर्थात् इस चबूतरे के तीन कोने थे, इस का फ़र्श बड़ी ही खूबी से बनाया गया है, वह सूखे वृक्ष की डाली इसी के एक कोने के साथ ही सट कर गड़ी हुई है"। यह स्थान देख कर स्त्री ने विचारा "मैं यहाँ कितने ही दिनों से रहती हूं परन्तु

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

ऐसा सुन्दर स्थान तो मैंने आज तक इस जंगल में न देखा, मैं वृथा ही दोपहर की कड़ी धूप में कष्ट पाती रही। यदि यह स्थान मालूम होता तो निश्चय ही यहाँ आकर धूप का समय व्यतीत करती"।

अस्तु, कुछ देर तक सोचती विचारती हुई वह स्त्री उसी त्रिकोण चबूतरे पर जाबैठी। बाहर तो गरम हवा चल रही थी परन्तु उस झाड़ी के अन्दर आने पर वह शीतल वायु और बड़ी ही सुखदायक बन जाती है, इसी हवा के वेग से स्त्री निद्रा के वशीभूत होकर वहीं सो गयी। अभी उस की निद्रा गाढ़ी न हुई होगी कि उसी समय एक पत्थर अपने स्थान से एकाएक हट गया और वह स्त्री धम्म् से उस चबूतरे के अन्दर गिर पड़ी और उसके स्थान पर एक भीमकाय मनुष्य, चबूतरे के अन्दर से निकल पड़ा। यह मनुष्य भयानक था, इस का रंग काला, शरीर से नंगा, केवल एक लंगोट कसे हुए था। इस ने निकल कर झाड़ी की चारों तरफ़ निगाह दौड़ा कर देखा, फिर बाहर निकल कर इधर उधर देखा और फ़िर वह उसी चबूतरे के अन्दर चला गया। पत्थर फ़िर अपने स्थान पर उसी तरह जुट गया।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

पांचवां-परिच्छेद

पिछले परिच्छेद में हम कह आये हैं कि "ग्रामीण स्त्री, उस चबूतरे के अन्दर गिर पड़ी और एक भीमकाय मनुष्य, उसी के अन्दर से निकला और देख सुन कर फिर अन्दर ही चला गया" यहां पर हम इस भीमकाय मनुष्य और उस चबूतरे का परिचय देते हैं:—

यह भीमकाय मनुष्य का नाम जसोदासिंह है—यह डाकू दल के गुप्त कारखाने का प्रधान पहरेदार है, इस के अन्तरगत प्रायः ३०, ३५ पहरेदार हैं, यही सब पहरेदारों का सरदार और एक महाबली मनुष्य है, यह बड़ा ही क्रोधी और खूंख़ार तथा मालिक का एक विश्वासी वीर है। गुप्त कारख़ाने के तमाम रास्तों का प्रबन्ध बबरसिंह ने इस के आधीन कर दिया हुआ है। इस की देख रेख में कारखाने के अन्दर मनुष्य तो क्या, एक मच्छर भी नहीं पहुंच सकता। इस के आधीन रहने वाले तमाम पहरेदार इस से भयभीत रहते हैं क्योंकि, यह किसी पहरेदार को भी अपने कार्य में असावधान देख कर भयंकर डंड देता है, यदि किसी प्रकार का सन्देह होता है तो तुरन्त वह पहरेदार जान से मार दिया जाता है। आज

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

जसोदासिंह जिस मुख्य द्वार पर था, पाठक समझ ही गये होंगे। यह चबूतरा, देखने वालों के लिये एक साधारण चबूतरा ही है परन्तु, वास्तव में यह एक प्रधान रास्ता है। इस चबूतरे के ऊपर जो पत्थर का फ़र्श है, वह बड़ी करामात का फ़र्श है। इस पत्थर के अन्दरूनी भाग में लोहे के मोटे छड़ जड़े हुए हैं, जो चबूतरे के अन्दर के एक चक्कर से सम्बन्ध रखते हैं। पहरेदार जब मालिक का संकेत पाता है तो चक्कर को घुमाता है, जिसके घुमाने से चबूतरे के ऊपर का पत्थर हट जाता है और एक आदमी आसानी से बाहर निकल सकता है। यह लोहे का चक्कर प्रायः चबूतरे से एक मंज़िल नीचे बना हुआ है, नीचे से ऊपर तक एक लकड़ी की सिढ़ी बनी है जिसके द्वारा आने जाने वाला चढ़ता उतरता है, यह सिढ़ी जब चाहे रक्खी व हटाई जा सकती है। चबूतरे के अन्दर कारीगर ने एक ऐसा स्थान बना रक्खा है, जहाँ पहरेदार हर समय बैठा रहता है और चबूतरे पर पैर धरने वाले को जान जाता है, एक छिद्र द्वारा वह बाहर के आदमी को देख सकता है और बाहर की आवाज़ भी बखूबी सुन सकता है। पहरेदार के स्थान के साथ ही सटी हुई एक जंजीर है, जिसको खींचकर पहरेदार नीचे के चक्कर को चलाकर द्वार खोल और बन्द कर सकता है। जिस स्थान से चबूतरे के फ़र्श का पत्थर हट जाता है और सिढ़ी लगी है, ठीक उसी के साथ सटी हुई एक तारों की जाली बनी है जो

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

प्राय एक मंज़िल तक नीचे लटक रही है। ऊपर से गिराया हुआ मनुष्य इसी जाली में गिरता है जिससे उसे चोट नहीं लगती। पीछे इस जाली से गिरनेवाले को सहज ही में निकाल लिया जाता है। अब पाठक समझ हो गये होंगे कि जिस समय वह ग्रामीण स्त्री, चबूतरे के अन्दर गिरायी गयी थी, उस समय स्वयं जसोदासिंह मुख्यद्वार पर था और इसीने उसे देख कर जाली में गिराया था। अस्तु,

वह स्त्री उसी जाली में गिरायी गयी और जब जसोदासिंह ने बाहर निकलकर अन्य किसी को न देखा तो अन्दर जा कर द्वार बन्द कर लिया और उस स्त्री को उसने जाली से निकाला। इस समय वह स्त्री अत्यन्त भयभीत जान पड़ती थी और वह घबड़ाई हुई इधर उधर चारों ओर देख रही थी, इस समय उसे चारों ओर केवल अन्धकार ही अन्धकार दिखाई देता था। जसोदासिंह ने तुरन्त एक कोने में लटकती हुई जंजीर खींची, एकाएक एक लोहे की खिड़की सी खुल गयी और अन्दर चांदना होगया। अब उस स्त्री ने देखा कि "मैं एक फ़र्श पर खड़ी हूं सामने ही एक लोहे का बड़ा भारी चक्कर है, चारोंओर चार बड़े बड़े लोहे के फाटक हैं जिनके द्वार बन्द हैं, एक काला कलूटा राक्षस के समान मनुष्य उसके सम्मुख खड़ा, मेरी ओर आंखें फाड़ २ कर देख रहा है" यह देख कर वह स्त्री सहम गयी और वह कुछ बोल न सकी। एकाएक जसोदासिंह ने गरजते हुए कहा "कौन है तू? और कहां से इस जंगल में आई ??"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

स्त्री ने, अपने आपको सम्भाल कर उत्तर दिया "मैं एक दुखिया नारी हूं, विपदा की मारी हूं, आपने मुझे किस लिये कारागार में गिराया है, मुझ असहाय अबला को किस आफ़त में फ़साया है ? इस समय मुझ दुखियापर आपने भारी अहसान किया है"

उत्तर में जसोदासिंह ने कहा "सुन्दरी! तेरे इस मनोहर रूप को देख कर ही मैंने तुझे गिराया है। मैं इस कारागार का प्रधान हूं, एक महाबलवान हूँ, इन्सानों को खा जाने वाला इन्सान हूँ और सच तो यह है कि एक शैतान हूं। तू जिस चबूतरे पर सोई थी मैं बहुत देर से तेरी सुन्दरता पर दृष्टि डाल रहा था। अन्त में मैं अपने हृदय को स्थिर न रख सका और तुझ पर मोहित होगया हूं। अब तू साफ २ अपना पता बता और मुझे अपना सेवक बना।"

स्त्री ने कहा "मैं गुजरात प्रदेश की रहने वाली एक विधवा नारी हूं, असहाय हूं, अपने एक मात्र पुत्र की खोज करती २ इस जंगल में आई हूं। आज इसी चबूतरे पर बैठे हुए एक राजा और रानी ने मुझे यहीं ठहरने को कहा था, वे मेरी सहायता का वचन दे गये हैं, उन्होंने मुझे सन्ध्या समय अपने साथ लेजाने का वचन दिया है, मैं उनकी कृपा से अपना पेट-पालन करने की आशा में ही उस चबूतरे पर सोकर समय बिता रहीथी परन्तु आपने मुझे इस कारागारमें न जाने किस तरह डाल दिया। कृपाकर मुझे उसी स्थान पर छोड़

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

दीजिये ! एक असहाय और निर्बल स्त्री पर ज़बरदस्ती अत्याचार करना आप जैसे वीर पुरुष को शोभा नहीं देता। मैं किसी प्रकार भी अपना धर्म नहीं छोड़ सकती आप मुझे धर्म से डिगाकर अपनी इच्छा पूर्ण नहीं कर सकते। दया कर मुझे उसी स्थान पर पहुँचा दीजिये !"

स्त्री के यह विनय-वचन तथा राजा रानी का शब्द सुन कर जसोदासिंह सोच में पड़ गया और कुछ देर तक विचार कर उसने फिर प्रश्न किया "सुन्दरी ? वह कौन से राजा रानी थे जिन्होंने तुझे अपने संग ले जाने का वचन दिया है ? क्या तू उन्हें जानती है ??"

स्त्री ने कहा "नहीं मैं उन दाताओं को नहीं जानती। प्रातःकाल मैं इस जंगल की एक टूटी झोपड़ी के द्वार पर बैठी थी, जहाँ मैं कई दिनों से रहती और अपनी विपत्ति के दिन काटती हूँ। मैंने झाड़ी से निकली हुई एक रानी के समान स्त्री को पहले और वीर पुरुष को पीछे निकलते देखा था। जब वे दोनों चले तो मैंने उनसे प्रार्थना की। उन्होंने मुझ पर दया दिखाई और सन्ध्यासमय अपने संग लेजाने तथा मुझे दासी बनाने का वचन दिया। मैं उन्हीं की आज्ञानुसार उनकी राह देखती थी। कड़ी धूप से बचने के लिए मैं झाड़ी में आकर चबूतरे पर सो गयी और आपने मुझे अपने पंजे में फँसा लिया। ईश्वर के लिये मुझे छोड़ दीजिये !"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

जसोदासिंह ने फिर पूछा "उस रानी और राजा की सूरत कसी थी और उनके वस्त्रादि कैसे थे ?"

स्त्री ने उत्तर दिया "वह तो लक्ष्मी-समान सुन्दरी रानी थी, उसके शरीर पर गुलाबी रंग की एक मूल्यवान साड़ी थी और राजा के सर पर पटापटी का बनारसी साफा बंधा था और हाथ में एक खूबसूरत छड़ी थी !"

यह सुनकर जसोदासिंह समझ गया कि सरदार बबर-सिंह और रानी बुलबुल ही थे, जिन्होंने इसे दासी बनाने का वचन दिया होगा। वह विचारने लगा कि "जब तक निश्चय न होजाय कि यह सत्य कहती है, इसे इसी अवस्था में रहने देना चाहिये—यदि वास्तव में सरदार ने इसे दासी बनाना स्वीकार किया है तो कोई चिन्ता नहीं, मैं फिर भी इसे अपनी प्रिया बनाऊँगा अपने दाम में फसाऊंगा।" यह सोच कर उसने उसे कहा "चन्द्रवदनी ! तू जिसे राजा और रानी समझती है वह हैं भी। मैं उन्हें जानता हूँ, वे सन्ध्या समय यहीं पर पहले आयेंगे, यदि उन्होंने तुझे देख कर कहा कि "हम इसे दासी बनायेंगे" तब तो ठीक है अन्यथा तुझे मेरी इच्छा पूर्ण करनी होगी। इसके अतिरिक्त अब यहां से तेरा छुटकारा होना कठिन ही नहीं असम्भव है।" यह कह कर जसोदासिंह ने वहीं खड़े २ पृथ्वी में गड़े हुए एक कुन्डे को पैर से दबाया, उसी समय एक द्वार का लोहे का फाटक खुल गया इस फाटक के अंदर एक भारी दालान था। इस

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

दालान में कई एक रौशनदान थे जिससे रौशनी आती थी और हवा भी आती जाती थी। इसी दालान में जसोदासिंह ने उस स्त्री को जाने का इशारा किया, वह बिचारी उसी दालान के अन्दर गयी और तुरन्त फाटक बन्द होगया। वह अन्दर ही अन्दर अपने दुर्भाग्य पर पछताने लगी।

हम ऊपर कह आये हैं कि "सन्ध्या समय वह स्त्री पुरुष लौटे और उन्होंने उस स्त्री को देखा परन्तु न पाकर वे उसी चबूतरे की राह से अन्दर उतरे।" वे अन्दर गये तो जसोदासिंह ने उन्हें प्रणाम किया और कहा" "स्वामी! क्या आपने किसी स्त्री को आज दासी बनाने के लिए कहा था?"

उत्तर में आश्चर्य पूर्वक बबरसिंह ने कहा "हाँ, कहा था परन्तु तुमने यह कैसे जाना?"

जसोदासिंह ने उत्तर दिया—"वह स्त्री चबूतरेपर दोपहर के समय सो रही थी, मैंने उसे जाली में गिरा लिया, उसीसे सब हाल मिला। वह नंबर एक के दालान में बन्दी है उसके लिये क्या आज्ञा?"

बबरसिंह ने कहा "उसे बाहर निकालो! मैंने उसे बुलबुल रानी की दासी बनाना स्वीकार किया है, अभी उसकी परीक्षा लेनी है" यह सुन कर जसोदासिंह ने उसे तुरन्त बाहरनिकाला, वह स्त्री उन दोनों को देख कर तुरन्त सामने आई और हाथ जोड़ कर प्रार्थना करने लगी "राजा जी! मैं न जाने कहां लाई गयी हूं—आपने मुझ दुखिया पर दया दिखाने का वचन

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

दिया था-दया निधान ! मुझे इस कारागार से मुक्त कीजिये !!"

बबरसिंह ने सांत्वना देते हुए कहा "चिन्ता न कर यह स्थान मेरा ही है-आ-मेरे सङ्ग आ, मैं तुझे किसी प्रकार का कष्ट न होने दूंगा" यह कह कर वे दोनों पूर्व-दिशा की ओर बढ़े, पूर्व फाटक तक पहुंचते ही वह लोहे का बख्तरदार फाटक खुल गया और सामने ही रास्ता दिखाई देने लगा। बबरसिंह अपनी प्रियसी बुलबुल के सङ्ग आगे २ चले और वह स्त्री भी एक प्रकार भयभीत होती हुई अपने मन में अनेक प्रकार के विचार करती और ध्यान पूर्वक उस स्थान को देखती हुई, चुप चाप उनके पीछे २ चली।

प्रायः दो सौ कदम तक अन्धेरे में आगे बढ़ने पर कुछ रौशनी दिखाई दी, दक्खिन की ओर फिर मुड़ना पड़ा और मोड़ से प्रायः पचास कदम की दूरी पर एक पहरेदार नङ्गी तलवार लिये खड़ा था, जिसने देखते ही झुककर सलाम की और एक घंटा जो छत से लटक रहा था बजा दिया। इस घंटे की आवाज़ कुन्द थी जो उसी स्थान में ही सुनाई देती थी, दूर तक नहीं अतः आवाज़ के साथ ही एक बख्तरदार फाटक खुल गया और तीनों ने उसके अन्दर प्रवेश किया। यह भी एक रास्ता था जो यहां से पूर्व-दिशा की ओर जा रहा था प्रायः सौ कदम के बाद ही एक दूसरा बख्तरदार फाटक था, यहां भी पहरेदार नङ्गी तलवार लिये खड़ा था। इस पहरेदार ने भी सलाम कर पृथ्वी पर गड़े हुए एक लोहे के

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

डंडे को ऊपर की तरफ़ खींचा, फाटक खुल गया और तीनों ने प्रवेश किया। प्रायः बीस कदम आगे जाकर एक सिढ़ियों का सिलसिला था जिससे उन्हें नीचे उतरना पड़ा और फ़िर प्रायः पचास कदम चल कर एक पत्थर का फाटक था, जिस में एक जञ्जीर लटक रही थी। बबरसिंह ने उस जञ्जीर को जोर से खींचा और पत्थर अपने स्थान से करीब आध गज तक हट गया, इसी तङ्ग रास्ते से तीनों अन्दर गये। फाटक के अन्दर एक पहरेदार भी खड़ा था जिसने तुरन्त फ़ाटक बन्द कर दिया। अब सामने ही कुछ सिढ़ियों का सिलसिला ऊपर को गया हुआ था इसी रास्ते तीनों ऊपर चढ़े और एक बड़े मयदान में पहुंचे।

पाठक! यही वह मयदान है, जहां डाकूदल का कारख़ाना है और इसी स्थान को मिस्टर ब्लेक ने देखा था। अब विशेष विस्तार करना वृथा है पाठक यहां का परिचय पा चुके हैं अस्तु—

एक सजे सजाये बड़े हाल में पहुंच कर बबरसिंह तथा उनकी प्रिया बुलबुल रानी बैठ गये, वह स्त्री वहीं खड़ी रही। बैठते ही बुलबुल रानी ने, अपनी कुरसी के बगल में, टेबल पर पड़ी हुई एक घंटी बजा दी। इसी समय उस हाल की दीवार में लगा हुआ एक छोटा फाटक खुला और तीन स्त्रियें वहां से निकल कर सामने आईं और एक बार सर झुका कर फिर खड़ी हो गयीं। यह तीनों स्त्रियां युवती और वीर दिखाई

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

देती हैं परन्तु इनमें से सुन्दर एक भी नहीं। तीनों की कमर में एक २ कटारी खुंसी हुई थी और इनका वेश भी वीर रमणियों का सा था। इन्हें देखते ही बुलबुल ने तीनों में से एक प्रधान दासी "सुरसरी" से उसके कान में कहा "सुरसरी! यह एक दुखिया नारी है, स्वामी ने इसे दासी बनाने की आज्ञा दी है अतः तुम इसे ले जाओ और यहां की तमाम शर्त्तों से इसे सूचित कर दो और साथ ही इसके हृदय की परिक्षा भी लेलो यह साहसी है या नहीं। यूं तो यह साहसी दिखाई देती है परन्तु अब परिक्षा भी करलो! यदि यह योग्य है तो अपने साथ शामिल कर लो, अन्यथा छोड़ दी जाय। सावधान! गुप्त भेद गुप्त ही रहे।"

स्वामिन की यह आज्ञा सुन कर सुरसरी ने उस स्त्री से कहा "आओ बहन! मेरे सङ्ग आओ!!"

बात लाचारी थी, वह स्त्री मन ही मन आश्चर्य कर रही थी और वहां के रङ्ग ढङ्ग देख २ कर भयभीत सी हो रही थी, कुछ उत्तर देने का साहस न हुआ और वह चुपचाप उन दासियों के साथ उसी द्वार से अन्दर गयी। अन्दर जाकर उसने एक और छोटा सा मयदान देखा, जिसके चारों ओर पक्की इटों की दीवार थी और चारों ओर चार फाटक बन्द थे। अब दो दासियां तो उसी मयदान में खड़ी रह गयीं और सुरसरी उस स्त्री को लेकर एक फाटक के सम्मुख पहुंची। उसने फाटक पर लगी हुई एक जंज़ीर खींची जिससे फाटक

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

खुल गया और अन्दर प्रायः बीस स्त्रियां हाथों में एक एक खुखड़ी लिये खड़ी थीं। यह सब स्त्रियें काले रङ्ग की थीं, इनका शरीर गठा था, बाल घुंघराले थे और सूरत भयावनो थी अस्तु, इस फाटक से अन्दर जाने पर फाटक बन्द हो गया। सुरसरी उसे लिये हुए अन्दर गयी यह भी एक छोटा सा मयदान था जिसके चारों ओर बन्द दीवार थो और केवल एक लोहे का फाटक था। इस फाटक के सम्मुख खड़ी होकर सुरसरी ने एक विलक्षण आवाज़ की, जिससे वह फाटक खुल गया और नङ्गी तलवार लिये एक भयङ्कर स्त्री खड़ी दिखाई पड़ी। फाटक के अन्दर जाने पर यह फाटक भी बन्द हो गया। सुरसरी उस स्त्री को लिये अब एक छोटे से कमरे में गयी। यहां पर चारों तरफ़ बड़े ही छोटे २ कमरे प्रायः चालीस थे और मध्य भाग में एक बहुत बड़ा लोहे का बख्तरदार फाटक था। यह तमाम कमरे दासियों के रहने के थे अतः एक ख़ाली कमरे में सुरसरी ने उस स्त्री को पहुंचाते ही कहा "लो बहन! यह कमरा तुम्हारे लिये है, तुम्हे इसी कमरे में रहना होगा!! अब तुम यहीं ठहरो और मै शीघ्र ही तुम्हारे लिये खाने को लाती हूं, पहले कुछ खा पी लो फिर मेरी तुम्हारी बातें होंगी किसी प्रकार की चिन्ता न करो।" यह कह कर सुरसरी वहां से उसी फाटक के बाहर चली गयी कि जिस से वह आई थी।

इस छोटे कमरे में एक खाट रक्खी थी जिस पर एक दरी बिछी हुई थी, खाट के पास ही एक मिट्टी का घड़ा और एक

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

गिलास पड़ा था। इसके सिवा और वहां कुछ न था, कमरे की दीवारें पक्की थीं और एक दिवार में केवल एक रौशनदान था जिस से रौशनी व हवा मिलती थी तथा दूसरी दीवार में एक लोहे की छोटी खिड़की थी जो बन्द थी। स्त्री बिचारी इस समय चुपचाप उस खाट पर बैठ गयी और मन ही मन विचारने लगी "हाय! मैं कहां आ फ़सी, मैंने तो अपने जीवन में पृथ्वी के अन्दर ऐसा विकट स्थान नहीं देखा था। यह कोई महल मकान है या यमदूतों का निवास स्थान है। इस भयानक स्थान की सभी बातें भयानक हैं-सभी दृश्य मनुष्य का हृदय हिला देने वाले हैं, यहां पर आकर किसी व्यक्ति का निकल भागना कठिन ही नहीं असम्भव है—असम्भव है.....

अभी स्त्री, यह सब विचार कर ही रही थी कि सुरस्वरी एक हाथ में लोहे की एक थाली और दूसरे हाथ में एक हलाल किया हुआ साबूत खरगोश लिये आ पहुंची। थाली उसने फ़र्श पर रखदी और खरगोश को एक तरफ़ रख कर बोली "आओ बहन! भोजन करलो!!"

"आप मेरे लिये बड़ा कष्ट उठा रहीं हैं" कहती हुई वह स्त्री उठ कर थाली के पास फ़र्श पर आ बैठी और थाली की ओर देख कर चौंक उठी। उस थाली में चार रोटियां, एक बाटी में दाल और प्रायः तीन चार हलाल बटेर थे जो न तो भुने थे और न बने थे, केवल साबूत बटेरों के पर खुंसे हुए थे। यह देख कर उस स्त्री ने कहा बहन! यह तुम क्या लाई

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

हो ? यह कच्चा ही मांस क्या होगा ??" यह सुन कर सुरसरी ने कहा "बहन ! हमारे यहां सभी कच्चा मांस खाते हैं बल्कि तुम्हारे लिये तो यह सब अभी हलाल कर के लाई हूं वरन् यहां तो पक्षी आदि दिये जाते हैं और खाने वाले उन्हें आप ही हलाल करते और कच्चा मांस खाते हैं, यहां वही खाना खा और रह सकता है जो बेदर्द, बेरहम, खूनी और साहसी हो। जो कुछ तुम्हारे सामने है यही खाना होगा।

यह सुन कर उस स्त्री ने अपने मन में कई प्रकार के विचार किये और अन्त में उत्तर देते हुए कहा "बहन ! यदि ऐसा ही है तो तुम पक्षी ही ले आती और मैं स्वयं उसे बना कर खाती-मैं क्षत्राणी हूं किसी का किया शिकार मैं नहीं ले सकती। आज तो केवल रोटी दाल ही खाऊंगी और कल से जो तुम्हारी इच्छा हो या जो सब को मिले मुझे भी जीवत पक्षी देना"

सुरसरी यह सुन कर उसके मुंह की ओर देखने लगी और बोली "बहन ! तुम तो इस समय ऐसी वीरता-सूचक बातें कर रही हो मानो तुम वीर और साहसी स्त्री हो परन्तु, मेरे विचार में तो तुम यहां की एक साधारण से साधरण पहरेदार स्त्री को भी परास्त नहीं कर सकती जानती हो ! यहां एक से एक खूंख़ार और जांबाज़ स्त्रियां रहती हैं खैर अब तुम जो इच्छा हो खाओ फ़िर मैं तुम से कुछ प्रश्न करूंगी।"

उस स्त्री ने वह बटेर तो बाहर रख दिये और दाल रोटी खाती हुई न जाने क्या २ सोचने लगी। सुरसरी की छिपी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

दृष्टि उसकी ओर ग़ौर से पड़ रही थी। यह एक विचित्र वीराङ्गना है, पाठक जब इसके कार्य देखेंगे तो विस्मित हो उठेंगे। सुरसरी, उस स्त्री का मनोभाव जानने की चेष्टा कर रही थी और वह स्त्री भी उसकी गुप्त और छिपी दृष्टि से अनजान न थी। वह अपने स्वामी से एक बार सुन चुकी थी कि "तेरी परिक्षा लेकर तुझे दासी पद पर रक्खा जायगा" अतः वह समझ रही थी कि "यह भयानक स्त्री अवश्य ही मेरी परिक्षा लेगी-मुझे भी अपना साहस दिखाना ही पड़ेगा" इन्हीं सब विचारों में उसने भोजन समाप्त कर दिया और सुरसरी से कहा "क्या पानी न मिलेगा ?" उत्तर में सुरसरी ने कहा पानी यहां बड़ी ही कठिनता से लाया जाता है इस कारण, पानी तो अब सबेरे ही मिलेगा"।

स्त्री ने कहा "अच्छा, तुम्हारी इच्छा, सुबह मिलेगा तो सुबह ही सही, इसकी चिन्ता नहीं, मैं दो तीन दिन तक बिना खाये पिये भी रह सकती हूं।"

उत्तर में सुरसरी ने कहा-"बहन! तुम तो बड़ी साहसी स्त्री जान पड़ती हो !! अब ज़रा अपना परिचय तो दो, नाम तो बताओ !!!"

स्त्री ने आदि से अन्त तक अपनी वही राम कहानी कह सुनाई जो उसने अपने नये स्वामी को सुनाई थी। अन्त में उसने कहा—"बहन! मेरा नाम "देवा" है, मेरा पुत्र भिक्षा मांगने गया और लौट कर अभी नहीं आया, मुझे अब एक

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

मात्र यही दुःख है। पेट पालन की तो अब मुझे चिन्ता न करनी चाहिये, जब आप जैसी दया मयी मेरी सहायक हैं। बहन! अब मुझ पर इतनी कृपा करो कि मैं आप लोगों की सेवा में अपना समय व्यतीत करूं और मुझे कोई ऐसा उपाय बता दो जिससे मैं अपने पुत्र को पा सकूँ"

सुरसरी ने उत्तर दिया तुम चिन्ता न करो बहन! यह सुरसरी तुम्हारी सब तरह सेवा करेगी। मैं यहां के सभी आने जाने वालों को सूचित कर दूंगी यदि तुम्हारा पुत्र कहीं इस जङ्गल में पाया गया तो अवश्य ही यहां पहुंच जायगा परन्तु, तुम अब यहां से बाहर तब तक न जा सकोगी, जब तक स्वामी को तुम पर पूरा भरोसा न होजाय। यह एक प्रकार का राज्य है, इस राज्य का शासन बड़ा विकट है, इस राज्य दल में जो सम्मिलित होता है वह फिर अलग नहीं हो सकता। इस दल से नाता तोड़ने की इच्छा रखने वाला जान से ही मार दिया जाता है। अच्छा अब मेरे संग आओ! मैं आज की रात्रि तुम्हें अपने संग रक्खूँगी, कल से तुम्हारा प्रबन्ध इसी कमरे में होगा"

देवा और कुछ न बोली और उठ खड़ी हुई। वह मन ही मन समझ रही है कि "रानी ने इसे कुछ कान में कहा था अतः यह अपना काम छोड़ कर जो मेरे संग है, तो अवश्य ही यह मेरी परीक्षा के लिये नियत की गयी है। अब मुझे साहस पूर्वक इस पिशाच दल में अपना परिचय देना पड़ेगा। देवा!

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

तू भीषण कुचक्र में फँस चुकी है, अब तेरा छुटकारा होना असम्भव है।" यह विचार करती हुई वह सुरसरी के संग चल पड़ी।

हम ऊपर कह आये हैं कि "इस स्थान पर केवल छोटे २ कमरे बने हैं और मध्य में एक फाटक है" इसी फाटक के पास जाकर सुरसरी ने एक शब्द किया, फाटक खुल गया और दोनों के अन्दर जाते ही बन्द होगया। अन्दर जाने पर देवा ने देखा कि "एक दालान है जहां का फ़र्श सिर्फ़ खून से तर है, चार कालेकलूटे हट्टे कट्टे भयानक सूरत के पुरुष हाथों में नंगी तलवारें लिये इधर से उधर घूम रहे हैं। उन के पैर से लेकर सर तक तमाम खून ही खून दिखाई देता है मानो यह आठ पहर और चौंसठ घड़ी खून में ही खेला करते हैं। यह दृश्य देख कर देवा दहल उठी परन्तु प्रकट में उस ने अपना आप सुरसरी की दृष्टि में प्रकट नहीं होने दिया।

यहाँ आते ही सुरसरी ने उन चारों जल्लादों को कुछ संकेत किया, संकेत पाते ही उन में से एक ने तुरन्त ही एक भयंकर उच्च शब्द किया, उस शब्द के होते ही एक पांचवाँ मनुष्य उस दालान की एक कोठरी से निकला जो एक बकरे को पकड़े हुए उस जल्लाद के सम्मुख आया। जल्लाद ने तुरन्त ही उस बकरे को, उस दालान के बीचों बीच बने हुए एक चबूतरे पर लिटा कर बाँध दिया। इस चबूतरे में एक गढ़ा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

था और बाहर एक छिद्र था, छिद्र में एक नाली सी लगी थी और नाली के आगे एक घड़ा रक्खा था। उस जल्लाद ने तुरन्त ही उस बकरे को हलाल कर डाला और आप अलग हट खड़ा हुआ। बकरे का ख़ून उस नाली के ज़रिये उस घड़े में पड़ने लगा, जब बन्द हुआ तो सुरसरी ने, एक शीशे का गिलास मंगवाया और उस घड़े के ख़ून से भरकर देवा के आगे करते हुए कहा "देवा बहन! तुम प्यासी हो, यहाँ का यही लाल पानी है जो सबको पहली बार पीना पड़ताहै,लो इसे पीडालो।

देवा मनहीमन इस पैशाचिक काण्ड को देख कर सहम गयी परन्तु फिर भी उसने अपने आपको सम्हाला और कहा "सुरसरी बहन! मैं पहले ही कह चुकी हूं कि मैं अपने शिकार का काम आपही करूँगी। एक विवश जीव का तुमने नाहक़ ही ख़ून करादिया। यदि मुझे ख़ून ही पिलाना था तो मनुष्य का पिलाती, मैं उसे अपने हाथ से क़त्ल करती और उसका ख़ून पीती, मैं यह नापाक ख़ून नहीं पीसकती।

यह सुनकर सुरसरी मुस्किरादी और उसने वह ख़ून से भरा गिलास जल्लाद के हाथ में देदिया,वह देखते २ ही गटागट पीगया। यह देखकर देवा मनहीमन कहने लगी "परमेश्वर! मैंने आजतक राक्षसों का नाम सुनाही था परन्तु, आज आंखों से भी देख लिया" सुरसरी ने देवा से कहा— "अच्छा बहन! आ, मैं तुझे पानी ही पिलाऊँ" यह कहकर वह आगे बढ़ी देवा भी पीछे चली। दालान की एक कोठरी से निकलने पर आगे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

सिढ़ियां थीं जो नीचेको बहुत दूरतक गई हुई दिखाई देती थीं। यहीं पर आकर देवा ने कहा "लो बहन! इन सीढ़ियों के नीचे जल का एक सोता है, उतर कर पानी पी लो तब आगे चलें।"

देवा सिढ़ियों से नीचे उतरने लगी, जब वह प्रायः सौ सिढ़ियों के लगभग उतर गई तो ऊपरसे सुरसरी ने एक गोला नीचे की ओर फेंक दिया। यह गोला प्रायः देवा से दस बीस सिढ़ियों के नीचे जाकर फ़र्श से टकराया और एक बड़ा ही भयंकर शब्द हुआ जिसके सुनते ही देवा एकाएक चिल्ला उठी "प्रभुईशू" उसकी आवाज़ सुरसरी ने ध्यान पूर्वक सुनी और यही उसका मतलब था। वह सुन कर नीचे उतरी और देवा से कहा—"हैं तुम तो ज़रा सी बात में चिल्ला उठी! जब स्वामी के लिये युद्ध करना पड़ेगा तो तोप और बन्दूक से इस तरह डरोगी?"

देवा ने कहा—"यह एक अचानक शब्द हुआ था इस कारण मैं भयभीत होगई थी क्षमा करना!"

सुरसरी ने कहा—"तुमने तो बहन अपना पूर्ण परिचय नहीं दिया। तुमने अपने आप को क्षत्राणी कहा था परन्तु तुम तो ईसाई-धर्म की स्त्री हो!"

देवा ने आश्चर्य से कहा—"मैं अवश्य क्षत्राणी हूं परन्तु जब विधवा होकर घर से निकल पड़ी तो पेट-पालन के कारण मुझे ईसाई धर्म स्वीकर करना पड़ा है। आपने मुझे किस तरह पहचान लिया कि मैं ईसाई हूं?

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

सुरसरी ने कहा—"तुमने भय में आकर प्रभु-ईशू का नाम लिया इसीसे समझ गई।"

देवा ने उत्तर दिया—"समझ गयी २ तुम आज मेरी परिक्षा कर रही हो परन्तु याद रखना! मैं सर्व प्रकार के गुण जानती हूं परिक्षा लेनी चाहती हो तो मेरे हाथ में तलवार देकर लो, किसी वीराङ्गना को मेरे सन्मुख करो या किसी वीर से लड़ाकर परिक्षा लो, इस प्रकार भला कहाँ तक मेरी परीक्षा लोगी?"

सुरसरी ने हंसते हुए कहा—"क्या तुम समझती हो कि, मैं तुम्हारी परिक्षा ले रही हूं?"

देवा ने कहा—"हाँ, तुम परीक्षा ले रही हो, तुम्हारे कान में स्वामिन ने जो कुछ कहा था तुम वही सब कर रही हो!"

सुरसरी ने मन ही मन कहा—"अवश्य ही यह कोई साधारण स्त्री नहीं है, कुछ दिन में तो यह हम सब को भा नीचा दिखाने के लिए तैयार होजायगी। इसे अभी से अपने वश में कर लेना चाहिये" यह विचार कर उसने कहा—देवा! जब तुम जान ही गई हो कि मैं तुम्हारी परिक्षा ले रही हूं, तो अब मैं तुम्हारी परिक्षा न लूँगी। मैंने तुम्हारा साहस देख लिया, परिक्षायें तो अभी और कठिन से कठिन लेनी थी परन्तु अब न लूँगी, मैं यों हीतुम्हें देखकर तुम पर मोहित हो रही हूं। अब मैं रानी जी से कह कर तुम्हें उत्तम काम दिलाऊँगी और किसी समय यदि तुम्हें कुछ कठिनता आ

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

पड़ेगी तो मैं तुम्हारी सहायता करूंगी।"

देवा ने उत्तर दिया—"बहन ! मैं आपका उपकार मानूगी; अब मुझे आप का ही भरोसा है। मैं भी तुम्हारी दासी की तरह रह कर तुम्हारी सेवा करूंगी।"

सुरसरी ने कहा—"नहीं २ मैं तुम्हें आज से अपनी सगी बहन मानूंगी। सेवा तो हमें स्वामिन की करनी है। अच्छा आओ, अब जल तो पीलो !" कहती हुइ सुरसरी उसे और कुछ दूर नीचे ले गयी। नीचे एक और फ़र्श था और दूसरी ओर एक छोटी सी बावली थी जिसका निर्मल और शीतल जल बड़ा ही मीठा और हलका था। देवा ने वह जल पिया और बड़ी प्रसन्न हुई। अन्त में देवा ने कहा—"बहन ! अब जब मेरा तुम्हारा बहनों का नाता होगया तो अब मुझे भी कुछ छिपाना न चाहिये। बहन ! मेरे निर्वाह का प्रबन्ध करदो और किसी प्रकार मेरे पुत्र की खोज करादो मैं बड़ी ही दुखी हूं। पति के पश्चात् आज पांच वर्ष मैंने बड़ी ही विपत्ति के बिताये हैं। अब जब तुम्हारी शरण में आई हूं तो मेरा कष्ट निवारण करो !"

सुरसरी बोली—"अब चिन्ता करने की कोई बात नहीं मेरे संग चलो, पहले तुम्हारा ही प्रबन्ध ठीक करूं।" यह कह कर वह उसे लेकर ऊपर आई और आते ही उसने दक्षिण की ओर जाकर एक फाटक स्वयं खोला, फिर अन्दर से बन्दकर के वह वहां से पूर्व की ओर चली। उधर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

भी एक फाटक खोला तो वही मयदान नज़र आया जहां से वह सुरसरी के साथ भेजी गयी थी । मयदान के उत्तर भाग में कुछ दूर जाने पर एक बड़ा सा हाल था, दोनों ने उस में प्रवेश किया। अन्दर जाकर देवा ने देखा कि यह हाल तमाम शोभायमान वस्तुओं से सजा हुआ है, चारों ओर परदे लटक रहे हैं, कहीं २ छोटे छोटे गमले फूलों के रखे हैं, कहीं २ लकड़ी की बनी बड़ी २ सुन्दर वस्तुएं रखी हैं। कहां तक कहें यहां का सभी ठाठ राजसी ही प्रतीत होता है।

सुरसरी ने देवा को वहीं एक कुरसी पर बैठा दिया और स्वयं एक और अन्दरूनी कमरे के द्वार पर लटकता हुआ परदा उठाकर अन्दर चली गयी। अब देवा मनही मन विचार करने लगी "समझ में नहीं आता कि यहां का प्रबन्धकर्ता कितना शक्ति शाली है ओफ! बड़े ही पक्के प्रबन्ध हैं, यहां तो बाहर की एक चिड़िया भी नहीं फटक सकती मनुष्य तो क्या। जिधर देखो उधर हो विचित्र स्थान, जिधर देखो उधर ही एक से एक बढ़कर प्रबन्ध। ईश्वर जाने यहां अभी और कितने भीषण स्थान हैं, कितने मनुष्य यहां के रखवाले हैं, कितना बड़ा यह दल है जो पृथ्वी के अन्दर अपना राज्य कर रहा है।" अभी देवा यह विचार ही कर रही थी कि सुरसरी आ पहुंची और उसने आते ही कहा—"आओ बहन! तुम्हें रानी जी के पास ले चलूं"

दोनों उस अन्दर के कमरे में गयीं। यहां और भी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

विचित्रता थी, यह कमरा ठीक रानियों के आराम गाह की तरह सजा हुआ था, सामने ही एक सुनहरी पलंग था जिस पर रानी लेटी हुई थी, एक दासी उसके पैर दबा रही थी दूसरी पंखा डुला रही थी। द्वार पर चार स्त्रियें हाथों में खांडे लिए पहरा दे रहीं थीं। सुरसरी और देवा दोनों ही आगे बढ़ीं सुरसरी ने झुक कर अभिवादन किया देवा ने भी उसकी देखा देखी वैसा ही किया।

रानीने देवा की ओर देखकर कहा—"ऐ नयी दासी! मैंने सुना है कि तुम एक साहसी स्त्री हो, तुम मेरे दासत्व में रहने के योग्य ही सिद्ध हुई हो तो मैं तुम्हें आज से दासी बनाना स्वीकार करती हूं। आज से तुम हमारी प्रधान वीराङ्गना सुरसरी के साथ रह कर यहां का सब काम सीखलो! कुछ ही दिनों में मैं तुम्हें अपने गुप्त महल के पहरे पर तैनात करूंगी, तब तक तुम्हें सभी बातें देख लेनी चाहिये। यह सुरसरी तुम्हें सभीतरह परिचित करदेगी और तुम्हारे रहन सहन का भी प्रबन्ध करदेगी। जाओ अब यत्न पूर्वक यहां के कामों में चित्त लगाओ और सुरसरी के अधीन रह कर इस की इच्छानुसार सब कार्य करो!"

देवा ने हाथ जोड़कर कहा—"दया मयी! आपने इस दुखिया पर जो उपकार किया है, इसका बदला आपको ईश्वर देगा। मैं सदैव आपकी आज्ञा का पालन करूंगी,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

अब मुझे किसी प्रकार का कष्ट न रहा केवल यही एक चिन्ता मुझे विवश कर रही है कि मेरे पुत्र की खोज हो, उसे पाकर मैं सब तरह सुखी हो जाऊंगी।"

रानी ने कहा—"जो कुछ कहना या करना हो सुरसरी से ही कहो यह सब बातें इसी के अधीन है और यही सबकी प्रधान है।"

दोनों ही ने पुनः अभिवादन करते हुए कहा—"जो आज्ञा" और दोनों ही कमरे से बाहर निकल कर हाल में आईं। हाल से निकल कर सुरसरी एक नये रास्ते से बात की बातमें उसी मयदान में जा पहुंची जहां दासियों के रहने के कमरे थे। उसी कमरे में देवा को ले जाकर सुरसरी ने कहा—"बहन ! अब रात अधिक हो चुकी है, तुम इस खाट पर आराम करो, प्रातःकाल से ही मैं तुम्हें अपने संग रक्खूँगी।"

सुरसरी यह कह कर चलदी और देवा खाट पर जा बैठी। कुछ देरतक वह इधर उधर की बातें सोचती विचारती रही अन्त में वह लेट गयी और निद्रा देवी के वशी भूत हुई।

———

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

छठवां-परिच्छेद

किस तरह यह पिशाच दल पकड़ा जायगा, उन सब में अधिक शक्ति शाली कौन है? "क्या वह बुलबुल?" नहीं २ बुलबुल के अतिरिक्त उसका प्रेमी सरदार बबरसिंह ही सारे दल को अपनी ऊंगलियों पर नचाता है, वही सबको दुष्टता का पाठ पढ़ाता है, वही स्वयं राज भोग करता है और अपनी चालाकी की लगाम से चार पांच सौ घोड़ों को एक ही षड़यन्त्र रूपी गाड़ी में जोत कर चलाता है। यह राक्षस और वह पिशाची, यही दोनों यदि किसी प्रकार मेरे जाल में आजायं तो बस, और क्या चाहिये! फ़ते ·· फ़ते ··" एक नौका पर बैठा हुआ मिस्टर ब्लेक, यह विचार कर रहा था और साथ ही साथ उसकी निगाह चारों दिशा में पड़ रही थी, नौका सोन नदी के तीरे २ जा रही थी। ब्लेक ने न जाने क्या देखा और एकाएक नौका रुकवा कर मलाह से कहा "धीरू! तू नौका को यहीं रख!! चार दिन तक मैं इस समय के पहले ही यदि यहां न पहुंचा, तो नौका को उसी स्थान पर जाकर लगा देना जहां जो स्थान मैंने तुझे बता दिया है। सावधान! मैंने तुझे जो कार्य करने को कह रक्खा है उसमें त्रुटि न हो!! यह कह कर ब्लेक किनारे से उतर कर किसी अजनबी मनुष्य के पीछे २ चल पड़ा।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

अजनवी मनुष्य देखने में तो एक अमीरज़ादा नज़र आता था परन्तु उसने एक भारी गठरी अपने सर पर उठाई हुई थी, यही एक कारण था कि ब्लेक को उस पर सन्देह हो गया। अजनवी, बस्ती की ओर बढ़ा ब्लेक उसके पीछे था परन्तु दूर था और एक प्रकार आड़ में चल रहा था। अजनवी कई बार पीछे आगे इधर उधर देखता हुआ बढ़ रहा था परन्तु न तो उसे ख़बर थी कि कोई मेरे पीछे लगा है और वह जानता भी न था कि "कौन है?"

अजनवी एक गली के आगे जाकर खड़ा हो गया, यह गली एक चौरस्ते पर थी। सोनपुर में यही एक सब से अच्छा बाज़ार है, विशेष कर यहां अमीरों की ही एक से एक आलीशान कोठियां दिखाई देती हैं। सड़क बहुत ही साफ़ और दूर तक चली गयी है, एक ओर तो लगातार कोठियां ही कोठियां दिखाई देती हैं और दूसरी ओर कहीं कहीं दूर दूर पर कोठियां और छोटे २ बाग़ लगे नज़र आते हैं। दिन डूब चुका था इस से बिलकुल साफ़ दिखाई न देता था, फिर भी इस सड़क का दृश्य देखने योग्य था।

जिस गली के मोड़ पर वह अजनवी खड़ा था, वहीं एक हलवाई की दूकान थी। उसने उस हलवाई से एक थाल भर मिठाईयां ली और गली के अन्दर चला। यह गली बहुत दूर तक सीधी चली गयी थी, कुछ दूर तक तो रौशनी थी परन्तु आधी गली समाप्त होने के बाद अंधेरा ही अंधेरा था। गली

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

ख़त्म हो जाने के बाद एक सड़क थी जिसका एक रास्ता पूर्व और दूसरा पश्चिम की ओर गया था, गली से बाहर होते ही एक धीमी सी रौशनी दिखाई दी। अजनवी आगे और ब्लेक पीछे था, अब तक भी ब्लेक को वह न देख सका था और वह अपने रास्ते पर लापरवाही से चला जा रहा था। रौशनी से पार हो जाने पर आगे फ़िर अँधेरा था। सड़क बहुत दूर तक गयी हुई थी, इस सड़क पर एक प्रकार का जङ्गल ही दोनों तरफ़ दिखाई देता था, कहीं २ पर एक दो कोठियां थी। कुछ दूर तक चले जाने पर वहां प्रकाश दिखाई दिया परन्तु वह बहुत दूर था। प्रायः पाव माईल निकल जाने पर एक बाग़ दिखाई दिया जिसके मध्य में एक सुन्दर कोठी बनी हुई थी। निकट जाने पर इतना प्रकाश दिखाई दिया मानो दिन चढ़ा हुआ था। यहां तक तो ब्लेक पहुंचा परन्तु आगे उसका क़दम न बढ़ सका और एक वृक्ष की आड़ में छिप कर खड़ा हो गया क्योंकि वह अजनबी उस बाग़ के द्वार पर जाकर खड़ा हो गया था और चारों तरफ़ देख रहा था।

कुछ ही देर वह अजनवी खड़ा रहा, फिर वह बाग़ के अन्दर चला गया। ब्लेक भी मौक़ा पाकर आगे बढ़ा परन्तु रौशनी इतनी थी कि, वह अपने आप को छिपाकर और आगे तक उस अजनवी का पीछा न कर सकता था अतः वह यह समझ कर एक दूसरे वृक्ष की आड़ में खड़ा होगया कि "वह अजनवी इसी कोठी में गया है, यहीं ठहरकर किसी उपाय से

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

भद लिया जाय तो ठीक हो।" यह सोच कर ब्लेक वहीं छिप कर खड़ा रह गया।

कुछ ही समय के पश्चात एक मोटर आती दिखाई दी, देखते २ वह मोटर उसी बाग़ के द्वार पर आ लगी। इस मोटर पर ड्राइवर के सिवा एक स्त्री और एक पुरुष सवार थे। ब्लेक ने ग़ौर से देखा कि वह दोनों मोटर से उतरे और बाग़ के अन्दर चले गये। ब्लेक इन्हें देखते ही तुरन्त पहचान गया और सोचने लगा कि "यह दोनों ही मेरे शिकार हैं जिनका पाना मैं असम्भव समझता था।" आहाः ! यह तो बिना परिश्रम ही शिकार हाथ आ गया, बस यही इनका क्रीड़ा-महल है जो मैंने देख लिया। कोई फ़िक्र नहीं, अब आज इन्हें अवश्य ही अपने जाल में फसाऊंगा, यही वो कार्य है जिसे आज पूरा कर दिखाऊंगा। हां-यह स्थान तो देख लिया अब तुरन्त हो किसी प्रकार की मदद लाऊं और इन्हें चारों तरफ़ से घेरलूं।" ब्लेक यह सब सोंच ही रहा था कि ड्राईवर ने मोटर स्टार्ट कर दो । ब्लेक ने नजाने क्या सोंचा, ज्योंही वह मोटर घुमाकर धीरे २ लौटने लगा त्योंहीं ब्लेक धीरे २ दौड़कर मोटर के पीछे लगे हुए एक फ़ालतू टायर को पकड़ कर, उसी पर पैर धरकर बैठ गया। यह कार्य ब्लेक ने ऐसी फुर्त्ती और सावधानी से किया कि ड्राईवर कुछ भी न जान सका। मोटर अब हवा से बातें करने लगी। कुछ ही देर में वह घूम फिर कर उसी सड़क पर पहुंची जिस सड़क की

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

गली पार कर ब्लेक, उस अजनवी के पीछे २ आया था। यहां एक अस्तबल सा था जहां बहुत सी किराये की गाड़ियां खड़ी थीं। ड्राईवर ने इसी आम अड्डे पर आकर अपनी मोटर रोक दी। ब्लेक तुरन्त उतर कर मोटर के पीछे से निकल कर एक किराया गाड़ी के पीछे चला गया और उसके इर्द गिर्द घूम कर मोटर ड्राईवर के सामने ही कुछ दूर पर जा खड़ा हुआ और उसे देखने लगा।

यह ड्राईवर वही था जो पहले ही दिन ब्लेक को अपने पास बैठा कर अपने मालिक के कहने पर, असबाब उठवाने के बहाने ले गया था और ब्लेक गिरफ्तार किया गया था। ब्लेक ने उसे पहचान लिया परन्तु ड्राईवर ने उसे नहीं पहचाना क्योंकि ब्लेक इस समय एक पठान के वेश में था। ब्लेक ने उससे कहा—"ड्राईवर! यह मोटर किसकी है?" अब ड्राईवर ने ग़ौर से उसकी ओर देखा और बोला "अपने मालिक की मोटर है"

ब्लेक ने फिर पूछा—"कौन मालिक? उसका नाम क्या है ??" ड्राईवर ने कुछ लापरवाही से कहा—"यह मोटर कलकत्ते के सेठ ठाकुर दास की है"

ब्लेक, समझ ही गया था कि मोटर किसकी है और यह डाकू-दल का मनुष्य है, सीधे से यह कुछ न बतायगा इसे ही गिरफ्तार करने से बहुत कुछ हाल मिल जायगा अतः ब्लेक मोटर खोलकर बीच में बैठ गया और बोला—

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

"मुझे एक जरूरी काम है, मोटर को थाने तक ले चलो! थाना यहां से दूर है और मुझे वहां जल्द पहुंचना है, यह एक सरकारी काम है।"

ड्राईवर उस के मुंह की तरफ़ देखने लगा और बोला—"यह गाड़ी कहीं नहीं जा सकती, बिना मालिक के हुक्म"

ब्लेक ने कहा—"मालिक के हुक्म की इस समय दरकार नहीं, मैं सरकारी आदमी हूं और सरकारी काम से वहां जाना चाहता हूं, तुम शीघ्र ही मुझे थाने में पहुंचा आओ तुम्हें इनाम दूंगा।"

ड्राईवर ने उत्तर दिया—"मैं नहीं जा सकता, किसी किराये की गाड़ी को पकड़लो! रहीशों की गाड़ियां यूँ बेगारी में नहीं पकड़ी जा सकतीं।"

ब्लेक ने देखा "सीधी ऊँगली से घी न निकलेगा" उसने कहा ड्राईवर! तुम्हें मुझे ले ही जाना होगा, इनकार करने से काम न चलेगा जानते हो मैं कौन हूं?"

ड्राईवर ने कहा—"आप कोई आफ़ीसर ही होंगे पर मुझे इस से क्या, मैं मालिक के हुक्म बिना गाड़ी नहीं ले जा सकता, आप मोटर से उतर जाईये!"

ब्लेक, यह सुनकर मोटर से नीचे उत्तर पड़ा और उसने बड़े जोर से एक थप्पड़ ड्राईवर के गाल पर मारा। वह गाल पर हाथ रखकर सोहराने लगा और उसकी ओर देखने लगा। इतने में गाड़ियों के कोचवान आदि भी इकट्ठे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

हो गये, दो चार पथिक भी ठहर गये। ब्लेक ने फिर कहा—"क्यों अबभी ले चलता है या नहीं?"

ड्राइवर कुछ देर तो चुप रहा फिर न जाने क्या सोंच कर चुपचाप ही गाड़ी में बैठ गया। ब्लेक भी पीछे बैठा और बोला "चलो दाहिनी सड़क से सीधे चलो?"

ड्राईवर ने मोटर उधर ही हाँकदी और ले चला कुछ दूर तो वह ठीक चलता रहा, प्रायः एक माईल जाने पर सूनसान सड़क थी और यह एक चौरस्ता था। ड्राईवर ने एक दूसरे रास्ते पर मोटर घुमाई और बड़ी तेज़ी से ले चला। ब्लेक समझ गया कि, यह अपनी उसी कोठी तक मुझे लेजाकर फसाना चाहता है। उसने पिस्तौल निकाल ली और दूसरे हाथ से चोर लालटैन में रौशनी की, ड्राईवर पर प्रकाश डालते और पिस्तौल दिखाते हुए ब्लेक ने कहा—"रोको मोटर?" ड्राईवर ने घूमकर पिस्तौल देखी और सहम गया, मोटर वहीं रोकदी।

ब्लेक ने फिर कहा--"घुमा मोटर और जिधर बताता हूं ले चल?"

"मरता क्या न करता?" ड्राईवर ने मोटर घुमा दी और लौट कर ठीक रास्ते पर आया। ब्लेक पिस्तौल ताने बैठा रहा और उसे रास्ता बताता हुआ थाने तक ले गया। थाने के द्वार पर सिपाही खड़े थे मोटर के लगते ही ब्लेक ने सिपाहियों को इशारा किया दोनों सिपाही मोटर के दोनों ओर आ खड़े

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

हुए। ब्लेक ने पिस्तौल कमर में रक्खी और मोटर से उतर कर ड्राईवर को भी उतरने को कहा। ड्राईवर चालाक था उसने एक दम मोटर हांक दी। वह चाहता था कि मोटर ले भागूं पर ब्लेक भी सावधान था वह फ़ौरन कूद कर मोटर की पटरी पर जा चढ़ा और गरज कर बोला "रोको मोटर और नीचे उतरो!"

ड्राईवर लाचार होगया, उसने मोटर रोक दी और उतर पड़ा। इतने में सिपाही भी दोड़े आ पहुंचे, ब्लेक का इशारा पाकर उन्होंने ड्राईवर को पकड़ लिया और थाने के अन्दर ले चले। ड्राईवर को भेज कर ब्लेक ने मोटर की तालाशी लेनी आरम्भ की। पिछली गद्दी को उठाने पर उसने एक बन्दख़ाना देखा, उसमें अन्दरूनी ताला लगा था और वह बन्द था। ब्लेक ने उसे खोलना चाहा, इधर उधर निगाह दौड़ाई, ड्राईवर के बैठने की गद्दी उठाई तो उस गद्दी के नीचे भी एक ख़ाना था जिस पर पटरा ढंका था। ब्लेक ने उसे खोला तो एक लोहे के छल्लों में लगी चार चाभियां और एक पिस्तौल मिली। ब्लेक ने उन्हें उठा लिया और चाभी से पीछे की गद्दी वाला ख़ाना खोला। खोलते ही उसने उसमें कुछ कागज़ात, तीन पिस्तौलें, एक कटारी और एक छोटा सा बेग़ पाया। उसने सब कुछ वहां से उठा लिया और थाने में आया।

जिस समय सिपाही ड्राईवर को लेकर थाने में गये थे वहां कितने ही सिपाही इकट्ठे हो गये थे। थानेदार उन दोनों

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

सिपाहियों से पूछ रहा था कि "इसे किसने गिरफ्तार कराया है? इस वक़्त यहां कौन आया है ??" इतने में ही ब्लेक पहुंच गया। ब्लेक को देखते ही थानेदार अपनी कुरसी से उठ खड़ा हुआ और ब्लेक को पहचान कर उससे हाथ मिलाया। ब्लेक उसे लेकर एक ओर चला गया और कुछ बातें करने लगा।

थानेदार—आपको आज इतनी रात में तकलीफ़ उठानी पड़ी!

ब्लेक—हमारा काम तकलीफ़ और आराम नहीं देख सकता, ख़ैर इस वख़्त में ज़्यादह बातें न कर सकूंगा। यह जो गिरफ्तार किया गया है, यह एक ऐसा कैदी है जिसके ज़रिये से हमें उस दल का कुछ हाल मिलेगा जिसके लिये आज हल चल मची हुई है। यह उसी दल के सरदार बबरसिंह का ड्राईवर है। सावधान रह कर इससे सब हाल पूछने की कोशिश करना। मार पीट से भी यह कुछ न बतायगा जब तक की यह अपने आपको मौत के अधीन हुआ न समझेगा। मैं इस समय नहीं ठहर सकता, तुरन्त पचास आदमी तैयार कर के मेनरोड से उत्तर की तरफ़ कासगंज जानेवाली सड़क पर फौरन भेज दो मैं वहां ही जा रहा हूं।

थानेदार—बहुत अच्छा, मैं अभी ही पचास जवान आपके पीछे २ ही रवाना करता हूं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

ब्लेक—मेनरोड तक मोटरों में और आगे उन्हें पैदल ही जाने को कहना हथियार सिर्फ़ पिस्तौलें ही हों। अच्छा इस समय पांच आदमी तैयार हैं मैं उन्हें ही ले जाता हूं, पिस्तौलें निकाल दो।

थानेदार और ब्लेक दोनों अन्दर गये। थानेदार ने एक लोहे का सन्दूक खोला और पाँच पिस्तोलें निकालीं। ब्लेक ने यह सब समान भी उसी सन्दूक में रखवाया जो मोटर में से मिला था। अब दोनों ही बाहर निकले। ब्लेक ने ड्राइवर से कहा—"ड्राइवर! तुमने पहले तो मुझे लाने से इन्कार किया फिर जब तुम लाये तो तुमने किसी और रास्ते में डालना चाहा फिर तीसरी बार भी न टले अब तुम्हें क्या सज़ा दी जाय?"

ड्राइवर ने अब विनय पूर्वक कहा—"मैंने आपको एक आला आफ़ीसर न जाना था। जब आपको ले आया तो मैं अपने मालिक से कहने जा रहा था कि मैं थाने जा रहा हूं। अब तो मैंने आपको यहाँ पहुंचा दिया है आप जो चाहें कर सकते हैं परन्तु मेरा कसूर माफ़ करिये, मैंने सुबह चार बजे ही मालिक को कलकत्ता ले जाना है मेहरबानी करके मुझे छोड़ दीजिये!"

ड्राइवर की इन बातों में एक ख़ास बात ब्लेक के मतलब की थी कि "सुबह चार बजे उसके मालिक उस कोठी से निकलेंगे" ब्लेक ने इस पर कुछ विचार कर फिर कहा—

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

"ड्राइवर ! तुमने अपने मालिक का साफ साफ परिचय नहीं दिया, जब तक साफ २ न बताओगे यहाँ से छुटकारा न पाओगे सावधान ! मैं तुझे जानता हूं कि जिसका तू नौकर है !"

ड्राइवर ने कहा—"मैंने तो आप से ठीक ही बताया है, यदि आपको विश्वास न हो तो आप मेरे साथ चलें मैं अपने मालिक के सामने आपको ले चलूं।"

ब्लेक इस बात का अन्दरूँनी भेद भी जान गया, वह समझ गया कि "इस दल का एक बच्चा भी अपना भेद न बताएगा" उसने इस समय इस विषय को यहीं तक छोड़ कर सिपाहियों से कहा "इस बदज़ात के सब कपड़े उतार लो और इसे नंगे बदन हाजत में बन्द करो ! थानेदार साहेब खुद ही इस की पीठ पर गरम सीखचों को लाल करके मरवायेंगे और पता लगायेंगे"

सिपाहियों ने उसके सब कपड़े उतार डाले, उसकी जेब से एक बड़ा सा चाकू और कुछ कागज मिले, यह सब थाने दार को ब्लेक ने दे दिये और उसको अलग ले जाकर उसके कान में कुछ कहा। अन्त में ड्राइवर को एक लोहे के फाटक वाली कोठरी में बन्द किया गया। ब्लेक ने ड्राइवर के सामने जाकर कुछ देर तक उसके मुंह पर चोर लालटेन की रौशनी डाली और ग़ौर से उसका चेहरा देखा। इसके बाद वह एक ख़ाली कमरे में आया और कुर्सी पर बैठ गया। उसने

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

ड्राइवर के सब कपड़े मंगवाकर खुद पहिने और अपना पठानी वेश त्याग दिया। कपड़ों को उसने थानेदार के पास भेज दिया और अपनी ज़रूरी चीजें पिस्तौल आदि कोट के नीचे छिपाकर रक्खे। उसने एक चमड़े का छोटा बेग निकाल कर खोला, इस में छोटी २ और लम्बी २ कई प्रकार के रंग की बत्तियां थीं। इन में से दो तीन बत्तियां निकाल कर ब्लेक एक टँगे हुए शीशे के सामने जा खड़ा हुआ और अपने मुंह पर वैसे दाग़ आदि बनाने लगा, जो उसने ड्राइवर के मुंह पर देखे थे।

तैयार होने पर ब्लेक और ड्राइवर की शक्ल ठीक एक समान दिखाई देने लगी। अब ब्लेक ने थानेदार को बुलवाया, थानेदार ने आते ही उसकी शक्ल देखी और हंस कर कहा—

"मिस्टर ब्लेक! आपकी शागिरदी करनी चाहिये, आप हमारे जासूसी महकमे में सब से बड़े ओहदेदार हैं। इस वक़्त मैं आपके इस वेश बदलने की करामात को देखकर ताज्जुब कर रहा हूं।"

ब्लेक ने उत्तर में कहा—"भाई साहब! हमारा तो यही काम ठहरा। ख़ैर अब वक़्त नहीं है, मैं जा रहा हूं आप फ़ौरन आदमी भेजें अगर फ़तहयाबी हुई तो इस में आप को बड़ा फ़ायदा पहुंचेगा"

थानेदार ने कहा—"यह सब आपकी इनायत होगी। आप चलें, मैं इसी दम सबको भेजता हूं—सब तैयार हो रहे हैं और मोटर लारी भी तैयार है।"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

ब्लेक उठ खड़ा हुआ, उसने पांच सिपाहियों को पिस्तौलें तथा कारतूस दे दिये, उन्हें लेकर मोटर पर जा बैठा और मोटर हांक कर चला। कुछ ही देर में मोटर उसी सड़क पर जा पहुंची जहां से घूम कर ब्लेक अजनवी के साथ उस कोठी की सड़क पर गया था। कुछ दूर आगे जाकर ब्लेक ने मोटर रोक दी, सिपाहियों को बहुत सी बातें समझायीं और खूब सावधान करके मोटर से उतार दिया। पांचों सिपाही अलग अलग एक के आगे एक होकर एक एक दरख़्त की आड़ में खड़े होगए। ब्लेक मोटर लेकर उस कोठी की ओर चला गया।

ब्लेक, मोटर लिये जा रहा था, एकाएक उसने मोटर कुछ दूर पर एक तरफ़ एक झाड़ी की आड़ में लगा दी और कुछ सोंच समझ कर वह पैदल ही कोठी की ओर चल पड़ा। बाग़के पास पहुंच कर वह उसी दरख्तकी आड़में जा खड़ा हुआ जहां पहले खड़ा था। यहां आते ही उसने गाने की आवाज़ सुनी, यह आवाज़ औरत की थी। ब्लेक ने विचार किया "वाहवा, यहां तो पिशाच-दल इस समय राग रंग में मस्त हो रहा है, हो न हो इस समय सब शराबख़ोरी में हैं तभी बीच २ में हल्ला भी होरहा है। मौका तो अच्छा है, मैं ड्राईवर के वेश में हूं, कोई रोकेगा भी नहीं, इस समय ऊपर तक जाकर देखना चाहिये कि कितने यहां मौजूद हैं।" अभी ब्लेक यह सब सोच ही रहा था कि उसने एक हट्टे कट्टे जवान को बाग़

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

के द्वार पर आते देखा। वह बाहर आया, पहले तो उसने इधर उधर निगाह दौड़ा कर देखा, फिर वह आगे बढ़कर पेशाब करने बैठ गया। इस समय ब्लेक ठीक उसके पीछे ही खड़ा था। मौका देख कर ब्लेंक ने अपनी जेब से एक गोली जैसी लाल चीज़ निकाली और फुरती से उसने एक हाथ से तो वह गोला उसके नाक में लगाया और दूसरे दाहिने हाथ से उसने उसका मुँह बन्द किया, देखते २ ही वह बेहोश हो गया और बोल न सका। ब्लेक ने अब उसे घसीटा और सामने ही एक झाड़ी में लेगया। वहां लेजाकर ब्लेक ने उस के सब कपड़े उतार लिये और अपने कपड़ों के ऊपर ही पहन लिये। अपने सर का साफा उतार कर वहीं छिपा दिया, और उसकी पगड़ी अपने सर पर धर ली, चोर लालटेन से उसकी शक्ल देखी और एक छोटा शीशा अपनी पाकेट से निकाल कर अपने मुंह का नकशा वैसा ही बना लिया। एक बात की मुश्किल पड़ी, उसके दाढ़ी थी और ब्लेक के पास न थी। ब्लेक ने फ़ौरन ही अपनी जेब से एक उस्तरा निकाला और एक छोटी डिब्बी निकाली जिस में एक प्रकार का लासा था। ब्लेक ने उस मनुष्य की दाड़ी मूड़ ली और वही सब बाल ऐसी खूबी से अपने गाल पर चिपका लिये कि उसका रूप ठीक वैसा ही बन गया। अब ब्लेक ने उसकी नाक के पास एक बुकनी सी रख कर फूंक दी जिससे वह बुकनी उड़ कर उसकी नाक में गयी और वह एकदम मुरदा सा पड़

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

गया। ब्लेक ने उसे घसीट कर अपने कंधे पर डाला और कुछ दूर पर एक छिपे हुए सिपाही को बुलाकर उसे उसके कंधे पर डाल कर कहा—"लो, थोड़ी दूर तक तुम लेजाओ फिर दूसरे को दो, इसी तरह इसे थाने में पहुंचाओ और बन्द कर दो। सावधान! एक घंटे से ज्यादा वक़्त न लगे और यह बन्द हो जाय। यों तो यह दो घंटे बेहोश रहेगा पर फिर भी इसे जल्द लेजाकर बन्द कराने का प्रबन्ध करो!" सिपाही उस भारी देह को उठाये उठाये गाता हुआ चला गया। ब्लेक दौड़ कर उसी बाग़ के द्वार पर जा खड़ा हुआ।

अब ब्लेक ने अच्छी तरह बाग़ के अन्दर देखा, उसने देखा कि कुछ दूर पर एक पहरेदार बैठा २ ऊंघ रहा है। ब्लेक निश्चिन्त होकर बाग़ के अन्दर गया। जहां पहरेदार बैठा था उसके सामने ही एक लोहे का फाटक बन्द था। फाटक पर लोहे की चद्दर जड़ी थी, अन्दर का कुछ हाल न दिखाई देता था। ग़ौर से देखने पर उसने एक छेद उस फाटक में देखा और कुछ सोचने लगा। अपना विचार स्थिर कर ब्लेक ने धीरे २ अपना पैर उस पहरेदार की तरफ़ बढ़ाया और उसी तरकीब से उसे भी बेहोश किया जैसे पहले को किया था। वह पहरेदार भी बेहोश हो गया। ब्लेक ने उसे दीवार के साहरे बैठा दिया जिस से यह जान पड़े कि वह बैठा २ ही सो रहा है। अब ब्लेक ने उस छेद के ज़रिये अन्दर का भाग देखा।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

उसने देखा "अन्दर कोठी की सदर सिढ़ियां हैं और रौशनी खूब हो रही है। सिढ़ियों के दोनों तरफ़ दो वीर मनुष्य अपने हाथों में तलवारें लिये बैठे हैं और वह भी ऊंघ रहे हैं" ब्लेक के लिये यह सुनहरी मौक़ा था, अब वह इस विचार में लगा कि फाटक कैसे खुले और मैं कैसे जाऊं। इधर उधर देखने पर ब्लेक ने फाटक में लगा हुआ एक गुप्त ताला देखा, बाहर से उसमें चाभी लगती थी। ब्लेक ने विचारा "इस फाटक की चाभी अवश्य ही इन पहरेदारों के पास होनी चाहिये" उसने बेहोश पहरेदार की जेबें टटोलीं तो एक चाभी पाई। ब्लेक इस समय अपने सब कामों में ईश्वर की कृपा देख रहा था और उत्साह पूर्वक अपना काम किये चला जाता था—अस्तु,

ब्लेक ने धीरे से फाटक खोला और फ़िर उसी तरह अटका दिया तथा अपने को छिपाता और इधर उधर सावधानी से देखता हुआ वह एक पहरेदार के पीछे जा छिपा क्योंकि, वह एक बड़े खम्भे का ढासना लगाकर उँघा रहा था। ब्लेक ने इसे भी बड़ी सावधानी से बेहोश किया, फिर दूसरे की ओर बढ़ा, उसे भी उसने बेहोश किया और निश्चिन्त हो गया। उसने दोनों की तलवारें लेलीं और फाटक के बाहर निकल कर एक वृक्ष के पीछे छिपा दीं।

अब ब्लेक फिर अन्दर पहुंचा और सिढ़ियों से चढ़कर अन्दर गया, अन्दर जाने पर उसने ऊपर जाने वाले एक रास्ते का द्वार देखा, यहां से ऊपर को सिढ़ियां गयीं थी परन्तु द्वार

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

पर एक बड़ा ही मोटा ताज़ा वीर पहरेदार हाथ में नङ्गी तलवार लिये इधर उधर घूम कर पहरा दे रहा था।

अब ब्लेक को मुश्किल का सामना करना पड़ा, वह एक अन्धेरे कोने में छिपकर अपना कर्त्तव्य स्थिर करने के लिये विचार करने लगा। इतने में ऊपर से एक मनुष्य और भी उतरा और पहरेदार से बोला—"भोलासिंह! तुम क्यों विपत्ति में पड़े हो!! ऊपर तो बोतल पर बोतल खुल रही है, राग रङ्ग का बाज़ार गर्म है, इस समय हमारी बुलबुल रानी खुद मस्त होकर गा रही हैं, सरदारजी आज नशे में चूर हो रहे हैं। हुक्म हुआ है कि कल दिन भर और रात भर मेहफ़िल जमा ही रहेगा, मोटर आने पर लौटा दी जाय और परसों सुबह चार बजे हाज़िर हो। अब तुम मजे में आराम से सोजाओ अब ऊपर से कोई न उतरेगा, मैं यही कहने को आया हूं"

भोलासिंह ने उत्तर में कहा—"क्या सच ही? तब तो भाई मैं ज़रा आराम करूंगा। तुम ऊपर जाओ, सुबह मोटर आयगी तो लौटा दूंगा, अभी तो बारह बजे हैं, चार घंटा आराम करलूं।"

वह मनुष्य ऊपर ही चला गया, भोलासिंह ने तलवार म्यान में रक्खी और सिढ़ियों के द्वार पर ही एक दरी बिछाकर सो गया। ब्लेक सब सुन चुका था और अपनी मुश्किलें आसान होती देख कर ईश्वर को धन्यवाद दे रहा था। जब उसने देखा कि भोलासिंह नीद्रा के वशीभूत हो गया है तो

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

उसने तुरन्त ही उसे भी बेहोश किया और उसकी तलवार उठा कर बाग़ से बाहर निकला। बाहर आकर उसने देखा कि उसके हुक्म मुताबिक़ एक एक दरख़्त के पीछे दूर तक सिपाही भरी पिस्तौलें लिये तैनात हैं। अब ब्लेक ने चार सिपाहियों को बुलाया और बड़ी सावधानी से चारों पहरेदारों को बाग से बाहर निकाला और मोटर में लदवाया। एक सिपाही मोटर चलाना जानता था इस से ब्लेक को विशेष कठिनायी न पड़ी। उन पहरेदारों को थाने में भेज दिया गया और उन्हें बन्द कराकर मोटर शीघ्र ही लौटाकर यथा स्थान पर रखने का हुक्म देकर ब्लेक अन्दर गया।

ब्लेक ने इतना काम कर डाला परन्तु पिशाच दल न जान सका क्योंकि, इस समय वे सब राग रङ्ग और शराबख़ोरी में मतवाले थे। ब्लेक इस समय सदर पहरेदार के वेश में था अतः वह बेख़ौफ़ होकर सिढ़ियों पर धीरे २ चढ़ने लगा। ऊपर जाकर उसने सिढ़ियों से झांक कर सामने ही एक बड़ा दालान देखा, जो बड़ी ही सजावट में था। मध्यभाग में बुलबुल बैठी गा रही है, उसके पास ही मतवाला बबरसिंह नशे में झूम रहा है और बार २ बुलबुल को अपने सीने से लगा रहा है। चारों तरफ़, अपने सामने एक २ शराब की बोतल और एक २ गिलास रक्खे, प्रायः बीस-बीर बैठे हुए "वाह रानी जी! २" कर रहे हैं। बुलबुल के पास ही कुछ दूर पर चार

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

खूबसूरत औरतें भी बैठी हुई मस्त हो रही हैं यह चारों औरतें नौजवान और बड़ी ही सुन्दरी हैं।

ब्लेक इस समय झांक २ कर सब रङ्ग ढङ्ग देख रहा था और मन ही मन प्रसन्न हो रहा था कि—जो काम आज तक बड़े २ जासूस न कर सके आज मैं उस कार्य को अकेला ही कर डालूंगा। ब्लेक ने कुछ देर सोंचा, फिर अपनी जेब से एक काले रङ्ग का गोला निकाला जो देखने में एक छोटे गेंद की तरह था। ब्लेक ने तुरन्त ही अपने नाक पर एक रुमाल बांधा और मौक़ा ताड़ कर उसने वह गोला बड़े ज़ोर से उस दालान में ठीक बबरसिंह और बुलबुल के पास ही बीच में निशाना साध कर पटका।

उस गोले के गिरते ही एक बुलन्द आवाज़ हुई और एक धुवां उठ कर बात की बात में सारे दालान में छा गया। वह सभी एक दम चौंक कर उठ खड़े हुए, हल्ला सा मच गया परन्तु एक ही मिनट में वे सब एक २ करके, एक के ऊपर एक लाश की तरह गिरने लगे, देखते ही देखते सब के सब बेहोश हो गये।

ब्लेक, अब ठहर न सका और तुरन्त ही नीचे उतरा, फाटक खोल दिया, बाग के बाहर निकल कर उसने सीटी बजाई। सीटी बजते ही प्रायः दस सिपाही इधर उधर से निकल कर उसके सामने आ खड़े हुए। ब्लेक ने एक सिपाही को तो अन्य दस सिपाही लाने का हुक्म दिया और आप उन

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

सिपाहियों को लिये फाटक के अन्दर आया, इतने में ही और भी दस पन्दरह सिपाही आ पहुंचे। ब्लेक, दो चार को पहरे पर छोड़ बाक़ी उन सब को लिये दिये धड़ाधड़ ऊपर जा चढ़ा परन्तु उसके आश्चर्य का ठिकाना न रहा। उसने देखा—"सब तो उसी तरह बेहोश पड़े हैं परन्तु बुलबुल और बबरसिंह दोनों ही वहां नहीं हैं" यह देखकर ब्लेक की सारी प्रसन्नता काफ़ूर हो गयी। वह मन ही मन विचारने और पश्चाताप करने लगा। "ओफ़! मैने मारी भूल की जो यहां और किसी के होने का सन्धानं लिये बिना ही नीचे उतर गया। यहाँ अवश्य ही और कोई है जिसने उन दोनों को यहां से हटाया।" यह सोंच कर वह एक २ करके सब तरफ़ देखने लगा, सिपाही भी भरी पिस्तौलें लिये उसके साथ थे। सारी कोठी का एक २ कोना देखडाला परन्तु कोई मनुष्य न मिला। यह कोठी दो मंज़िली थी परन्तु "ऊपर जाने की सिढ़ियां कहां हैं" ब्लेक को पता न लगा। ब्लेक को सन्देह तो होगया कि "अवश्य ही ऊपर के तले में कोई हैं जो बबरसिंह आदिको ऊपर ही लेगये हैं, अब फुरती करनी चाहिये।" ब्लेक ने एक सिपाही ड्राईवर को मोटर लाने भेजा, कुछ को उन बेहोश डाकुओं को लादने का हुक्म दिया वे सब तुरन्त अपना काम करने लगे और पाँच सिपाहियों के साथ ब्लेक, हरएक स्थान को ग़ौर से देखने लगा।

जो बेहोश डाकू थे वे एक ही मोटर पर प्लेग के मुरदों

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

की तरह लादकर थाने भेजे गये। ब्लेक ने पत्ता २ छान मारा परन्तु ऊपर का रास्ता न मिला। वह हताश होकर लौटा और सिढ़ियों में आते ही रुक गया। कुछ देर सोंचने के बाद वह फिर उसी दालान में गया और अच्छी तरह देख भाल करने लगा। उस दालान के पीछे चार कमरे थे, ब्लेक उन सब कमरों की देख भाल करते २ सब से आख़ीर वाले कमरे में पहुंचा। उस कमरे की दीवारों में चारों ओर अलमारियें बनी थीं और सब में ताले बन्द थे, एक अलमारी जो मध्य में थी उस में ताला बन्द न था परन्तु वह बन्द थीं, उसका दरवाज़ा लोहे का था और कहीं भी ताला भीतरी या बाहरी है इसका पता न चलता था अतः ब्लेक ने एक २ करके अलमारियां तुड़वानी शुरू कीं। तीन अलमारियों में कितने ही कागज़, कारतूस, पिस्तौलें और कटारियां आदि मिलीं, चौथी का तोड़ना कठिन था परन्तु इधर उधर खोज करने पर लोहे की एक कुदाली मिल गयी जिससे बार २ चोटें करने पर उसके फाटक में एक बड़ासा छेद होगया। उस छेद से देखने पर जान पड़ा कि "आगे प्रायः पाँच छे हाथ उसके अन्दर एक वैसा ही फाटक और भी है। अब तो ब्लेक का सन्देह बढ़ गया और वह फाटक बड़ी ही कठिनता से इतना ही टूटा कि, एक मनुष्य कठिनता से अन्दर जासके। एक सिपाही को अन्दर निकाला गया, उसने अन्दर जाकर फाटक खोला और अब दूसरे फाटक को तोड़ने में सब लगे। यह फाटक बहुत मज़बूत था, बड़ी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

मुश्किल से इस में एक छोटा सा छेद हुआ ब्लेक ने उस छेद से देखा कि अन्दर अँधेरा ही अँधेरा है। उस फाटक में दूसरी जगह एक छेद और किया गया। अब एक छेद से चोर लालटेन दिखाई गयी और दूसरे छेद से ब्लेक देखने लगा। उसने उस फाटक के अन्दर सिढ़ियों का सिलसिला देखा तो उस का उत्साह दूना होगया। अब क्या था! फाटक तोड़ने की खूब कोशिश होने लगी। बड़ी ही कठिनता और मेहनत से उस फाटक में एक आदमी के जाने का रास्ता बनाया गया और एक सिपाही उसके अन्दर घुसा। ब्लेक ने उसे सिढ़ियों का और ऊपर का पता लेने को कहा, सिपाही ने भयभीत होकर कहा—"यह काम अकेले का नहीं है" ब्लेक ने दो सिपाही और भी अन्दर किये। तीन सिपाही भरी पिस्तौलें लिये ऊपर चढ़े परन्तु दनादन पिस्तौलों की आवाज़ सुनाई दी, एक सिपाही तो चिल्ला कर गिरा और वहीं ढेर होगया। अब ब्लेक को पूरा सन्देह होगया कि ऊपर कुछ डाकू मौजूद हैं और मेरे शिकार भी ऊपर ही हैं। ब्लेक ने अब दो सिपाहियों को वहीं खड़ा कर दिया और तुरन्त बाहर के सिपाहियों को बुला लाया। इस समय थाने से लौट कर बाक़ी सिपाही भी आगये थे अतः पचीस सिपाही तो चारो तरफ़ पहरे में हुए, बीस सिपाही ऊपर आगये अब फाटक फिर तोड़ा जाने लगा। इधर फाटक टूट रहा था उधर तब तक ऊपर गये हुए दोनों सिपाही भी चिल्लाए "बचाओ! २" और दोनों धड़ाधड़ गिर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

कर छट पटाते हुए बोले "ऊपर का रास्ता तंग है और ऊपर पांच डाकू हैं" कहते २ ख़त्म होगये। फाटक अब टूट गया था। ब्लेक अन्दर घुसा, अन्दर दस आदमी भी खड़े नहीं हो सकते थे खैर सात सिपाही अन्दर घुसे ब्लेक ने उन्हें कुछ धीरे में कहा। अब सातो सिपाही एक दम पिस्तौलें एक साथ ही दागते हुए ऊपर चढ़ने लगे। एक साथ सातों पिस्तौलों के चलाने से प्रायः दो आदमी ऊपर से गिरे। इस समय उन सिपाहियों के पीछे ब्लेक था जो चोर लालटेन की रौशनी दे रहा था। सिपाही सावधानी से पिस्तौलें दागते हुए चढ़ते जाते थे। एक और मरा और अब सब ऊपर जा चढ़े। ऊपर भी एक दालान था, उसमें इस समय दस डाकू पिस्तौलें लिये बराबर जवाब देरहे थे। दोनों तरफ़ से पिस्तौलों के वार होरहे थे, दो सिपाही इधर के मरे और तीन डाकू उधर के। ब्लेक के पीछे अब तक सभी सिपाही आगये थे, वे भी वार करने लगे। होते २ पांच डाकू तमाम हुए और बाक़ी कारतूस ख़त्म होने के कारण पकड़े गये और मुश्कें कसकर नीचे भेज दिये गये। ब्लेक अब दस सिपाहियों सहित आगे बढ़ा, उस दालान के अन्दर एक और कमरा था जिसका दरवाज़ा अन्दर से बन्द था। ब्लेक ने उसे तुरन्त तुड़वाना शुरू कर दिया। यह दरवाज़ा लकड़ी का था, टूटते देर न लगी परन्तु जैसे ही दरवाज़ा टूटकर बाहर की ओर गिरा वैसे ही अन्दर से बबर सिंह ने अपने पांच आदमियों सहित उनपर पिस्तौलों से वार

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri.

किया। दो सिपाही और मरे इतने में ब्लेक की वार से बबर सिंह का हाथ जख़्मी होगया और पिस्तौल उसके हाथ से गिर पड़ी। उसके सहायकों और सिपाहीयों में बराबर गोली चल रही थी उधर के तीन मरे और बाक़ी दो डाकू और बबरसिंह पकड़े गये । ब्लेक ने उनकी मुश्कें पीछे करके बँधवाईं और ऊपर की देखभाल की, और कोई दिखाई न दिया तो ब्लेक को बुलबुल के लापता होने पर बड़ा आश्चर्य हुआ। उसने अच्छी तरह तालाश की पर कुछ पता न चला, लाचार वो उन सब को लेकर नीचे उतरा और बबरसिंह आदि को यत्न पूर्वक मोटर में बिठाकर थाने पहुँचा।

आज आधीरात में थाने पर बड़ी चहल पहल थी डाकूओं का दल जो पहले पहुंचाया गया था सो सब बन्द होगये थे, अब जो ब्लेक के संग गये वो भी बन्द किये गये, बबरसिंह एक अलग फाटक में बन्द किया गाया।

अब ब्लेक निश्चन्त हो कर बैठा, थानेदार ने उसे बहुत कुछ धन्यवाद दिया और उसकी बहादुरी की तारीफ़ की। उत्तर में ब्लेक ने कहा —"पूरा काम नहीं हुआ, ख़ास कैदी जो लापता है वह बुलबुल है, यदि वह किसीतरह अपने ठिकाने पहुंच गयी है तो हमें सावधान रहना चाहिए।यह दल जो पकड़ा गया है वह नहीं के बराबर है, फकत सरदार कैदी हुआ यही ज़रा खुशी की बात है परन्तु वह पिशाची बुलबुल हमें निश्चिन्त न रहने देगी, अपने सरदार को छुड़ाने

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

की कोशिश कर रही होगी। यह दल छोटा नहीं, अभी हमें निश्चिन्ती नहीं हो सकती, अब हमें औरभी सावधानी करनी चाहिये। आप कैदियों के सामने मौजूद रहें और भरी पिस्तौलों का पहरा रक्खें क्योंकि यह सब खूंख़ार शेर हैं और दल के मुख्य २ सरदार हैं, बड़े वीर और साहसी हैं। मैं जबतक लौटकर न आऊं आप खुद पहरा दें।"

यह कह कर ब्लेक मोटर पर सवार हुआ, सीधा सोनपुर के पुलिस कमिशनर साहब के बंगले पर पहुंचा। साहब सो रहे थे और पहरेदार पहरा दे रहे थे। मोटर दरवाज़े पर लगा कर ब्लेक अन्दर दाख़िल हुआ तो पहरे दारों ने रोका परन्तु ब्लेक ने अपनी पाकेट से एक पीतल का गोल चक्कर सा दिखाया तो वे सब चुप होगये। ब्लेकने साबह के खानसामा को बुलवाया और साहव को उठाने को कहा। खानसामा ऊपरगया और उसने एक दाया को उठाकर साहब के शयनगृह में भेजा, दाया ने मेमसाहब को आवाज दी, वह उठीं और झल्लाकर दाया से बोलीं "क्यों इस वक़्त मुझे उठाया ?" दाया ने कहा—"हजूर! एक साहब आये हैं और उन्होंने साहब को उठाने कहा है आप उन्हें उठा दीजिये।" मेम ने बाहर निकल कर देखा—ब्लेक ने टोपी उतार कर सलाम की और वही चक्कर दिखाया। मेम ने तुरन्त साहब को जा जगाया। साहेब आंखें मलते २ बाहर आये ब्लेक ने उनसे हाथ मिलाया और चक्कर दिखाकर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

अपना परिचय दिया। कमिश्नर साहब उसे लेकर एक अलग कमरे में चलेगये और उसे एक कुरसी पर बैठाकर बोले—"मिस्टर ब्लेक! मैंने तुम्हारा नाम सुना है पर आज सौभाग्य से तुम्हें देखा, कहो इस समय आना पड़ा?"

ब्लेक ने आदि से अन्त तक सब कथा कह सुनाई और अन्त में कहा—"अब आपकी क्या आज्ञा है?"

साहेब ने ब्लेक को इस कार्य के लिये धन्वाद देते हुए कहा—"मिस्टर ब्लेक! हम सब को तुमसे ऐसी ही आशा थी और इस मुश्किल को तुम्हीं आसान करोगे, यही सबको भरोसा है ख़ैर—अब जहां तक पकड़े गये हैं उन्हें यत्नपूर्वक कलकत्ता पहुंचना चाहिये अतः मेरी चिट्ठी लेकर तुम फ़ौजी करनल के पास जाओ और वहां से गोरे सिपाही लो तथा उन कैदियों को स्टेशन पहुंचाओ! मैं इसी समय उन कैदियों के लिये स्पेशल ट्रेन का बन्दोबस्त करता हूं। अब मेरी तुम्हारी मुलाकात स्टेशन पर होगी।"

दोनों ही बात चीत करके उठ खड़े हुए—साहब ने पहले कपड़े पहने फिर चिठी लिख कर ब्लेक को दी और दोनों ही कोठी से उतरे। ब्लेक,वह मोटर लेकर छावनीको ओर गया और साहब अपनी मोटर पर स्टेशन की ओर रवाना हुए।

———

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

सातवां-परिच्छेद

आज रात्रि के बारह बजे, डाकू-दल के कारख़ाने में हलचल मच रही है। एक बड़े हाल में बुलबुल रानी अभी आकर पहुंची है, उसने आते ही सारे दल को इकट्ठा किया है और वह उन्हें कह रही है—"वीरो! तुम्हारे सौभाग्य से और अपनी चालाकी तथा साहस से ही कमन्द के जरिये आराम कोठी से उतर कर मैं पैदल दौड़ी और रास्ते में एक मोटर पाकर यहां तक पहुंची हूं। सरदार के साथ सभी मुख्य वीर पकड़े गये। अब तक तो वे थाने में ही भेजे गये हैं परन्तु रातभर ही रहेंगे सबेरा होते ही न जाने किस जेहल में भेजे जायें। बस अब अपनी जान पर खेलने का मौका आगया है। एक सौ वीर फ़ौरन ही बन्दूकें लेकर इसी समय थाने पर धावा करें तथा पचास वीर मेरे साथ तैयार हों—अब देर का काम नहीं है।" यह कहकर बुलबुल अपने आरामगाह में गयी तथा उसने अपनी सब पहरेदार दासियों को इकट्ठा किया और कहा—"वीराङ्गनाओं! सावधान होजाओ—सरदार पकड़े गये हैं, दुश्मन ब्लेक छाती पर है, तुम सब पहरे की खूब ख़बर दारी रक्खो—सुरसरी! तुम फ़ौरन मरदाना वेश करो और मैं

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

भी करतो हूं तुझे मेरे साथ चलना होगा !!" यह कहकर बुलबुल ने और सुरसरी ने अपना वेश बदला और आवश्यक शस्त्र लगालिये। चलने के समय बुलबुल ने नयी दासी देवा से कहा—"देवा ! तुमने बहुत जल्द अपनी उन्नति करली, तुम ने जो जो कार्य अब तक कर दिखाये हैं, मैं उससे तुझ पर बड़ी प्रसन्न हूं। अब सुरसरी मेरे संग जा रही है अतः जबतक हमलोग न लौटें, तबतक सुरसरी का स्थान मैं तुम्हें देती हूं—बड़ी सावधानी से यहां के पहरे का प्रबन्ध करना !"

उत्तर में देवा ने कहा—"रानी जी ! आप निश्चित रहिये मैं अपना कर्त्तव्य पालन करूंगी परन्तु मैं कईबार कहचुकी हूं कि, प्रधान पहरेदार यसोदासिंह मुझे बार २ तंग करता है और मेरा धर्म नष्ट करना चाहता है। आपके न रहने से वह और भी तंग करेगा, आप उसे न रहने दें तो मैं उसका भी काम खुद करूंगी और किसी प्रकार का प्रबन्ध बिगड़ने न पायेगा।'

सुरसरी ने भी इसका समर्थन किया। बुलबुल ने कहा अच्छा ऐसा ही है, तो यहां अन्दर महल का प्रबन्ध माया को दिया जाय और सदर से लगाकर गुप्तद्वारों का प्रबन्ध देवा अनी देख भाल में करे। मैं यसोदासिंह को अपने साथ लूंगी क्यों कि उसके समान कूदने और ऊंचाई डाँकने वाला वीर दूसरा है भी नहीं—शायद ऐसा ही मौका

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

आपड़े।" यह कर उसने अन्दर महल का प्रबन्ध "माया" को करने कहा और देवा को लेकर वह बाहर निकली। सदर द्वार पर जाकर उसने सब पहरे दारों को इकट्ठा किया। यसोदासिंह को तैयार होने और बाकी पहरेदारों को देवा के अधीन काम करने की आज्ञा दी गयी। अब पचास जवान जो बुलबुल ने अपने साथ लेजाने को तैयार किये थे वे भी आ पहुंचे। बुलबुल ने उन सब को जल्द नदी के पार होकर स्टेशन के सिंगनल वाले फाटक पर गुप्तरूप से रहने की आज्ञा दी। वे सब सदर द्वारसे निकलकर बाहर होने लगे।

जब तक सब वीर बाहर हो रहे थे तब तक बुलबुल ने और भी सब आवश्यक प्रबन्ध कर डाले और फिर स्वयं यसोदासिंह तथा सुरसरीको ले कर वह बाहर निकली। रात्रि का प्रायः एक बजा था, जंगल तमाम सूनसान था, इतने बड़े २ दो दल इसी रस्ते से निकल २ कर अपने २ कार्य में चले गये और कोई जान न सका। नदी से पार हो कर बुलबुल, सुरसरी और यशोदासिंह एक किराये की गाड़ी जुतवा कर स्टेशन की और चले। स्टेशन वहां से दूर था अतः एक घण्टे में ये स्टेशन तक जा पहुंचे। गाड़ी छोड़ दी गई और ये तीनों स्टेशन की ओर बढ़े, रात अंधेरी थी, हाथ को हाथ नहीं सूझता था किसी गाड़ी के आने जाने का समय न था इस कारण स्टेशन में रौशनी कहीं २ थी और सब पड़े सो रहे थे, केवल स्टेशन मास्टर के कमरे में रौशनी हो रही थी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

तीनों ने यहां एक तरफ़ खड़े होकर कुछ सलाह की और इधर उधर चारों तरफ़ की देख भाल की और इसके बाद तीनों सिंगनल के फाटक की तरफ बढ़े। वहां जाकर देखा तो पचासों वीर इधर उधर छिपे खड़े हैं। अब सबके सब एक झाड़ी में इकट्ठे हुए और परस्पर कुछ सलाह करने लगे। बात तय हो गई और पांच २ करके इधर उधर बहुत दूर तक सब वीर झाड़ियों और दरख्तों की आड़ में छिपादिये गये तथा दिन चढ़तेही उन्हें एक गुप्त स्थान में लौट जानेकी आज्ञा दी गई। इसके उपरान्त बुलबुल ने यसोदासिंह और सुरसरी को कुछ समझाया फिर उन्हें वहीं छोड़ कर वह अकेली स्टेशन की ओर चली गई।

❀ ❀ ❀ ❀ ❀ ❀

सोनपुर के स्टेशन पर प्रायः तीन बजे रात्रि के एक स्पेशल ट्रेन आ लगी—जिसमें पांच डब्बे और एक इंजिन ही था। गाड़ी प्लेटफ़ार्म पर आकर लगी ही थी कि, स्टेशन-मास्टर ने अपने कमरे से निकलकर गार्ड और ड्राईवर से कुछ बात की और एक कागज़ गार्ड को देकर अपने कमरे में चला गया। कुछ ही देर में-गोरे-फौजी-सिपाहियों के घेरे में हथकड़ी और बेड़ियों से जकड़े हुए क़ैदी-डाकू-मोटर लारियों से उतारे और स्टेशन पर लाये गये। स्टेशन पर कमिश्नर साहब तथा मिस्टर ब्लेक भी स्टेशन मास्टर के कमरे से निकल पड़े और सब कैदी यत्न पूर्वक चढ़ाये गये। कैदी तीस

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

थे और गोरे सिपाही प्रायः साठ थे। एक २ कैदी की निगरानी में दो २ फौजी सिपाही भरी बन्दूकों से पहरे पर नियत होकर बैठे। फर्स्टक्लास के डिब्बे में पुलीस-सिपाहियों के साथ भरी पिस्तौलें लेकर ब्लेक भी सवार हुआ और ट्रेन छोड़ दी गई।

ट्रेन जिस समय सिंगनल के फाटक पार कर प्रायः दो मील गयी थी कि आगे लाईन पर कुछ आजाने के कारण एञ्जिन के पहियेजाम होते नज़र आये, ड्राइवर ने ट्रेन रोक दी। ड्राइवर के रोकते ही गार्ड तुरन्त उतर पड़ा। इधर ब्लेक को भी कुछ सन्देह हुआ परन्तु वह नहीं उतरा पर दो सिपाहियों को कारण जाननेके लिये भेज दिया ब्लेक पिस्तौल लिये डब्बे के फाटक पर खड़ा होकर आड़से देखने लगा। ड्राइवर ने देखा, एञ्जिन के नीचे एक गधा कट गया है जो कि रस्सियों से बंधा हुआ था।

गार्ड को सन्देह होगया, उसने एञ्जिन के कुलियों तथा ड्राईवर को लाईन साफ करनेको कहा, वे उधर लगे और गार्ड ब्लेक की तरफ़ चला। कुछ ही दूर चला था कि एका एक—एक बन्दूक की गोली उसके सीने में लगी वह वहीं गिरपड़ा, उधर एक गोली ड्राईवर के लगी वह भी तमाम हुआ, तीसरी ब्लेक तक पहुंची परन्तु ब्लेक—बाल—बाल—बचगया और पीछे हटगया, सारी ट्रेन में हलचल सी पड़ गई।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

ब्लेक सब कुछ समझ गया कि डाकूदल यहां मौजूद है। अभी वो कुछ विचार ही कर रहा था कि, दोनों तरफ़ से दनादन बन्दूकों के फ़ायर डब्बों पर होने लगे। देखते देखते पचास डाकू भरी बन्दूकें लिये आपहुंचे और दोनों तरफ़ से ट्रेन को घेर लिया। ब्लेक की आवाज़ से फौज़ी सिपाही तैयार ही थे, दोनों ओर से दनादनी होने लगी। क़ैदियों को मौका अच्छा मिलगया और अपनी मदद को देख कर उत्साहित हो उठे थे। वे सब हथकड़ी और बेड़ियों से लाचार थे फिर भी जहांतक जिससे बना वे फौजिओं को खिड़कियों से बाहर ढकेलने लगे। फौजी प्रायः दस एक तो गिरे और डाकूओं के शिकार हुए बाकी सम्हल गये। वे सब डब्बे में थे इससे बाहर की गोलियां काम न करती थीं और इनकी गोलियां डाकूओं पर बराबर वार करके उन्हें पृथ्वी पर सुला रही थीं।

दोनों तरफ़ के बन्दूकची तो इधर भिड़न्त कर रहे थे उधर बुलबुल और यसोदासिंह बड़ी सावधानी से उस डब्बे की खिड़की के नीचे आपहुंचे जिसमें कैदी थे। एक कैदी ने उन्हें देखा और एक के जरिये एक को इशारा मिलते मिलते बबरसिंह को खबर मिली, वह घसकता २ खिड़की के पास पहुंचा। पांच सात कैदियों ने खड़े होकर उसे अपनी आड़ में किया तो एक फ़ौजी ने ताड़ लिया और उसने दो तीन को खबर दी, वे सब उनकी ओर बढ़े, इतने में बुलबुल

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

ने दनादन पिस्तौल के फ़ायर करके उन्है आगे बढ़ने से रोका। इधर बबरसिंह को यसोदासिंहने घसोट लिया और अपने कंधे पर लाद कर लेचला, उधर से डाकू दल के भी पाँच बन्दूकची यसोदासिंह की मदद पर आ पहूंचे वे सब उसे लेकर आगे बढ़े त्योंही ब्लेक की एक गोली यसोदासिंह को पीठ पर लगी और वह बबरसिंह को लिये दिये गिरा। इतने में दो और भी गिरे, ब्लेक ने अपने डब्बे से चार सिपाही उतारे जो बराबर फ़ायर करते हुए बबरसिंह तक पहुंचे पर एक दुश्मनों का शिकार हुआ। दो ने हिफ़ाजत की और एक ने बबरसिंह को टांग से पकड़ कर घसोटा और ब्लेक के डब्बे तक लाया। फौजी सिपाहियों का वार दोनों तरफ़ की खिड़कियों से हो रहा था। डाकू मयदान में थे इससे उनमें के बहुत आदमी मारे गये और कुछ आड़ में होकर फायर करने लगे। अब ब्लेक ने फौजी सिपाहियों को आवाज दी, उनमें से दस उतर पड़े और उसके डब्बे तक आये, आते आते दो ख़तम हुए, बबरसिंह को उसी डब्बे में चढ़ाया गया। अब ब्लेक ने उसके पहरे पर पांच को छोड़ा, तीन फौजी और चार सिपाहियों के घेरे में ब्लेक बड़ी सावधानी से एञ्जिन की तरफ़ चला।

प्रायः दो फौजी और एक सिपाही की भेंट चढ़ा कर ब्लेक बड़ा मुश्किल से एञ्जिन तक पहुंचा और बड़ी सावधानी से चढ़ कर उस ने एञ्जिन तुरन्त स्टार्ट कर दिया। अब क्या था ?

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

दोनों तरफ़ से फ़ायर का जोर हो गया, गाड़ी के डब्बों को नुकसान पहुंचा परन्तु किसी तरह ट्रेन को ब्लेक निकाल कर ही ले गया।

दस मील निकल जाने पर ब्लेक ने एक स्टेशन पर ट्रेन को रोका और उतरकर देख भाल की। प्रायः पचीस फ़ौजी काम आये, पांच को तो सख़्त चोट थी जो स्टेशन से हस्पताल के लिये भेजे गये, तीस कैदियों में छे लापता थे अतः ब्लेक ने अगले सब स्टेशनोंपर तार खड़का दी और गार्ड तथा ड्राईवर का भी प्रबन्ध अगले स्टेशन पर किया, फ़िर तुरन्त ट्रेन लेकर चल पड़ा।

दूसरे स्टेशन पर गार्ड और ड्राईवर के सिवा प्रायः बीस पुलीस के सिपाही, थाने दार आदि मुस्तैद थे। ट्रेन प्लेटफ़ार्म पर लगी ब्लेक उतरा और ड्राइवर तथा गार्ड को ट्रेन सुपुर्द की। इसके बाद ब्लेक ने स्टेशनमास्टर तथा थानेदार आदि तथा इन्सपेक्टर रेलवे पुलीस से कुछ बात की, पुलिस को कैदियों पर तैनात किया गया और ट्रेन रवाना हुई।

प्रायः आठ बजे सुबह के ट्रेन कलकत्ते के प्लेट फ़ार्म पर जा लगी। वहां उस समय पुलिस कमिश्नर, कितने ही इन्सपेक्टर तथा सी० आई० डी के आफ़िसर मौजूद थे, सबने ब्लेक को इस बहादुरी के लिए धन्यवाद दिया। इसके बाद कैदी उतारे गये और मोटर लारियोंमें बैठाकर जेहलको रवाना किये गये। ब्लेक, अपने आफ़िसरों के साथ मोटर में बैठा और सारी दास्ताँ कहता हुआ चला।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

आठवां-परिच्छेद

ऊपर हम कह आये हैं "कि बुलबुल ने बाहर के पहरे पर नई दासी "देवा" को प्रधान बनाकर छोड़ा था और वहां के सभी वीर चले गये थे" बुलबुल के जाने पर देवा ने प्रबन्ध करने के लिए जब अपने आपको प्रधान समझा तो वह मन ही मन बड़ी प्रसन्न हुई। सबेरे प्रायः पांच बजे वह एक स्थान पर खड़ी २ कुछ सोच रही थी कि बाहर से आने वाली एक पहरेदार स्त्री ने खबर दी कि "सदर रास्ते वाले जंगल के पास एक लड़का बैठा है जो मुझे देखकर रोने लगा और उसने मुझ से पैसा मांगा। मुझे तुम्हारी बात का ध्यान आया और मैंने उससे पूछ पाछ की परन्तु उसने अपनी माता का नाम देवकी बताया इससे मैं उसे छोड़ आई हूं।" यह सुनकर देवा ने कहा—"बहन! वही मेरा पुत्र है जिसके बिना मेरा प्राण व्याकुल है। उसके पिता प्रेम में मुझे देवकी २ कहके ही पुकारते थे और वही नाम मेरा वो भी पुकारता है। जाओ! २ उसे शीघ्र ही ले आओ!!"

वह स्त्री गयी और उस बालक को लिवा लाई। बालक उसे देखते ही दौड़ा और उसके पास जाकर उससे लिपट

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

गया, देवा ने उसे प्यार किया और बार २ छाती से लगाया। इस समय यह खबर पाकर कितने ही पहरेदार पुरुष तथा स्त्रियां इकट्ठे हो गये और देवा को धन्यवाद देने लगे, देवा ने भी सबको यथोचित उत्तर दिया और सब अपने २ स्थान पर चले गये। अब देवा को बात करने का मौका मिला और वह पुत्र को लेकर यथा स्थान पर चली गयी।

प्रायः दस बजे सवेरे देवा ने सब पहरेदारों को दिवान घर में बुलाया और सबके इकट्ठे होने पर कहा—"भाइयों! रानी जी अब तक नहीं लौटीं और थाने की ओर जानेवाला दल भी नहीं लौटा। जान पड़ता है कि ज़रूर कोई भारी काण्ड होगया है या हो रहा है अतः हम सबको बड़ी सावधानी से रहना चाहिये। अब से चार मुख्य रास्तों के पहरेदार रास्तों के बाहर बैठें और शत्रुओं का ध्यान रक्खें, बाकी सब अपने २ पहरे पर चले जायं, सदर द्वार पर स्वयं मेरा पहरा होगा।"

इस समय देवा प्रधान थी अतः सब ने उसकी बात मान ली। एक ने कहा "आज दिन भर तो कोई आयेगा ही नहीं रात्रि को अपने समय में सभी आजायंगे और तभी सारा समाचार मिलेगा परन्तु हमें फिर भी समाचार कुछ न कुछ मगवाना ही चाहिये। मेरे विचार में अन्दर की पहरे-दार स्त्रियों में से एक दो को भेजदेना चाहिये जो कमसे कम थानेका समाचार लादेवे। जिधर रानीजी गयी हैं उधर का तो कोई भय हो नहीं।"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

देवा ने उस पहरेदार की बात को पसन्द किया और इसका प्रबन्ध करने के लिये उठ खड़ी हुई। सब पहरेदार अपने २ स्थान पर गये और देवा अन्दर महल की ओर गयी। वहां जाकर उसने अन्दर की प्रधान "माया" से जाकर सलाह की, माया ने ठीक समझा और दो दासियों को पुरुष वेश में थाने की ओर भेजा गया। देवा अब सदर रास्ते के पहरे पर अपने पुत्र मदन के साथ आखड़ी हुई और दो दासियों को उसी रास्ते से बाहर किया।

सदर रास्ते पर अब देवा और मदन के सिवा कोई न रहा, सदर के अन्दरूनी पहरेदार अपने २ स्थान पर तैनात थे। अब देवा निश्चिन्त होकर एक स्थान पर बैठ गयी और मदन को धीरे २ कुछ शिक्षा देनें लगी। मदन की अवस्था प्रायः दस ग्यारह साल की है परन्तु वह बड़ा फुर्तीला और चालाक जान पड़ता है, उसने प्रायः एक घंटे में ही सदर फाटक खोलना और बन्द करना सीख लिया। देवा ने कई बार बाहर जाकर बन्द कराया फिर संकेत से खुलवाया अतः मदन इस काम को खूब समझ गया। अब देवा ने मदन को और भी बहुत शिक्षा देनी आरम्भ की तथा बहुत कुछ समझाया और वहीं बैठी २ कुछ विचार करने लगी।

ठीक बारह बजे के अन्दाज़-दोनों दासियां लौटीं, देवा ने सदर फाटक से उन्हें अन्दर किया और उन्हें लेकर चली। इस समय सभी को समाचार सुनने की उत्सुकता थी अतः

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

अन्दर और बाहर के सभी पहरेदार, दास दासियां खबर पाकर दीवान घर में इकट्ठे होगये। यह दीवानघर बड़ा भारी हाल है और इस हाल के अन्दर से भी बाहर जाने के दो गुप्त द्वार हैं। इस में प्रायः पांच सौ आदमी बैठ सकते हैं। जब कभी सारा दल एकत्रित करके कोई विषय तय करना होता है, तो इसी हाल में डाकूदल की सभा होती है। अस्तु, सब के जमा होजाने पर बाहर से आई हुई दासियों ने समाचार कहना शुरू किया उन्होंने कहा—"थाने में आज बहुत सी पुलीस और फौज का पहरा है सुना है कि हमारे दल ने रात्रि को थाने पर धावा किया, थानेदार मारा गया और थाना लूट लिया गया है अतः जान पड़ता है कि अपना दल दिन के समय ग़ायब ही रहेगा, सम्भवहै दो दिन गायब रहे कुछ कहा नहीं जा सकता। जहां तक हमने पता पाया है वहां तक ये भी जान पड़ा कि, कैदियो के स्टेशन जाने के बाद ही थाने पर धावा हुआ, सम्भव है स्टेशन पर भी धावा बोल दिया गया हो। अब तो रानी जी के आने पर सारा भेद मिलेगा।"

सबने यह समाचार सुना और थाने के लूटे जाने पर सब प्रसन्न होने लगे। इस समय सब के खाने का वक़्त था अतः एक के कहने पर सब उठ खड़े हुए। इसी समय देवा ने कहा—"भाइयो! आज पहला दिन है कि रानी जी ने मुझे प्रधान पद प्रदान किया है, मैं इस खुशी में सब पहरेदार

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

भाइयों को भोज देना चाहती हूं यसोदासिंह के प्रधानत्व में सुना है कि कभी किसी को आराम और आनन्द नहीं मिला, इसके अतिरिक्त यहां किसी को भी न दिन को चैन और रात को नींद पड़ी। ईश्वर की कृपा से आज समय मिला है, मेरी धारणा है कि यह मौका फिर हाथ न आएगा, यदि आप लोग कहें तो मैं आज ही भोज दे दूं। आज सरकारी भोजन का सब मूल्य मैं देदूंगी आप लोग अब दिवान-घर में ही कुछ देर में इकट्ठे होकर एक साथ खायँ और आनन्द मनायँ दिन भर खाली पड़ा है। मैं गायन विध्या में निपुण हूं, भोजन के उपरान्त मैं सबको गाना भी सुनाऊँगी। इस में आपकी क्या सम्मति है?"

देवा की इस बात को सुनकर सभी प्रसन्न हो उठे और सब ने एक स्वर होकर देवा के निमन्त्रण को मान लिया। अन्त में यह स्थिर हुआ कि "अन्दर जेहल के कैदियों को खाना खिलाकर सब दिवानघर में इकट्ठे होकर भोजन करें और आनन्द मनाय" यह बात तय होगया तो देवा ने फ़िर कहा—"भाइयो! कैदी भी क्या याद करेंगे! आज मैं उन्हें भी उत्तम भोजन, अपनी देखरेख में कराऊँगी। अब आप लोग अपने २ स्थान पर जायें मैं सारा प्रबन्ध करके और कैदियों से निश्चिन्त होकर घण्टा बजाऊँगी, उसी समय सब यहीं पर उपस्थित हों" देवा के इस कथन को सब ने स्वीकार किया और अपने २ स्थान की ओर चले गये। देवा भी दासियों के

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

साथ रसोड़े में गयी और प्रबन्ध करना आरम्भ हो गया।

देवा ने कैदियों का खाना उठवाया और मदन को लेकर अन्दर जेहल में गयी। वहां जाकर उसने सब कैदियों को अपने सामने खिलाकर यथा स्थान पर बन्द कराया और चलने लगी। इसी समय मदन ने कहा—"माता! मैं यहीं खेलूंगा" देवा ने उसे वहीं छोड़ दिया और आप चल दी। जेहल के पहरेदार सब मदन को छेड़ने छाड़ने लगे वह भी अपनी चंचलता से सब को प्रसन्न करने लगा।

देवा ने जेहल से आकर दिवानघर में भोजन की सामग्री इकट्ठी करनी शुरू की और पत्तलें आदि रखवाकर घण्टा बजा दिया, बात की बात में सारे स्त्री पुरुष दिवानघर में इकट्ठे हो गये। इस समय कारखाने के सभी पहरेदार दास दासियाँ तथा जेहल आदि के प्रबन्धक आ गये थे, प्रायः दो सौ आदमियों की भीड़ हो गयी और सब ने एक साथ बैठकर भोजन करना आरम्भ कर दिया।

खाने के बाद सब एक स्थान पर इकट्ठे हो बैठे और देवा ने मध्य में बैठकर गाना शुरू किया। किसी को यह मालूम न था कि देवा गायन विद्या में इतनी निपुण है अतः उसका गाना सुन २ कर सभी मुग्ध होने लगे और चारों तरफ़ से वाह वाह होने लगी। प्रायः चार बजे तक यह जमावड़ा होता रहा इसके उपरान्त देवा की तारीफ़ करते हुए सब के सब उठ खड़े हुए और यथा स्थान पर चले गये।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

थोड़ी ही देर में एकाएक सारे कारखाने में हलचल पड़ गयी, जेहल के पहरेदार दौड़े आये, हल्ला सुनकर सब के सब इकट्ठे हो गये। जेहल के प्रबन्धकों ने कहा "जेहल में एक भी कैदी नहीं है औरसभी फाटक बन्द हैं।" यह सुनकर सभी चौंक उठे और हाहाकार मच गया। देवा ने पूछा "जेहल के दरवाज़े की चाभियां कहां थीं?" जेहल वालों ने कहा—"जब हम खाना खाने आये थे तो सब फाटक बन्द करके चाभियां यथा स्थान रख आये थे, जब गये तो चाभियां वहां ही मिलीं और सब फाटक भी वैसे ही बन्द मिले परन्तु कैदी एक भी नज़र नहीं पड़ता।"

यह सुनकर सब को बड़ा ताज्जुब हुआ, देवा तथा अन्य प्रबन्धकों ने कोना २ देख मारा सभी द्वार छानमारे परन्तु वहां उन्हें कोई भी दिखाई न पड़ा। सब बड़े ही घबड़ाए और रानीं जी के डर के मारे सब के सब कांपने लगे। अन्त में देवाने सब को शान्त करते हुए कहा—"यह अचानक घटना अवश्य ही हम पर दोष देने वाली है परन्तु हम में से कोई भी इधर उधर न था जिस पर सन्देह किया जाय। अब हो ही क्या सकता है? अवश्य ही यह काम किसी न किसी भेदी का है अतः अब से सब कोई अपने २ स्थान पर सावधानी से रहो—ऐसा न हो कोई और घटना घट जाये। मैं अब इसी बात का पता लगाने के लिये प्रबन्ध करती हूं। पहले पहल मेरी प्रधानता में यह काण्ड हुआ है तो मेरे लिये बड़ी शर्म

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

को बात है । खैर जैसा होगा करूंगी।" यह सुन कर सब अपने २ स्थान और पहरे पर तैनात हो गये और देवा इधर उधर दौड़ धूप तथा देख रेख करने लगी।

होना क्या था ? सब झक़मारकर चुपचाप हो बैठे और कैदियों के भागने का कोई सन्धान किसी को न मिला। यह एक अजीब घटना थी जो एका एक होगयी और सबकी आंखों में धूल झोंक कर किसी कारू ने अपना काम करडाला। दो सौ पुरुष तथा स्त्रियों के रहते यह काम जिस व्यक्ति ने कर डाला, यह एक आश्चर्य का विषय है—देखें यह भेद कब खुलता है।

सब के सब भय भीत और चिन्तित थे, यहां तक कि दिन का मेहफ़िल आदि जो कुछ हुआ सभी को भूलगया और शाम को किसी ने भोजन तक नहीं किया। प्रायः ग्यारह बजे रात्रि के सदर रास्ता खोलने का संकेत सुनाई पड़ा, पहरेपर देवा थी उसने रास्ता खोलदिया। इस समय बुलबुल रानी, सुरसरी तथा पांचवीर अन्दर आये और रानी ने दरवाज़ा बन्द करा कर देवा से कहा कि, "कुछ देर में आज सारा दल आनेवाला है, कुछ इधर से और कुछ चौथे फाटक के जंगली द्वार से आयेंगे सावधान रहना !" यह कहकर रानी आगे बढ़ी ही थी कि, देवा ने कहा—"रानी जी ! आज तो गज़ब हो गया......तमाम कैदी न जाने किसतरह भाग गये।" देवा के इन शब्दों को सुनते ही सब विस्मित हो उठे।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

बुलबुल ने पूछा—"देवा ! यह तू क्या कह रही है ! कल ही तुझे प्रधान पद दिया गया और कल ही यह काण्ड हो गया क्या तू सोती थी या यहां के सब रखवारे मरगये थे ? सच २ बता क्या हुआ ??"

देवा ने बड़े विनीत भाव से कहा—"रानी जी ! आप आराम गाह में 'चलें और अपनी थकावट दूर करें तब तक यहां के पहरे का प्रबन्ध करके सेवा में उपस्थित होती हूं और सब हाल कहती हूं" यह सुनकर बुलबुल ने उत्तर में कहा—"मैं एक नहीं सुनने की, जान पड़ता है यह तेरी करतूत है या तेरी असावधानी का फल होगा। मैं अब तुझे नहीं छोड़ सकती।" यह कहती हुई बुलबुल ने अन्य पहरे दारों को बुला कर पहरे पर रखा और देवा को साथ लेकर अपने आराम गाह में गयी।

जेहल के प्रबन्धकों को रानी के आने का समाचार मिला तो वे दौड़े। प्रायः सभी इस समय कुल समाचार जानने के लिये रानी के आरामगाह के बाहर इकट्ठे होने लगे। बुलबुल इस समय देवा को डांट डपट कर रही थी और सभी दासियां दास तथा प्रहरी स्त्रियां उसे निर्दोष बता रही थीं परन्तु उसे विश्वास न होता था। जब बुलबुल को यह पता मिला कि जेहलवाले प्रहरी आदि भी आये हैं तो वह सबको लिये हुए बाहर निकली और दिवान-घर की ओर बढ़ी। दिवान-घर में पहुंच कर बुलबुल ने एक २ करके सबसे पूछा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

परन्तु सब ने एक स्वर से देवा को निर्दोष बताते हुए कहा—"रानी जी ! आज दोपहर में सभी यहां दावत खारहे थे, देवा भी हम सबके साथ थी, यहां का एक भी मनुष्य न था जो देवा के भोज में शामिल न हुआ हो। सबकी उपस्थिति यहीं पर थी और कैदी लापता हो गये।" सब के मुंह से एक ही बात सुनकर बुलबुल शान्त होगई, देवापर उसका जो क्रोध था वह जाता रहा। देवा के पुत्र मदन पर उसे शक हुआ परन्तु जब उसने सुना कि यह कल ही आया है तो चुप हो रही परन्तु उसे चिन्ता होने लगी कि "अवश्य ही यहां जासूस गुप्त रूप से आया और मौक़ा देख कर कैदियों को भगा ले गया।"

यह सब काण्ड हो ही रहा था कि धीरे २ सारा डाकू-दल आने लगा। इस स्थान में आने जाने के प्रायः सोलह रास्ते थे, सभी तरफ़ से लोग आते आते दीवान-घर में इकट्ठे होने लगे। एक घंटे के भीतर ही प्रायः तीन सौ डाकू वीर एकत्रित होगये और विचार आरम्भ होने लगा।

बुलबुल ने पहले कहा—"वीरो ! आज और कल में तुम सब ने जो वीरता दिखाई वह स्मरणीय है, प्रायः हमारे चालीस वीर शत्रुओं की कैद में पड़े और प्रायः पचास वीरों ने अपनी जान दे डाली, मुझे इसका महान् दुःख है परन्तु क्या किया जावे ? मुझे तो अब भविष्य में आराम के दिन दिखाई नहीं देते। सरदार पकड़े गये और यहां भी आने और

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

फिर जिन्दा निकल जाने वाले भेदी ने कैदियों को भगाया यह हमारे दुर्भाग्य की सूचना है। भागने वाले कैदी शत्रुओं के थे जिनमें सात बड़े २ जासूस भी थे, अब कुछ न कुछ फ़ितूर अवश्य ही उठने वाला है। आज दस वर्षों में किसी ने इस स्थान का पता न पाया और अब यहां से कैदी भाग निकले तो अवश्य ही यहां का पता शत्रुओं ने पालिया है। अब हमें क्या करना चाहिये ?"

रानी की वक्तृता ख़तम होने पर किसी ने कुछ और किसी ने कुछ कहा और बहुत कुछ तर्क वितर्क हुआ, अन्त में यही तय हुआ कि —"बुलबुल दो सौ वीरों सहित जाकर कलकत्ता जेहल पर छापा मारे, सरदार को छुड़ावे और प्रायः पचास वीर सन्धान लगाने के लिये कलकत्ते शहर में ज़रूरी स्थान पर रहें और अपना काम करें, बाकी पचास वीर कारखाने की हिफ़ाज़त के लिये रहें और सब जगह का पहरा भी लड़ाके वीर ही दें। जो पहरेदार हैं वे यहां के बाहर चारों दिशा में पहरा गुप्तरूप से दें और यहांतक अब कोई न पहुंचने पावे इसका प्रबन्ध किया जाय।"

बुलबुल रानी ने तुरन्त ही सब प्रबन्ध किया और कारखाने की देख रेख का भार सुरसरी, देवा तथा अन्य चुने २ वीरों को देकर स्वयं दो सौ वीरों को संग ले रातों रात निकल गयी।

———

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

नौवां-परिच्छेद

दिन के प्रायः दस बजे ब्लेक सोमनदी पर पहुंचा और अपनी नौका को तालाश कर रहा था। नौका उस पार थी पर मल्लाह ने उसे देख लिया और तुरन्त ही इस पार नौका ले आया। ब्लेक नौका पर चढ़ना ही चाहता था कि मल्लाह ने उसे एक चिट्ठी दी। ब्लेक ने वह चिट्ठी पढ़ी तो वह वहां ठहर न सका, मल्लाह को एक चिट्ठी लिख कर उसने भी दी और पिछले पांव लौट गया। गाड़ी कलकत्ते के लिये बारह बजे जाती थी, अभी साढ़े दस बजा था अतः ब्लेक ने वहीं से पहले एक तार पुलिस कमिश्नर के नाम दिया और स्टेशनमास्टर के कमरे में जाकर बैठ गया। गाड़ी आई तो वह सवार होकर कलकत्ते रवाना हो गया।

दो बजे कलकत्ते पहुंचा और स्टेशन से मोटर लेकर वह सीधा कमिश्नर-साहब के इजलास पर पहुंचा। कमिश्नर साहब इस समय एक मुक़दमा सुन रहे थे अतः वह मुक़दमा दूसरे दिन के लिये मुलतवी करके वे ब्लेक को लिये प्राइवेट कमरे में गये और बात चीत शुरू हुई। ब्लेक ने उन्हें कुछ आवश्यक प्रबन्ध करने के लिये कहा और जेलर को एक चिट्ठी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

भेजी गयी। अब ब्लेक ने उनसे फौजी अफ़सर के नाम चिट्ठी ली और तुरन्त मोटर पर सवार होकर छावनी की ओर गया। छावनी पहुंच कर उसने चिट्ठी फौज़ी अफ़सर को दी और पूरी पल्टन गोरों की तैयार कराकर वह जेहल की ओर रवाना हुआ। जेलर पहले ही समाचार पा चुका था, समाचार पाते ही वह सख्त-पहरे तथा कैदियों की देखरेख का पक्का प्रबन्ध कर रहा था कि इतने में ब्लेक भी पहुंच गया। ब्लेक ने जाकर कुछ आवश्यक बातें कीं और जो क़ैदी हिरासत में खुल हाथों बन्द थे उनके हाथों में हथकड़ियां डाल दी गयीं। विशेष कर बबर-सिंह की अधिक हिफाज़त की गयी।

कुछ ही देर में फौज़ी पलटन भी आ पहुंची और जेहल के बाहर चारों ओर भरी बन्दूकों का पहरा लगा दिया गया। इन सब कामों से निश्चिन्त होकर ब्लेक ने गुप्त रूप से वहीं रहना ठीक समझा और जेलर से कह कर उसने एक सिपाही की उरदी ले ली और एक सिपाही के लिबास में होकर जेहल के बाहर इधर उधर घूम फिर कर सन्धान लेने लगा।

दिन भर यों ही बीत गया कुछ पता न चला, शाम हुई फिर रात पड़ी परन्तु ब्लेक को कोई भी दिखाई न दिया। अब उसने एक स्थान पर बैठ कर बहुत कुछ विचार किया। कोई विचार स्थिर न हो सका तो वह उठ कर इधर उधर टहलने लगा। जब रात्रि के ग्यारह बजे तक भी उसे कुछ आसार नज़र न आये तो वह उस पलटन के अफ़सर के ख़ेमे में जाकर ज़रा आराम करने लगा।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

रात के दो बजे थे, पहरे वाले इस समय दिन की बनिस्बत अधिक सावधानी से पहरा दे रहे थे क्योंकि उन्हें ऐसा ही हुक्म मिला था। जेहल के बाहर की गोरी पलटन भी सावधानी से पहरा दे रही थी। कितने तो एक स्थान पर खड़े थे और कितने ही घूम घूम कर पहरा दे रहे थे। जेहल की चारदिवारी का प्रबन्ध पक्का था, किसी प्रकार का खटका नहीं रहा।

जिस कमरे में बबरसिंह बन्द थे उसमें और कोई न था। बाकी डाकू एक और बड़े फाटक में एक साथ ही बन्द थे। रात्रि में सोने के समय भी उन सबको हथकड़ियां भारी गयी थीं इस कारण वे सब मन ही मन समझ गये थे कि "हो न हो हमारी तरफ से जेहल वालों को कोई खटका अवश्य है।" अतः वे सभी लेट रहे थे परन्तु किसी को निद्रा नहीं आती थी, देखने में वे सोये नज़र आते थे। कैदियों पर सख़्त पहरा था परन्तु आधीरात थी, हवा ठन्डी २ बह रह थीं इस कारण, पहरेदार अपनी अपनी बन्दूकें रक्खे बैठे थे और ऊंघाई ले रहे थे।

प्रायः ढाई बजे रात्रि के बबरसिंह के कान में एक आवाज़ सुनाई दी। इस आवाज़ में न जाने क्या असर था कि बबरसिंह चौंक कर उठ बैठा और इधर उधर देखने लगा। एकाएक उसकी निगाह एक बड़े भारी बरगद के वृक्ष पर पड़ी जो जेहल के बाहर की चार दिवारी से प्रायः पांच सात हाथ की

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

दूरी पर था। वह वृक्ष उस फाटक के ठीक सामने ही था। जिस समय बबरसिंह उस वृक्ष की ओर देख रहा था, उसे एक रौशनी सी दिखाई दी जो कई तरह से नीचे ऊपर दहने बायें हो रही थी। कुछ ही देर तक वह रौशनी ऐसी ही हरकत करती रही फिर कुछ न दिखाई दिया। इस रौशनी में भी कुछ न कुछ असर था जिसके बन्द होते ही वह सावधान होकर खड़ा हो गया। कुछ ही देर में एक तीर उस फाटक के लोहे वाले छड़ों के अन्दर, बबरसिंह के पास आकर गिरा जिसे बबरसिंह ने तुरन्त उठा लिया। इस तीर के साथ ही एक कागज़ बंधा था और कागज़ के अन्दर एक छोटी पुड़िया तथा एक पत्र था। पत्र को बबरसिंह ने पढ़ा और फाड़कर खा गया। पुड़िया में काले रंग की एक बुकनी सी थी जिसे खोल कर बबरसिंह ने देखते ही बन्द कर दिया। अब उसने तीर के आगे के फल को अपने मुंह की थूक से तर किया और नोक पर जरा सी बुकनी लगादी। बबरसिंह के हाथ में हथकड़ी लगी थी फिर भी उसने ऊंगलियों के सहारे सारा काम कर डाला। अब उसने तीर के पीछे का भाग सावधानी से पकड़ कर जंगले के बाहर किया। जंगले के पास ही तीन सिपाही पहरे पर बैठे थे जो ऊंघ रहे थे। बबरसिंह ने बड़ी ही सावधानी से उस तीर का फल ऊंघाते हुए एक सिपाही के नाक के आगे एक सेकेन्ड तक रक्खा वह तुरन्त बेहोश होकर लुड़क गया। इसी तरह उसने तीनों को बेहोश कर डाला

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

और आप निश्चिन्त होकर अपनी हथकड़ी तोड़ने लगा। बबरसिंह वीर था अतः पांच सात बार ऐंठने से हथकड़ी का एक कुन्डा टूट गया और एक हाथ की हथकड़ी खुल गयी। अब उसने अपना भरपूर जोर लगाकर जंगले का एक छड़ लोहे का टेढ़ा किया तथा बाहर हाथ निकाल कर एक बन्दूक खींच ली। अब उसने बन्दूक की गोली निकाल ली और बन्दूक को ही सीखचों में अड़ाकर सीखचे को ठेढ़ा करना शुरू कर दिया। कुछ ही समय में उसने अपने निकलने का रास्ता बनाया और बड़ी मुश्किल से बाहर निकला। बाहर निकलते ही उसने एक सिपाही को अन्दर घसीटा और उसकी उरदी उतारी, अपने कपड़े उसे पहनाकर और दूसरी उरदी आप पहन कर बबबसिंह अब बेखटके बाहर निकला और एक बन्दूक उठाकर इधर उधर घूमने लगा। जब उसे अपना रास्ता साफ़ मिला तो वह उसी चारदिवारी की ओर बढ़ा जिधर के वृक्ष से उसे तीर आया था। चारदिवारी के पास पहुंचते २ उसे कितने ही पहरेदारों ने देखा परन्तु पहरेदार के ही वेश में होने के कारण उस पर किसी को सन्देह न हुआ।

कुछ देर बबरसिंह मौका देखता रहा तथा वृक्ष की ओर भी उसका ध्यान था। अब उसे वृक्ष से फिर रौशनी का कुछ संकेत मिला और साथ ही चार दिवारी के भीतर एक रस्सी गिरी जो उस वृक्ष में बँधी थी। बबरसिंह ने इधर उधर चारों

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

तरफ सावधानी से देखा और मौका पाकर चारदिवारी पर चढ़ कर लेट गया। कुछ देर में जब बाहर का फौजी टहलता हुआ आगे बढ़ा तो वह तुरन्त ही उस रस्सी के सहारे उछल कर वृत्त पर जा पहुंचा जहां बुलबुल अकेली मौजूद थी। वृक्ष पर जाते ही उसने बुलबुल को गले से लगा लिया और मुंह चूमा। कुछ देर तक वे आपस में बातें करते रहे और फिर मौका देखकर एक एक करके छिपते हुए निकल गये और किसी को पता न लगा। बाहर और भीतर पहरे लगे लगाये रहगये और बुलबुल उड़ गयी।

सबेरे पांच बजे पहरा बदलना था अतः जब उस फाटक के दूसरे पहरेदार आये जहां बबरसिंह बन्द था तो वहां दो सिपाहियों को बेहोश पाया गया और एक अन्दर बेहोश मिला। अब क्या था! चारों तरफ हलचल पड़ गयी। सभी अफ़सर इकट्ठे हो गये, ब्लेक भी आया और जब मालूम हुआ कि बबरसिंह लापता हो गया तो सबके सब आश्चर्य में पड़ गये और "किस तरह क्या होगया" सब देखते ही देखते रह गये। विशेष कर ब्लेक को बड़ा ही रंज हुआ और वह बाकी कैदियों की तैनाती के लिये जेलर से कहकर वहां से चल दिया।

जेहल से चलकर वह तुरन्त ही कमिश्नर साहब के बंगले पर पहुंचा और उन्हें जाकर सारा समाचार सुनाया। वे भी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

यह घटना सुनकर अवाक् रह गये। कुछ देर दोनों में बात चीत हुई फिर ब्लेक वहां से चलकर स्टेशन पर आया। गाड़ी सुबह सात बजे जाती थी अतः वह सवार होकर सोनपुर की ओर रवाना होगया।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

दसवां–परिच्छेद

बबरसिंह, अपनी प्रियसी सहित भोर में ही यथा स्थान पहुंच गये थे परन्तु अपनी भूतों की सेना को दूसरी रात्रि में पहुंचने की आज्ञा दे आये थे। जेहल में बबरसिंह को बहुत तरह के कष्ट दिये गये थे अतः बुलबुल ने यथा स्थान लाकर उसकी सेवा को, शराब आदि पिलायी, खाने पीने का ठीक प्रबन्ध किया और दिन भर आराम करनेकी सलाह दी। बबरसिंह ने वैसा ही किया, दिन भर उसका ऐश आराम में बीता, बुलबुल भी उसकी सेवा में रही और उसने किसी ओर ध्यान न दिया।

रात्रि के प्रायः एक बजते २ सारा ही दल इकट्ठा होगया और सबने रात्रि भर आराम किया। प्रातःकाल ही पिशाच मण्डली की सभा थी अतः सबेरे ही सारादल दिवान–घर में इकट्ठा होगया। सरदार तथा बुलबुल भी आगये और आवश्यक विचार आरम्भ हुआ ।

सबके पहले बबरसिंह ने कहा—"मेरे हितैषी वीरों! रानी बुलबुल के अमूल्य गुणों-के प्रताप से मैं शत्रुओं के पंजे से छुड़ाया गया हूं। रानी ने किस साहस और किस युक्ति से

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

मुझे मुक्त कराया है, इसके लिये जितना भी धन्यवाद इन्हें दिया जाय थोड़ा है। सच तो यह है कि, इन्हीं की विलक्षण बुद्धि आज हम सबकी रक्षा कर रही है।"

उत्तर में बुलबुल ने उठकर कहा—"मैंने जो कुछ किया है। वह तो मेरा कर्त्तव्य ही था। मैं अपने राज्य के राजा को शत्रुओं के चंगुल में कैसे देख सकती थी? धन्यवाद तोईश्वर को देना चाहिये किबिना किसी रक्तपता के मैं अपने स्वामी को मुक्त कर सकी। मेरी इच्छा है कि, आज दिन भर और रातभर स्वामी के मुक्त होने की खुशी मनाई जाय और इस खुशी में छोटे बड़े हमारे सभी हितैषी सम्मिलित होकर खुशी मनावें। हां, परन्तु इन सब बातों के पहले शासन-प्रबन्ध पर विचार हो जाना भी उचित है। मैं देख रही हूं कि जासूस ब्लेक, बेतरह हमारे पीछे पड़ा है-और जो अच्छे जासूस कैद थे वे भी छूट गये हैं। अब हमे भी बार २ संकट का सामना करना पड़ रहा है। हमारे आराम महल की अलमारियों से यहां के नकशे आदि के कागज भी ब्लेक के हाथ में पड़ गये हैं। अब हमें अपना शासन प्रबन्ध ऐसा सुदृढ़ करना चाहिये कि, किसी प्रकार भी शत्रु हमारी उन्नति के मार्ग में बाधा न दे सकें। मैं कुछ प्रस्ताव आप लोगों के सम्मुख रखती हूं उन पर विचार हो और उसी तरह कार्य किया जायः—

१ विचार हो जाने के बाद आज दिन भर और रात भर जशन मनाया जाय और कल प्रातः काल से ही शासन

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

प्रबन्ध के अनुसार सारे काम किये जायं।

२ पुराना आराम-गाह तुड़वा दिया जाय और नया आराम गाह अब फूलपुर की पहाड़ियों में निर्माण कराया जाय।

३ हमारे सब जासूस, अन्य सब कामों को छोड़ कर पहले जासूसों का पीछाकरें और जो जिसे मिले, वह वहीं जान से मार दिया जाय।

४ अबतक तो इस कारखाने के अन्दर पहरा रहता था परन्तु अब सोलहो द्वार पर बाहर भी पहरे लग जायँ और पहरे दारों के रहने के लिये सोलह गुप्त स्थान बनाये जायें।

५ कल से सदर द्वार, पश्चिम का बड़ा फाटक कायम किया जाय क्योंकि सदरद्वार से आतेजाते बहुत दिन होगये हैं। सम्भव है उधर का भेद जासूसों को मिल गया हो।

६ सदर रास्ता एकदम बन्द करा दिया जाय और बाहर का चबुतरा तोड़ दिया जाय तथा वह रास्ता अब काम में न लाया जाय।

७ इस कारख़ाने के अन्दर रहने वाले क़तई बाहर का काम न देख सकें और बाहर वाले अन्दर न आ सकें। बाहर वाले अपना काम बाहर से ही करें और अन्दर वाले अन्दर ही करें।

८ जो इन नियमों का पालन न करे वह बिना किसी विचार के मार दिया जाय और मारने का अधिकार एक मात्र सरदार को ही होगा।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

बुलबुल के इन प्रस्तावों पर प्रायः दो घण्टे तक तर्कवितर्क होता रहा परन्तु अन्त में सब ने अपनी भलाई सोंचकर रानी के आठों प्रस्ताव स्वीकार कर लिये और सबने वैसा ही करने की प्रतिज्ञा की। इस के उपरांत जशन की तैयारी होने लगी, दिवान-घर में ही शराब आदि तथा खाने पीने का प्रबन्ध हो गया, बारह बजे तक सारा काम ठीक हुआ। अब छोटे से बड़े तक सभी को खिलाना आरम्भ हो गया, प्रायः तीन साढ़े तीन सौ मनुष्यों की भीड़ भाड़ थी अतः सिर्फ़ भोज में ही शाम के चार बजे। खाना पीना होने के बाद गाने बजाने की ठहरी। कितने ही लोगों के प्रस्ताव से आज देवा का गाना होना स्थिर हुआ इस पर बुलबुल ने देवा को बुलाकर कहा—"देवा! यूं तो मैं भी गाती हूं परन्तु तुम्हारी गायन विद्या की बड़ी चर्चा हो रही है अतः अपने राजा के मुक्त होने की खुशी में आज तुम्हें गाना चाहिये।"

उत्तर में देवा ने कहा—"रानी जी! मैं आपकी आज्ञा का उलंघन नहीं कर सकती परन्तु मैं आप का गायन भी अवश्य ही सुनूंगी आप समय स्थिर कर लें, आधा समय मैं गाऊँगी और आधा समय आप गायें।"

देवा की इस बात पर सब ने जोर लगाया और यह तय हुआ कि "अब से रात तक देवा गाय और फ़िर रात को स्वयं रानी गाये।" यहां का यह नियम था कि "सभा और किसी खुशी के अवसर पर छोटा और बड़ा कोई न गिना

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

जाय, उतने समय तक सब का एक ही पद समझा जाय।" अतः रानी को देवा की बात माननी पड़ी। फ़िर क्या था? देवा तैयार होने गयी और अपने कमरे में जाकर उसने अपने मदन को बहुत कुछ समझाया और एक पत्र लिखकर उसे दे दिया। इस के बाद उसने सुन्दर वस्त्र पहने और दिवान-घर में जाकर गाने के लिये बैठ गयी। उसी पिशाच-दल में बजाने वाले भी थे, उन्होंने अपना २ साज सम्हाला और गाना बजाना शुरू हो गया।

आज देवा ने ऐसा गाया कि सारा दल प्रसन्न हो उठा, यहां तक कि बुलबुल और बबरसिंह तक भी उस पर मुग्ध होगये। बबरसिंह तो उस पर मानों मन ही मन आशक्त हो उठा परन्तु बुलबुल के कारण वह इस भाव को अन्दर ही अन्दर पी गया। रात दस बजे तक देवा ने खूब गाया और फिर बन्द करके उठ खड़ी हुई। बुलबुल ने उसे तुरन्त गले से लगा लिया और एक कीमती हार अपने गले से उतार कर उसे पहना दिया। बबरसिंह ने भी उसे इस समय प्रेम दृष्टि से देखा, देवा समझ गयी और यही वह चाहती थी। इसने भी एक छिपे कटाक्ष से बबरसिंह पर चोट की और कुछ इशारा किया।

अब रानी की बारी आई तो यह तय हुआ कि सब लोग जलपान आदि से निवृत होकर बैठें। ऐसा ही हुआ और सब निवृत होकर प्रायः बारह बजे आ बैठे। इस समय बुलबुल ने

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

तमाम स्त्री पुरुषों को आनन्द लेने की अनुमती दे दी। फ़िर क्या था! सभी इकट्ठे होगये और जो पीने वाले थे उन्हें शराब भी दी गई। अब शराब ख़ोरी आरम्भ होगयी, उधर रानी भी दो एक पैग चढ़ा कर गाने के लिये बैठी, उसने अपने सम्मुख देवा को बैठा लिया और बड़े प्रेम से मन लगा कर गाने लगी।

सबके सब गाने बजाने और शराब ख़ोरी में मस्त होने लगे, प्रायः दो बजे रात्रि के मदन ने देवा को इशारे से बुलाया और एक पत्र दिया। देवा नें छिप कर पत्र पढ़ा, फिर अपने कमरे में जाकर उसका उत्तर लिख कर मदन को दिया और आप यथा स्थान पर आ बैठी। इस समय शराब के नशे में छोटे से बड़े तक सभी आपे से बाहर थे अतः कुछ देर तक तो देवा चुप रही परन्तु जब उसने फिर मदन को देखा तो वहीं से झिड़क कर बोली—"तू बड़ा पाजी है! मैं बार २ तुझे सुला आती हूं और तू फिर आ जाता है!!" यह कहती हुई वह फिर उठी। इस समय उसने मौका ताक कर बबरसिंह को इशारा किया और आप चल दी अपने कमरे में।

बबरसिंह उस पर मुग्ध हो चुका था अतः वह बहाने से उठा और बाहर चला गया। इधर बुलबुल अपने गाने में मस्त हो रही थी, सारा दल वाह २ कह रहा था, किसी को कुछ खबर न थी। बबरसिंह सीधा ही देवा के कमरे की ओर बढ़ा, वह इस समय मस्त हो रहा था, देवा भी उसके लिये

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

अपने कमरे के द्वार पर खड़ी थी। बबरसिंह ने जाते ही उसे अपने सीने से लगा लिया और उसका मुंह चूमने ही लगा था कि देवा न अलग हट कर कहा—"राजा जी! आप यह क्या कर रहे हैं!! यदि रानी जी देख पायेंगीं या जान जायेंगीं तो मुझे जीते न छोड़ेगीं।"

बबरसिंह ने कहा—"नहीं सुन्दरी! हमारे इस गुप्तप्रेम को कोई न जान सकेगा, आज से मैं तेरा हूं, हम दोनों अपने गुप्त समय का ही साधन किया करेंगे।"

देवा ने कहा—"यदि आपको ऐसी ही कृपा मुझ पर है तो आज मुझसे प्रेमालाप करने के लिये किसी गुप्त स्थान में ही चलिये, मैं आप से कुछ गुप्त बातें भी कहना चाहती हूं। यह स्थान ठीक नहीं, चलिये सदर रास्ते के बाहर होकर चबूतरे पर बैठें और शीतल वायु सेवन करते हुए प्रेमालाप से मन भरें।"

बबरसिंह इस समय देवा पर बेतरह रीझ उठा था अतः वह उसी चबूतरे पर चला गया, देवा ने उसे अपनी गोद में बैठा लिया और प्रेम भरी बातें करती हुई इधर उधर देखने लगी। इसी समय पिछली झाड़ी में छिये हुए ब्लेक ने उसकी ओर एक गोली सी फेंकी, देवा ने मौका पाकर बबरसिंह के नाक में लगायी वह बेहोश होगया। अब देवा का इशारा पाकर ब्लेक ने उसे घसीटा और हाथ पैर बांधकर सिपाहियों के सपुर्द किया, वे उसे लेकर नौका पर पहुंच गये। ब्लेक देवा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

से कुछ बातें करके फिर झाड़ी में छिप रहा, और देवा अन्दर गयी।

देवा अन्दर गयी तो भी मेहफ़िल उसी तरह गर्म था। इस समय रानी बैठी हुई थी और डाकू दल का एक गवैया गा रहा था। देवा ने इशारे से रानी को बाहर बुलाया और धीरे से कान में कहा—"रानी जी! राजा साहब तो बाहर की झाड़ी में किसी युवती से प्रेमालाप कर रहे हैं, आइये मैं आपको वह नजारा दिखादूं।" यह सुनकर बुलबुल चौंक उठी और देवा के साथ बाहर गयी। बाहर जाकर उसने कहा—"देखो, बाहर की तरफ़ देखो! अभी आपको सब कुछ नज़र आ जायगा।"

बुलबुल ने झांककर देखा तो उसे कुछ भी नज़र न आया परन्तु इधर ब्लेक तुरन्त पीछे से निकला और बुलबुल के दोनों हाथ पकड़े उधर देवा ने एक हाथ से उसका मुंह दबाया और दूसरे हाथ से गोली सुंघा कर बेहोश कर दिया। अब उसके भी हाथ पैर बांधे गये। और नौका पर पहुंचाया गया।

दोनों गिरफ़्तार हो गये तो देवा और ब्लेक निश्चिन्त होकर चबूतरे पर जा बैठे। ब्लेक ने उसे सीने से लगाकर कहा—"प्रिये कर्टिस! तूने जो २ काम अपने कूकन की सहायता से कर डाले हैं, मैं इसके लिये कहां तक धन्यवाद दूं! तेरी युक्तियों ने आज मेरा मस्तक ऊंचा कर दिखाया और

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

अब बहुत दिन के बाद आज हम लोग इस अवस्था तक पहुँचे हैं। अब यह दोनों कभी मुझ से नहीं छूट सकते परन्तु अब वह भीषण दल को किस प्रकार परास्त किया जायगा ?"

मिस कर्टिस ने कहा—"प्यारे ब्लेक! मैने तुम्हारे लिये ही अपनी जान हथेली पर रखकर यह सब काम किये हैं और यह सब शिक्षा तुम्हारी ही है। तुमने भी समय समय पर उस धीरू मलाह द्वारा समाचार देदेकर बहुत कुछ उपाय बताये हैं जिनसे मैं प्रत्येक कार्य में सफल होती रही हूं। यह सब कार्य सिर्फ मेरा ही नहीं, तुम्हारी ही युक्तियों का बल है। अच्छा प्यारे! अब विशेष समय नहीं है, अब मैं तुम्हे सदैव के लिये बेखटके कर देना चाहती हूं। मैने दो महीनों में गुप्त रूप से एक बहुत बड़ा कार्य कर डाला है। इस कारखाने के सोलहो द्वार बारूद से भरे पड़ें हैं, मैने रात्रि भर जाग जाग कर एक २ कोने की जमीन में छोटी २ नालियां बनाकर बारूद भर छोड़ी है, अब तो सिर्फ एक दियासलाई से हो सारा दल क्षण मात्र में भश्म हो सकेगा। और तमाम कारखाना तहस नहस हो जायगा। कहो अब क्या इरादा है ?

ब्लेक, मिस कर्टिस की यह कार्यवाही सुनकर विस्मित हो उठा और बारबार उसकी प्रशंसा करने लगा, उसने कहा "धन्य हो प्रिये! तुमने तो वह काम करके दिखाया कि कोई भी न कर सकता। अच्छा तो इस समय मेरे साथ दो सौ सिपाही और तीन सौ हथकड़ियां मौजूद हैं और इस बार मैं

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

अपने आफिसरों से सब प्रकार का हुक्म लेकर आया हूं परन्तु दो या तीन सौ आदमियों को बारूद से जलाकर मार डालना बहादुरी नहीं है। जब हथेली पर ही हम लोंगों ने आज अपनी जान रखली, तो फ़िर जीते जी सबको पकड़ना, धन माल पर कब्ज़ा कर लेना, यही बहादुरी हमें सेहरा दिलायगी।"

ब्लेक के कहने पर कर्टिस ने भी धीरे से उसके कान में कुछ कहा, कितनी ही बातें समझाई और अन्त में दोनों गले मिले। ब्लेक तो झाड़ी से बाहर होकर अपने तमाम सिपाहियों को आवश्यक बातें समझाने में तथा आवश्यक प्रबन्ध में लगा और कर्टिस अन्दर चली गयी।

पाठकों को स्मर्ण होगा कि "जिस समय देवा, रानी बुल-बुल को बहाने से बाहर ले गयी उस समय दिवान-घर में सारी महफिल जमी थी, शराब पी पो कर सब मस्त हो रहे थे और डाकू-दल का एक गवैया गा रहा था।" देवा भीतर पहुंची तो भी मेहफिल उसी तरह गर्म था। देवा ने दिवान-घर के अन्दर पैर धरते ही अपना आश्चर्य दर्शक भाव धारण कर लिया और हाथों के संकेत से गाना बन्द करा दिया।

गाना बन्द होते ही सब चौकन्ने होगये तो तुरन्त देवा ने कहा "वीरो! कई एक जासूस इस समय धावा करने के लिये सोंन नदी की ओर गोरी पलटन के प्रायः दो सौ सिपाहियों

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

सहित आ रहे हैं। राजा जी तथा रानी जो समाचार पाकर गुप्त रूप से उधर ही गये हैं। उनकी आज्ञा है कि "पांच २ वीर एक २ टोली बनाकर सिर्फ सदर रास्ते से ही झाड़ी से निकल २ कर जंगल में चारो तरफ छिपना तुरन्त शुरू करदें। जब सभी बाहर आकर जंगल को घेर रक्खेंगे तो मौका पाकर मेरा संकेत सुनते ही दो सौ सिपाहियों को घेर लें। सुरसुरी जी को आज्ञा दी है कि वो बाकी पन्द्रह द्वारों में केवल अपनी वीराङ्गनाओं से पहरा दिलाये क्योंकि स्त्रियों को छोड़ कर सभी मर्द जंगल को घेरेंगे। बस जल्दी करो! देर का काम नहीं है। मुझे सदर द्वार पर रहना होगा और मेरा मदन सिर्फ बाहर रहेगा।

देवा की बात सुन कर सभी एक दम तैयार होगये और देवा यह कह कर सदर द्वार पर बढ़ी कि "पांच वीर पहले आवें" सदर द्वार पर जाते २ देवा ने मदन को सब कुछ समझा दिया और तुरन्त बाहर वालें चबूतरे पर खड़ा रह कर संकेत करने की बात समझा कर उसे बाहर निकाल दिया। इधर पांच वीर आये और बाहर निकले। दस मिनट बाद मदन ने संकेत किया फिर पांच दूसरे गये। "इसी तरह दो सौ आदमियों द्वारा बाहर ब्लेक ने तीन सौ डाकुओं को हथकड़ियां लगा कर गिरफ़ार कर लिया और साथ ही पूरी पल्टन तुरन्त मंगवा ली।" यह सारा हाल मदन ने आकर देवा से कह दिया तो उसकी प्रसन्नता का ठिकाना ही

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

न रहा। अब क्या था ? देवा रूपी कर्टिस ने सदर द्वार एक दम खुला छोड़ दिया और बाहर निकल गयी।

बाहर जाकर उसने देखा तो हजारों दर्शक इकट्ठे हैं और तीन सौ डाकू पूरी पल्टन के घेरे में खड़े हैं। कर्टिस ने अब ब्लेक से कुछ बात की, ब्लेक तुरन्त ही सौ सिपाही भरी बन्दूकों वाले संग लेकर सदर द्वार से कारखाने में उतरा। कर्टिस ने एक २ करके सोलहों द्वार की स्त्रियों को गिरफ्तार करा दिया और बाहर निकलवाकर कैदियों में शामिल करा दिया। अब कारखाने को खाली देख एक बार तो ब्लेक ने कर्टिस को हृदय से लगा कर उसका मुंह चूम लिया।

अब कारखाने में सौ सिपासियों का पहरा लगा कर विजयी ब्लेक तथा कर्टिस, मदन रूपी कूकन सहित बाहर निकले और तमाम कैदी नदी तट पर पहुंचाये गये। धीरू मल्लाह ने कई एक नौकायें इकट्ठी करली थीं अतः कैदियों को पार किया जाने लगा।

कैदियों को पार करते २ सबेरा होगया, सारा शहर ही मानों उमड़ पड़ा और ब्लेक तथा कोर्टिस पर फूलों की वर्षा होने लगी। बड़ी कठिनता से भीड़ को हटाते हुए कैदियों को सड़क पर पहुंचाया गया। सड़क पर आफिसरों ने मोटर लारियों का प्रबन्ध किया था परन्तु सिर्फ चार लारियां ही थीं अतः तीन बार करके तमाम कैदी स्टेशन पर पहुंचाये गये। उधर स्पेशल ट्रैन तैयार थी अब सब कैदी सवार

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

कराये गये और सख्त पहरा लगा दिया गया।

अभी ब्लेक निश्चिन्त भी न हुआ था कि कलकत्ते के तार कई एक आए जिनमें ब्लेक को धन्यवाद के साथ ही साथ "डाकू-दल के कारखाने का आवश्यक समान स्पेशल ट्रेन द्वारा कलकत्ते लाये जाने का प्रबन्ध ठीक करके कलकत्ते आने की आज्ञा थी "तार पढ़ कर ब्लेक ने पुलिस कमिश्नर साहब के जिम्मे यह प्रबन्ध सौंपा और स्वयं कैदियों की स्पेशल लेकर रवाना होगया।

सबेरे दस बजे स्पेशल ट्रेन कलकत्ते पहुंची। इस समय हवड़े के स्टेशन पर शायद ही कोई ऐसा आफिसर होगा जो उपस्थित न हो। डब्बे से उतरते ही ब्लेक तथा कर्टिस और कूकन पर फूलों की वर्षा होने लगी। धन्यवाद का तो मानों बादल ही छा गया, यहां तक कि ब्लेक आदि को उत्तर देना कठिन होगया। प्रायः आध घंटे तक केवल यही हुआ।

अब कैदी ट्रेन से उतार २ कर मोटर लारियों में लाद २ कर जेहल रवाना किये गये। इसके बाद ब्लेक आदि भी आफिसरों के साथ गवरमेन्ट-हाउस में गये। यहां भारी सभा इकट्ठी होने लगी। जब तक सभा इकट्ठी होती रही तब तक ब्लेक आदि अपनी नित्यक्रिया से खाली होकर जल पान भी कर चुके और अब वे सभा स्थान में पहुंचे।

ब्लेक कर्टिस तथा कूकन का इस समय जितना मान हुआ वह अकथनीय है। इस समय सभी आला आफ़िसर उपस्थित

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

थे अतः सभा की कार्यवाही आरम्भ हुई। ब्लेक ने सभा के प्रस्ताव पर डाकू-दल की गिरफ्तारी का संक्षिप्त-विवरण कह सुनाया। इस पर चारों ओर से धन्यवाद की झड़ी लग गयी और सर्वसम्मति से ब्लेक तथा कर्टिस को वह पद दियागया जो आजतक किसी जासूस को न मिलाथा। इस के उपरान्त डाकू दल के कारखाने का सारा धन इन्हें ही दिया जाना तय हुआ और साथ ही सरकार की ओर से भी उन्हें सात लाख रुपए नगद तथा ग्यारह गांव दिये गए। इस के बाद बबरसिंह तथा बुलबुल का मुकद्दमा दायर करने का प्रस्ताव स्वीकृत किया गया और सभा बरखास्त हुई।

मुकद्दमा चलाया गया। बबरसिंह तथा बुलबुल के अपराध छिपे न थे जिन्होंने अपने जीवन में न जाने कितने अपराध और अनगिन्त ख़ून किये थे अतः उन दोनों को फांसी की सज़ा दी गयी। बाक़ी तमाम दल को आजन्म कारावास की सज़ा देकर कालेपानी भेजे जाने की आज्ञा हुई।

ब्लेक, कर्टिस तथा क्रूकन हथेली पर जान लेकर जिस भीषण कार्य में उतर पड़े थे उनका ईश्वर ही रखवारा था। जो हो परन्तु उन्होंने जैसा किया, ईश्वर ने उन्हें वैसा ही फल भी हाथों हाथ दिया। आज ब्लेक तथा कर्टिस मालामाल ही नहीं निहाल हो गए हैं, वे अब अपने जीवन का आनन्द जिस प्रकार ले रहे हैं उसका विस्तार करना कठिन है। हम तो अब यही कह कर मिस्टर ब्लेक तथा मिस कर्टिस की भूरि २

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

प्रशंसा करते हैं कि वे चिरायु हों। साथ ही हम उस कद्र दान सरकार को भी आशीर्वाद देते हैं जो अपने राज भक्त सेवकों की कद्र करने के समय अपना उदार हृदय-द्वार खोल देता है।

(समाप्त)

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

हमारी जगत प्रसिद्ध पुस्तकें
यदि आपने अब तक न पढ़ी हों तो
अब पढ़ कर देखिये

सुप्रभात—श्रीसुदर्शनजी हिन्दीके नामी गल्प लेखक हैं उन की रचना ऐसी सरस, सरल, सुमधुर, और भाव पूर्ण होती है कि देख कर चित्त नाच उठता है। रोचकता का यह हाल है कि एक पृष्ठ पढ़कर पुस्तक समाप्त किए बिना हाथोंसे छोड़ना कठिन हो जाता है। सुप्रभात आपकी ११ पोलीटिकल कहानियों का संग्रह है। यह संग्रह देख कर हिन्दी-भाषा-भाषियों को अभिमान होने लगेगा कि हिन्दी में कैसे सिद्ध हस्त-लेखक उत्पन्न हो गए हैं। कहानियां सब की सब मौलिक तथा सामयिक सदभावों से परिपूर्ण हैं, औरएक दूसरे से बढ़ कर हैं। यदि आप भाषा को सजीवता, भावों की उत्कृष्टता और विषय की महत्ता का अद्भुत संग्रह देखना चाहते हैं, तो यह पुस्तक देखिये ! मानवी हृदय के विचारों का चित्रण करने में भी कवि ने अनूठा कौशल दिखाया है। मूल्य १॥), रेशमी जिल्द २)

भागवन्ती—यह एक अतिशय मनोहर सामाजिक शिक्षा प्रद उपन्यास है, जिस में समाज की जटिल समस्याओं पर योग्य लेखक ने अपनी प्रतिभा की वह छटा फैलाई है कि पढ़ कर आनन्द आ जाताहै। यदि आपको सरल भाषाके रसो-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

स्वादन का शौक़ है, स्त्री जाति की अद्वितोय आकाश भेदी शक्तियों के देखने का चाव है, अथवा आप हिन्दू-जाति की माताओं,भगनियों तथा पुत्रियों पर होनेवाले अकथनीय अत्याचारोंसे परिचित होना चाहते हैं और हिन्दू-जाति की बुराइयां देखना चाहते हैं, तो यह उपन्यास मंगवा लोजिये। मूल्य १॥) रेशमी जिल्द २)

अंजना देवी—हनूमान जी को माता का जीवन-वृत्तान्त,भारत की देवियोंके लिये आदर्श चरित्र अँजनादेवी का बोहतान सुसराल और माता-पिता के घर से निकाला जाना, जँगलों में बसेरा, हनुमान जी का जन्म, पवन देव के युद्ध से वापिसी, अँजना देवो के माता पिता और सास-ससुर का पश्चाताप, पवन देव का अँजना देवी की तालाश में निकलना, इत्यादि बातों पर रोशनी डाली गईहै। पुस्तक बड़ी ही रोचक और स्त्री पुरुष दोनों के पढ़ने योग्य है। मूल्य ॥=)

प्राचीन हिन्दू माताऐं—इस पुस्तक में हिन्दुओं की सचरित्रता, उत्साह, भक्ति, धर्म-परायणता और वीरता की दस आख्यायिकाएं हैं। इन्हें पढ़ कर आप प्राचीन भारत के गौरव का अनुमान कर सकते हैं। हमारी बहिनों को ऐसे आदर्श चरित्र पढ़ कर इन से शिक्षा ग्रहण करनी चाहिए। मनोरंजन की भी काफ़ी सामग्री है। मूल्य १)

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

सती सावित्री—सती सावित्री के समान भारत वर्ष को छोड़ कर संसार के समस्त साहित्य में धर्म परायण विदुषी मिलना कठिन है। सावित्री ने अपने जीवन से यह भली भांति दर्शाया है कि किस प्रकार एक कन्या धर्म के आगे अपने सारे सुखों को त्याग सकती है। सावित्री का जीवन इसलिये आदर्श है कि वह हमारे सामने "किस प्रकार एक कन्या अपने अतुल पुण्य से दोनों कुलों का कल्याण कर सकती है" इस बात का जीता जागता उदाहरण रखती है। मूल्य ।=)

शकुन्तला—संसार प्रसिद्ध महा कवि कलिदास के जगत प्रसिद्ध संस्कृत नाटक का उपाख्यान रूप में यह हिन्दी भाषान्तर है। शकुन्तला को पढ़ कर जर्मनी के महा कवि गेटी ने मुक्त कण्ठ से कहा है कि स्वर्ग और मृत्त्यं की समस्त शोभाएं एक ही स्थान पर देखनी हों तो "शकुन्तला" पढ़ो। इस पुस्तक की एक एक पंक्ति कवित्व और कल्पना कौशल से परिपूर्ण है, प्रत्येक बालक बालिकाओं के पढ़ने योग्य और शिक्षाप्रद है।

मूल्य ॥)

मिलने का पताः—

नारायण दत्त सहगल एण्ड संज,
लोहारी दरवाज़ा, लाहौर।

SPS
891.433 J 24 B
5801

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

नं. ३.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

विधवाश्रम के एक तिनरंगे चित्र का नमूना

Digitized by eGangotri

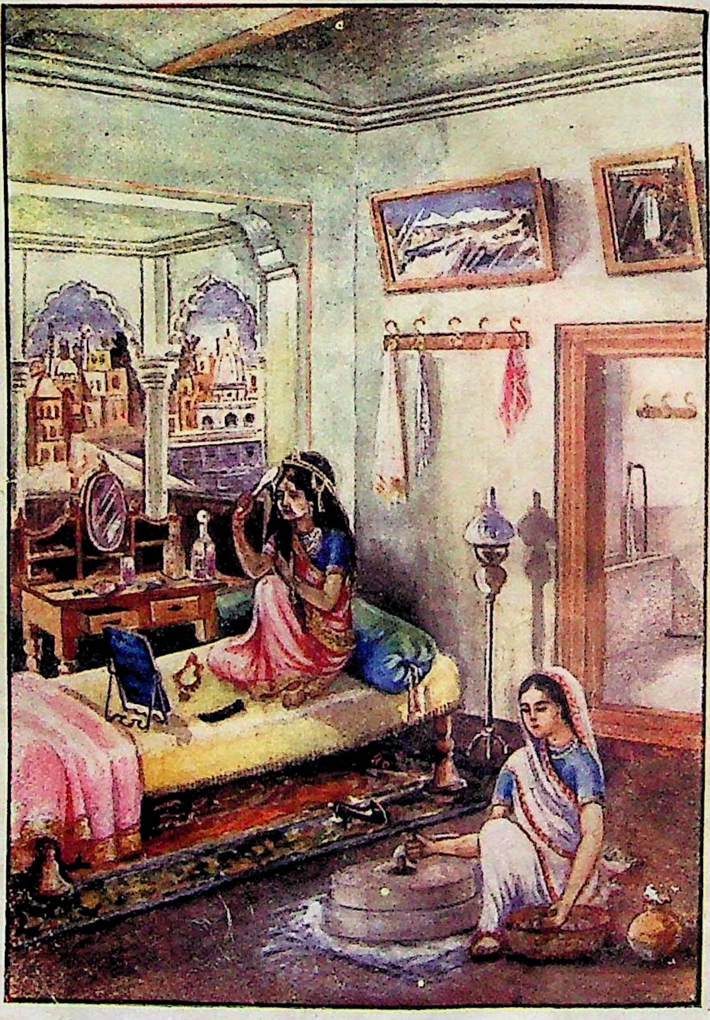

पुस्तक क्या है, हिन्दू-समाज में होने वाले सामयिक दुराचारों का जीता जागता चित्र है। इसकी एक एक रोमाञ्चकारी घटना ने हिन्दू जानि में विलक्षण जागृति उत्पन्न करदी है। यह ग्रन्थ रत्न प्रत्येक गृहस्थ-घर की शोभा है। सर्वाङ्ग-सुन्दर सचित्र पुस्तक के दोनों भाग का मूल्य ३) सजिल्द ४)

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri